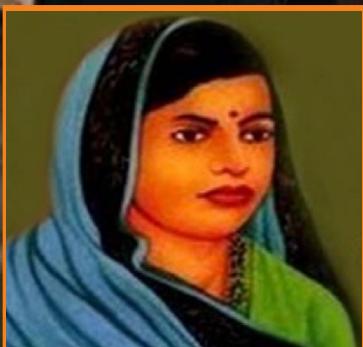


# सच की दर्शक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

## विदेश में बयान संसद में घमासान



कलम इनकी जय बोल  
(सुभद्रा कुमारी चौहान)



अश्लीलता पर हो  
वज्र प्रहार



अर्थव्यवस्था मजबूत  
करते मंदिर



इमरान खान की  
मुश्किलें बढ़ीं

## रामनवमी व चैत्र नवरात्र की हार्दिक शुभकामनायें



### बाबा विजय दास

मां काली का भक्त  
हरिशंकरपुर पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर,  
चन्दौली



## रामनवमी व चैत्र नवरात्र की हार्दिक शुभकामनायें

विरासत में आपको क्या मिला मायने नहीं रखता विरासत में  
आप क्या छोड़ जाएंगे मायने यह रखता है।'  
युवा के प्रेरणास्रोत



### आनन्द कश्यप

(युवा बिजनेस मैन )  
करवत, डांडी दुल्हीपुर पीडीडीयू चन्दौली

## रामनवमी व चैत्र नवरात्र की हार्दिक शुभकामनायें

### डॉ. एस के यादव

जिलाध्यक्ष (नेशनल इंटीग्रेटेड मेडिकल एसोसिएशन नीमा)  
जनपद चन्दौली



## रामनवमी व चैत्र नवरात्र की हार्दिक शुभकामनायें



प्रबंधक  
डॉ. राजकुमार गुप्ता

### मुगलसराय हॉस्पिटल

(मेडिकल, सर्जिकल, डेंटल एवं गायनी सेन्टर)  
मेन जी.टी. रोड, अलीनगर, मुगलसराय-चन्दौली



### कम खर्चा अच्छा डॉक्टर अच्छा इलाज

उप प्रबंधक  
डॉ. चन्दन जायसवाल

# सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 06, अंक : 12, मार्च, 2023

संपादक  
ब्रजेश कुमार  
समाचार संपादक  
आकांक्षा सक्सेना  
खेल सम्पादक  
मनोज उपाध्याय  
उप सम्पादक  
शिव मोहन सिंह  
कानूनी सलाहकार  
दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)  
प्रूफ रीडर  
बिपिन बिहारी उपाध्याय  
प्रसार प्रभारी  
अशोक सैनी  
प्रसार सह प्रभारी  
अजय राय  
अशोक शर्मा  
जितेन्द्र सिंह  
ग्राफिक्स  
संजय सिंह  
सम्पादकीय कार्यालय  
सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,  
चेतगंज वाराणसी  
पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)  
म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)  
मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी ठोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।



## स्टेट ब्यूरो प्रभारी

- मृदुला श्रीमाली - उत्तर प्रदेश
- रोहित कोचगवे - उत्तराखण्ड
- दीपाली सोढ़ी - असम
- दीपक कुमार साहा - दिल्ली
- श्री रामकृष्ण सहस्रबुद्धे - महाराष्ट्र
- डा. जय राम झा - बिहार

## ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

- डॉ निशा अग्रवाल विशेष संवाददाता जयपुर (राजस्थान)
- सुनील मित्तल जिला प्रभारी धौलपुर (राजस्थान)
- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी.)
- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी.)
- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी.)
- साहिल भारती प्रभारी लखनऊ (यू.पी.)
- राकेश शर्मा जिला प्रभारी चन्दौली (यू.पी.)
- पवन कुमार शर्मा, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखण्ड)

## सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/- (डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak

A/c. No. : 13751652000024

IFSC Code : PUNB0137510

Punjab National Bank

# सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका



## इस बार

### क्र.स. लेख

क्र.स.	लेख	पेज न.
1.	संपादकीय - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	03
2.	धरोहर - जय शंकर प्रसाद	05
3.	विदेश में बयान संसद में घमासान - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	06
4.	कलम इनकी जय बोल - कृष्णकांत श्रीवास्तव	09
5.	अश्लीलता पर हो वज्र प्रहार - आकांक्षा सक्सेना, न्यूज एडीटर	15
6.	भारतीय संविधान हर भारतीय को सशक्त बनाता है - सलिल सरोज	20
7.	मर्यादा का प्रतीक है राम का नाम - रामकृष्ण वी सहस्रबुद्धे	23
8.	वसुधैव कुटुंबकम की आधारशिला - डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी	25
9.	अर्थव्यवस्था मजबूत करते मंदिर - पंकज जगन्नाथ जयस्वाल	28
10.	नारी विमर्श : साहित्य समाज और नारी - अमरनाथ	32
11.	आदिकवि - डॉ. प्रेमलata त्रिपाठी	38
12.	गीत - अर्चना झा सरित	40
13.	अनाज - मनोज शाह 'मानस'	42
14.	पीरियड लीव मिलना महिलाओं का हक - सोनम लववंशी	43
15.	बढ़ता समुद्री जलस्तर महानगरों को खतरा - पवन तिवारी	46
16.	बुझ गया हिन्दी सिनेमा का रंग-बिरंगा सितारा सतीश कौशिक - बृजेश श्रीवास्तव मुन्ना	47
17.	प्रणय और श्रीकांत Swiss Open से बाहर - मनोज उपाध्याय, स्पोर्ट्स एडीटर	49
18.	काजू कलश मिठाई रेसपी - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	50
19.	इमरान खान की मुश्किलें बढ़ीं - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	51
20.	Apple वॉच बैंड भविष्य में आपके पहनावे के आधार पर बदलेगा रंग - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	54
21.	ऑस्कर में बजा भारतीय प्रतिभा का डंका - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	55

# संपादकीय



हमारे सम्मानित पाठकों ! आपको रंगो का पर्व होली ,चैत्र नवरात्र, राम नवमी की ढेर सारी बधाई व शुभकामनाएँ। बहुत हर्ष की बात है कि आप सबकी राष्ट्रीय पत्रिका 'सच की दस्तक' ने अपने प्रकाशन के छः वर्ष पूरे कर लिये हैं। सफर के छः वर्ष में विद्वान रचनाकारों ने अपनी लेखनी से, सुधी पाठकों ने अपनी बुद्धिमता से तथा समृद्ध शुभचिन्तकों ने विज्ञापन देकर हमें सहयोग दिया उसके लिये दिल से आभार। उम्मीद करता हूँ आप सब का सहयोग इस सफर में इसी तरह हमें मिलता रहेगा।

आइए! अब आप लोगों के साथ देश की मौजूदा परस्थितियों पर कुछ विचार-विमर्श करें। देश की राष्ट्रीय पार्टी कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी द्वारा लंदन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में भारत के लोकतंत्र पर जो अनावश्यक टिप्पणी की गयी उससे भारत में कोहराम मचा हुआ है। सत्तापक्ष के लोग इस पर राहुल गांधी को सार्वजनिक तौर पर माफी मांगने को कह रहे हैं। वहीं कांग्रेस माफी मांगने से साफ इंकार कर रही है। इसी के एवज में विपक्ष अडानी के मुद्दे पर जेपीसी की मांग कर रहा है। पिछले सप्ताह से पक्ष विपक्ष में इन्हीं मुद्दों को लेकर तीखी नोकझोंक चल रही है। संसद पूरी तरह नहीं चल पा रही है। संसद के एक दिन में लगभग 10 करोड़ खर्च होते हैं। देश के इस भारी नुकसान के लिए जिम्मेदार कौन होगा? पक्ष-विपक्ष दोनों ही इसके लिए अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकते। जनता का पैसा पानी की तरह बर्बाद हो रहा है जिसकी फ़िक्र किसी को नहीं

दिखाई पड़ती। इस मुद्दे पर सच की दस्तक ने बेबाकी से अपनी राय रखी है। इससे नफा नुकसान के विषय में भी इस अंक में आपको पढ़ने को मिलेगा।

हर बार की तरह इस बार भी हमने इतिहास के पन्नों को टटोलने का प्रयास किया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान एक भारतीय हिंदी कवयित्री थीं, जन्म 16 अगस्त 1904 को प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत(उस समय ब्रिटिश भारत) में हुआ। 15 फरवरी 1948 को 43 वर्ष की कम उम्र में ही सुभद्रा कुमारी चौहान की मृत्यु हो गई। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और राष्ट्रीय चेतना को जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के कारण इनको कई बार जेल भी जाना पड़ा। इनके बारे में 'सच की दस्तक' के इस अंक में पढ़ने को मिलेगा।

8मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। इस दिन को खास बनाने की शुरुआत आज से 115 वर्ष पहले यानी 1908 में तब हुई जब क्रीब पंद्रह हज़ार महिलाओं ने न्यूयॉर्क शहर में एक परेड निकाली। उनकी मांग थी कि महिलाओं के काम के घंटे कम हों। तनख़्वाह अच्छी मिले और महिलाओं को गोट डालने का हक़ भी मिले। एक साल बाद अमरीका की सोशलिस्ट पार्टी ने पहला राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का एलान किया। इसे अंतर्राष्ट्रीय बनाने का ख़्याल सबसे पहले क्लारा ज़ेटकिन नाम की एक महिला के ज़हन में आया था। क्लारा एक वामपंथी कार्यकर्ता थीं। वो महिलाओं के हक़ के लिए आवाज़ उठाती थीं। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय महिला

दिवस मनाने का सुझाव 1910 में डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगेन में कामकाजी महिलाओं के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया था। उस सम्मेलन में 17 देशों से आई 100 महिलाएँ शामिल थीं। पहला अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 1911 में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विटज़रलैंड में मनाया गया। इसका शताब्दी समारोह 2011 में मनाया गया। तकनीकी रूप से इस साल हम 112वां अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने जा रहे हैं। हम लोग महिलाओं को माँ स्वरूप मानकर उनकी पूजा करते हैं, उन्हें जगतजननी कहते हैं, लेकिन वर्तमान दौर में महिलाओं को हर विज्ञापन में अश्लीलता के रूप में

परोसा जा रहा है। इस पर बेबाकी से अपना पक्ष इस अंक में रखा गया है।

अब अपने पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान की बात हो जाए। वर्तमान समय में आर्थिक दृष्टि से पाकिस्तान काफी कमज़ोर हो गया। कर्ज तले बुरी तरह दब गया है। इसकी मुख्य वजह राजनीतिक अस्थिरता है। वर्तमान समय में जो सरकार है उसकी चाहत देश को आर्थिक समस्या से निजात दिलाने की नहीं लगती। सत्ता संघर्ष चरम पर है। इस पर भी आपको पढ़ने को मिलेगा।

अंत में पुनः आप सब को चैत्र नवरात्रि व रामनवमी की हार्दिक शुभकामनाएँ।

ब्रजेश कुमार

# जयशंकर प्रसाद



मधुप गुनगुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,  
मुरझाकर गिर रही पत्तियां देखो कितनी आज घनी।  
इस गम्भीर अनन्त नीलिमा मे असंख्य जीवन-इतिहास  
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास।

तब भी कहते हो-कह डालूं दुर्बलता अपनी बीती  
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे-यह गागर रीती।  
किन्तु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले  
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।

यह बिडम्बना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊं मैं  
भूले अपनी, या प्रवंचना औरों की दिखलाऊं मैं।  
उज्जवल गाथा कैसे गाऊं मधुर चांदनी रातों की।  
अरे खिलखिलाकर हँसते होने वाली उन बातों की।

मिला कहां वह सुख जिसका स्वज्ञ देखकर जाग गया?  
आलिंगन मे आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया ?  
जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुन्दर छाया मैं  
अनुरागिनि उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया मैं।

उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक का पन्था की।  
सीवन को उधेइकर देखोगे क्यों मेरी कन्था की?  
छोटे-से जीवन की कैसे बड़ी कथाएं आज कहूं ?  
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों को सुनता मैं मौन रहूं?  
सुनकर क्या तुम भला करोगे-मेरी भोली आत्म कथा?  
अभी समय भी नहीं-थकी सोई हैं मेरी मौन व्यथा।



# विदेश में बयान संसद में घमासान

कांग्रेस के नेता साफ-साफ कह रहे हैं कि किसी भी सूरत में राहुल गांधी माफी नहीं मांगेंगे वहीं दूसरी तरफ भारतीय जनता पार्टी हर हाल में राहुल गांधी से माफी मंगवाना जा रही है। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि इस मुद्दे को लेकर संसद ना चले यह गलत है। देश के पक्ष व विपक्ष के बीच जनता पीस रही है। यह कतई ठीक नहीं किसी के बयान को इश्यू बनाकर सत्तापक्ष के लोग माफी के लिए अड़ जाएं। वही दूसरी तरफ विपक्ष इस बात को अनसुना कर लोकसभा, राज्यसभा हंगामा दोनों ठीक नहीं है।



ब्रजेश कुमार  
संपादक सच की दस्तक



भारतीय लोकतंत्र का मंदिर संसद होता है। जहां देश के नए-नए कानून बनते हैं और उनसे ही देश चलता है। जिस पर पूरे भारत के लोगों का विश्वास होता है। एक आंकड़ा के अनुसार संसद के एक दिन चलने का लगभग 10 करोड़ रुपए खर्च आता है।

लेकिन वर्तमान में पिछले कई दिनों से संसद बिल्कुल ठप है। इसकी वजह राहुल गांधी द्वारा विदेश में दिया गया यह बयान है की भारत का लोकतंत्र खतरे में है। वही फुलवामा में हुए हमले को एक हादसा बताया था। वही चीन को एक उदारवादी देश भी बताया था। इसके कारण सत्ता पक्ष के लोग इस बयान के लिए राहुल गांधी से माफी मांगने को कह रहे हैं लेकिन कांग्रेस इस बात के लिए बिल्कुल तैयार नहीं है। वही कांग्रेस के साथ पूरा विपक्ष अडानी पर जे. पी. सी. बनाने की मांग का रहा है इसी के कारण संसद पूरी तरह ठप है करोड़ का पैसा ऐसे ही जा रहा है। पक्ष व विपक्ष के नोकझोक

में पूरा संसद ठप है जिससे जनता का पैसा पानी की तरह बर्बाद हो रहा है।

पहले यह ध्यान देना होगा की कौन सा बयान लंदन स्थित कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में राहुल गांधी ने दिया।

कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने चीन की तारीफ की। उनकी तरफ से जोर देकर कहा गया है कि चीन शांति का पक्षकार है। उन्होंने कई उदाहरणों के जरिए अपनी बात को समझाने की कोशिश की है। उन्होंने चीन की रणनीति का जिक्र किया की उसके द्वारा किए गए विकास की बात की है और पश्चिमी देशों की विचारधारा पर भी विस्तार से बताया।

राहुल गांधी ने कहा कि आप चीन में जिस तरह का इंफ्रास्ट्रक्चर देखते हो, रेलवे, एयरपोर्ट देखते हो, ये सबकुछ प्रकृति से जुड़ा हुआ है, नदी की ताकत है। चीन प्रकृति के साथ मजबूती से जुड़ा हुआ है। वहीं बात जब अमेरिका की आती है, वो खुद को प्रकृति से बड़ा मानता है। यही

बताने के लिए काफी है कि चीन शांति में कितना ज्यादा दिलचस्पी रखता है। इसके अलावा राहुल ने चीन को लेकर ये भी कहा कि वहां पर सरकार एक कॉरपोरेशन की तरह काम करती है। उस वजह से हर जानकारी पर सरकार की पूरी पकड़ रहती है। उनके मुताबिक इस समय भारत और अमेरिका में ऐसी स्थिति नहीं है। राहुल ये भी मानते हैं कि इसी वजह से चीन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के मामले में इतना आगे बढ़ गया है।

राहुल ने अपने संबोधन के दौरान पुलवामा हमले का भी जिक्र किया। उन्होंने जम्मू-कश्मीर को 'तथाकथित हिंसक जगह' बता दिया। कांग्रेस नेता ने कहा कि कश्मीर इंसर्जेंसी प्रोन स्टेट है और तथाकथित हिंसक जगह। मैं उस जगह भी गया था जहां हमारे 40 जवानों को मार दिया गया था। वैसे कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में राहुल के दिए कई दूसरे बयान भी चर्चा का विषय बने हुए हैं। उनकी तरफ से पेगासस को लेकर एक बयान दिया गया था। राहुल ने कहा था कि भारत में लोकतंत्र खतरे में है। मेरे फोन में भी पेगासस था। मुझे अधिकारियों ने सलाह दी थी कि मैं फोन पर सावधानी से बात करूं क्योंकि फोन की रिकॉर्डिंग की जा रही है। भारत में लोकतंत्र खतरे में है। हम लोग एक निरंतर दबाव महसूस कर रहे हैं। विपक्षी नेताओं पर केस किए जा रहे हैं। मेरे ऊपर कई केस किए गए। ऐसे मामलों में केस किए गए, जो बनते ही नहीं। हम अपना बचाव करने की कोशिश कर रहे हैं।

राहुल ने अपने बयान के जरिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर भी निशाना



साधा था। उन्होंने जोर देकर कहा था कि किया जा रहा है। वे एक ही विचार को देश पर थोपने की कोशिश कर रहे हैं। कांग्रेस नेता ने दावा कर दिया कि पीएम कुछ लोगों को सेकेंड क्लास सिटीजन मानते हैं।

इसी बयान को लेकर भाजपा आक्रोश में है और इसी को मुद्दा बनाकर राहुल गांधी से माफी की मांग कर रही है। लोकसभा में देश के रक्षा मंत्री ने इस मामले को उठाते हुए राहुल गांधी से देश वेर सामने माफी मांगने वाले कहा। लोकसभा में रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि इसी सदन के सदस्य राहुल गांधी ने लंदन में भारत का अपमान किया है। मैं मांग करता हूं कि उनके बयानों की इस सदन के सभी सदस्यों द्वारा निंदा की जानी चाहिए और उन्हें सदन के सामने माफी मांगने के लिए कहा जाना चाहिए। देश से बड़ा कोई नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा की यदि कोई बात

थी जो उनके मन में थी तो जनता के सामने जाकर बात उठाते, जनता फैसला करती की वे सही हैं या गलत। यही बात। उन्हें लोकसभा में उठाते। उन्हे विदेश में जाकर भारतीय लोकतंत्र का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए था। इसी सम्बन्ध सूचना प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने भी तीखी आलोचना की।

अनुराग ठाकुर ने राहुल के बयान को झूठा और भारत को बदनाम करने वाला बताया। उन्होंने कहा, 'कल के नतीजे दिखाते हैं कि कांग्रेस का सूपड़ा एक बार फिर साफ हुआ है। और ये रोनेधोने का काम राहुल गांधी एक बार फिर विदेश की धरती पर कर रहे हैं।'

अनुराग ठाकुर ने कहा, ये पेगासस कहीं और नहीं उनके दिल और दिमाग में बैठा हुआ है। पेगासस पर क्या मजबूरी थी कि राहुल गांधी ने अपना मोबाइल जमा नहीं करवाया। वह नेता जो भ्रष्टाचार के मामले में जमानत पर है, ऐसा क्या था उनके मोबाइल में जो उनको



अब तक छिपाना पड़ रहा है। उन्होंने और अन्य नेताओं ने अपना मोबाइल जमा क्यों नहीं करवाया। किसी और की नहीं तो इटली की पीएम की ही सुन लेते राहुल 'खेल मंत्री ने कांग्रेस को धेरते हुए कहा, 'दुनियाभर में मोदीजी के नेतृत्व में भारत के प्रति जो सम्मान बढ़ा है, वह आज कोई और नहीं, दुनियाभर के नेता कह रहे। राहुलजी किसी और की नहीं, इटली की प्रधानमंत्री और उनके नेताओं की ही सुन लेते। इटली की पीएम ने कहा कि दुनियाभर में मोदीजी को जो प्यार मिलता है, जिस तरह वह दुनिया के लोकप्रिय नेता बन कर उभरे हैं। आज वह एक बड़े लीडर हैं। ये शायद राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी स्वीकार नहीं कर पा रही है। राहुल गांधी के बयान को लेकर भाजपा व कांग्रेस आमने-सामने हैं।

कांग्रेस के नेता साफ-साफ कह रहे हैं कि किसी भी सूरत में राहुल गांधी माफी नहीं मांगेंगे वहीं दूसरी तरफ भारतीय जनता पार्टी हर हाल में राहुल

लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि इस मुद्दे को लेकर संसद ना चले यह गलत है। देश के पक्ष व विपक्ष के बीच जनता पीस रही है। यह कतई ठीक नहीं किसी के बयान को इश्यू बनाकर सत्तापक्ष के लोग माफी के लिए अड़ जाएं। वहीं दूसरी तरफ विपक्ष इस बात को अनसुना कर लोकसभा, राज्यसभा हंगामा दोनों ठीक नहीं है। जनता के पैसे को नुकसान पहुंचाना कतई ठीक नहीं माना जा सकता।

हरबंध सिंह  
लोकतंत्र राजा रोमानी

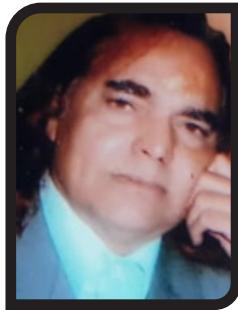
# जगनीथ सिंह (डब्लू)

समाजसेवी पीडीडीयू नगर

# देश सेविका-देशभक्त कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान

स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव ने एक आत्मीय अपील की है कि हम सब को संकल्पित होना होगा ताकि स्वर्णिम महोत्सव तक हमारा देश विश्वगुरु के साथ सर्वमुखी विकसित राष्ट्र भी बन सके। इस संकल्प में कलमकारों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है ताकि वे आजादी के वीर सपूतों की गाथा को जन-जन तक पहुंचा कर स्मृति पटल पर जागरूक करते रहें। उल्लेखनीय है कि पिछले कई महीनों से चंदौली जनपद (वाराणसी) के दीनदयाल उपाध्याय नगर (मुगलसराय) के निवासी वरिष्ठ नागरिक-स्तंभकार कृष्णकान्त श्रीवास्तव जी की कलम इस विषय पर निरंतर चल रही है। प्रस्तुत है इस अंक में देश सेविका देशभक्त कवयित्री सुभद्रा देवी चौहान की गाथा.....

संपादक



कृष्णकान्त श्रीवास्तव  
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी



‘चमक उठी सन् सत्तावन में,  
वह तलवार पुरानी थी,  
बुंदेले हरबोलों के मुँह  
हमने सुनी कहानी थी,  
खूब लड़ी मरदानी वह तो  
झाँसी वाली रानी थी।

वीर रस से ओत प्रोत इन पंक्तियों की रचयिता सुभद्रा कुमारी चौहान को ‘राष्ट्रीय वसंत की प्रथम कोकिला’ का विरुद्ध दिया गया था। यह वह कविता है जो जन-जन का कंठहार बनी। कविता में भाषा का ऐसा ऋजु प्रवाह मिलता है कि

वह बालकों-किशोरों को सहज ही कंठस्थ हो जाती हैं। ये रचना सुनकर मरणासन्न व्यक्ति भी ऊर्जा से भर सकता है।

सुभद्रा जी का नाम मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन की यशस्वी परम्परा में आदर के साथ लिया जाता है। वे बीसवीं शताब्दी की सर्वाधिक यशस्वी और प्रसिद्ध कवयित्रियों में अग्रणी हैं।

**जीवन परिचय -**

राष्ट्रीय चेतना की सजग कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म नागपंचमी के दिन 16 अगस्त 1904 को प्रयागराज

के पास निहालपुर गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम 'ठाकुर रामनाथ सिंह' था। सुभद्रा कुमारी की काव्य प्रतिभा बचपन से ही सामने आ गई थी। इनका विद्यार्थी जीवन प्रयागराज में ही बीता। 'क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज' में शिक्षा प्राप्त की। सुभद्रा चंचल और कुशाग्र बुद्धि थी। पढ़ाई में प्रथम आने पर उनको इनाम मिलता था।

बचपन से ही साहित्य में रुचि थी। वे अत्यंत शीघ्र कविता लिख डालती थी, मानो उनको कोई प्रयास ही न करना पड़ता हो। स्कूल के काम की कविताएँ तो वह साधारणतया घर से आते-जाते तांगे में लिख लेती थी।

वर्ष 1913 में नौ वर्ष की आयु में सुभद्रा की पहली कविता प्रयागराज से निकलने वाली पत्रिका 'मर्यादा' में प्रकाशित हुई थी। यह कविता 'सुभद्राकुँवरि' के नाम से छपी। यह कविता नीम के पेड़ पर लिखी गई थी। इसी कविता की रचना करने के कारण स्कूल में उनको बड़ी प्रसिद्धि मिली। सुभद्रा और महादेवी रमा दोनों बचपन की सहेलियाँ थीं।

#### विवाह-

सुभद्रा की पढ़ाई नवीं कक्षा के बाद छूट गई। इसके बाद नवलपुर के सुप्रसिद्ध 'ठाकुर लक्ष्मण सिंह' के साथ इनका विवाह हो गया। ठाकुर लक्ष्मण सिंह प्रसिद्ध नाटककार थे। जबलपुर से माखनलाल चतुर्वेदी 'कर्मवीर' पत्र निकालते थे। उसमें लक्ष्मण सिंह को नौकरी मिल गई। सुभद्रा भी अपने पति के साथ जबलपुर में आकर रहने लगी। सुभद्रा कुमारी का स्वभाव बचपन से ही दबंग, बहादुर व विद्रोही था। उन्होंने

बचपन से ही अशिक्षा, अंधविश्वास, जाति-प्रथा इत्यादि रुद्धियों के विरुद्ध लड़ना शुरू कर दिया था। इसलिए वे सास के अनुशासन में रहकर सुधङ् गृहिणी बनकर संतुष्ट नहीं थीं। उनके भीतर जो तेज था, काम करने का उत्साह था, कुछ नया करने की जो लगन थी, उसके लिए घर की सीमा बहुत छोटी थी।

शादी के डेढ़ वर्ष के होते ही अपनी गृहस्थी और नन्हे-नन्हे बच्चों के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए उन्होंने समाज और राजनीति की सेवा शुरू कर दी। वे अपने पति के साथ सत्याग्रह में शामिल हो गई और अपने जीवन के अनेक महत्वपूर्ण वर्ष जेलों में ही बिताए। देश के लिए कर्तव्य और समाज की ज़िम्मेदारी सँभालते हुए उन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ की बलि चढ़ा दी-

न होने दौँगी अत्याचार,  
चलो मैं हो जाऊँ बलिदान।

#### स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान -

#### महात्मा गांधी से मुलाकात :

वर्ष 1920 -21 में सुभद्रा कुमारी और उनके पति लक्ष्मण सिंह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य थे। उन्होंने नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया और घर-घर में कांग्रेस का संदेश पहुँचाया। त्याग और सादगी में सुभद्रा जी सफेद खादी की बिना किनारी धोती पहनती थीं। गहनों और कपड़ों का बहुत शौक होते हुए भी वह चूड़ी और बिंदी का प्रयोग नहीं करती थी। उनको सादा वेशभूषा में देख कर बापू ने सुभद्रा जी से पूछ ही लिया, 'बेन! तुम्हारा ब्याह हो गया



है?' सुभद्रा ने कहा, 'हाँ!' और फिर उत्साह से बताया कि मेरे पति भी मेरे साथ आए हैं। यह सुनकर बापू ने सुभद्रा को डॉटा, 'तुम्हारे माथे पर सिन्दूर क्यों नहीं है और तुमने चूड़ियाँ क्यों नहीं पहनीं? जाओ.... कल किनारे वाली साड़ी पहनकर आना....।'

वर्ष 1922 में जबलपुर में 'झंडा सत्याग्रह' आरंभ हुआ जो देश का पहला सत्याग्रह था। सुभद्रा कुमारी इस सत्याग्रह की पहली महिला सत्याग्रही बनी। प्रतिदिन सभाएँ होती थीं जिसमें सुभद्रा भी बोलती थीं। सुभद्रा कुमारी पहली महिला सत्याग्रही थी जिन्हें गिरफ्तार किया गया और जेल भेजा गया था। 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के संवाददाता ने अपनी एक रिपोर्ट में सुभद्रा कुमारी को 'ड'लोकल सरेजिनी'ड कहकर संबोधित किया था।

लक्ष्मणसिंह जैसे जीवनसाथी और माखनलाल चतुर्वेदी जैसा पथ-प्रदर्शक को पाकर सुभद्रा कुमारी स्वतंत्रता के राष्ट्रीय आन्दोलन में बराबर सक्रिय भाग लेती

रहीं। कई बार जेल भी गईं। काफी दिनों तक मध्य प्रांत असेम्बली की कांग्रेस सदस्या रहीं और साहित्य एवं राजनीतिक जीवन में समान रूप से भाग लेकर अन्त तक देश की एक जागरूक नारी के रूप में अपना कर्तव्य निभाती रहीं।

सुभद्रा जी में गंभीरता और चंचलता का अद्भुत संगम था। वे जिस सहजता से देश की पहली महिला सत्याग्रही बनकर जेल जाती थीं, उसी तरह अपने घर में, अपने बाल-बच्चों में और गृहस्थी के छोटे-मोटे कामों में भी रसी रहती थीं।

#### सुभद्रा कुमारी की रचनाएं-

सुभद्रा कुमारी ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपना बहुमूल्य योगदान करने के साथ ही साथ साहित्य क्षेत्र में भी अतुलनीय योगदान दिया। सुभद्रा में लिखने की प्रतिभा बचपन से ही थी और अब पति के रूप में उन्हें ऐसा जीवन साथी मिला था जिसने उनकी प्रतिभा को पनपने के लिए उचित वातावरण देने का प्रयत्न किया। उन्होंने अपनी कविताओं में भारतीय संस्कृति के प्राणतत्वों, धर्मनिरपेक्ष समाज का निर्माण और सांप्रदायिक सङ्दाव का वातावरण बनाने के प्रयत्नों को रेखांकित कर दिया था-

**‘मेरा मंदिर, मेरी मस्जिद, काबा-काशी यह मेरी**

**पूजा-पाठ, ध्यान जप-तप है घट-घट वासी यह मेरी।’**

उन्होंने लगभग 88 कविताओं और 46 कहानियों की रचना की। किसी कवि की कोई कविता इतनी अधिक लोकप्रिय

हो जाती है कि शेष कविताई प्रायः गौण होकर रह जाती है। बच्चन की ‘मधुशाला’ और सुभद्रा जी की इस कविता के समय यही हुआ। यदि केवल लोकप्रियता की दृष्टि से ही विस्तार करें तो उनकी कविता पुस्तक ‘मुकुल’ 1930 के छह संस्करण उनके जीवन काल में ही हो जाना कोई सामान्य बात नहीं है। इनका पहला काव्य-संग्रह ‘मुकुल’ 1930 में प्रकाशित हुआ। इनकी चुनी हुई कविताएँ ‘त्रिधारा’ में प्रकाशित हुई हैं। ‘झाँसी की रानी’ इनकी बहुर्चित रचना है। राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी और जेल यात्रा के बाद भी उनके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हुए-

**‘बिखरे मोती (1932)**

**उन्मादिनी (1934)**

**सीधे-सादे चित्र (1947)**

इन कथा संग्रहों में कुल 38 कहानियाँ हैं।

बाल साहित्य- झाँसी की रानी, कदंब का पेड़ और सभा का खेल।

#### देशप्रेम से ओतप्रोत रचनाएं-

‘जलियाँ गाला बाग नृशंस हत्याकांड’ से सुभद्रा कुमारी के मन पर गहरा आघात लगा। उन्होंने तीन आग्नेय कविताएँ लिखीं। ‘जलियाँ वाले बाग में बसत’ में उन्होंने लिखा-

**परिमलहीन पराग दाग-सा बना**

**पड़ा है  
हा! यह प्यारा बाग खून से  
सना पड़ा है।**

आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना

यह है शोक स्थान यहाँ मत शोर मचाना।

कोमल बालक मरे यहाँ गोली

खा-खाकर

कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।

वर्ष 1920 में जब पूरे देश में गांधी जी के नेतृत्व की स्वतंत्रता संग्राम चला, तो उनके आह्वान पर अपने पति सहित सुभद्रा कुमारी स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए कटिबद्ध हो गई। उनकी कविताएं आज़ादी की आग से ज्वालामयी बन गई हैं। वीरों का कैसा हो वसन्त’ उनकी एक और प्रसिद्ध देश-प्रेम की कविता है, जिसकी शब्द-रचना, लय और भाव-गर्भिता अनोखी है.....

आ रही हिमाचल से पुकार,  
है उदधि गरजता बार-बार,  
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,  
सब पूछ रहे हैं दिग- दिगंत,  
वीरों का कैसा हो बसंत...?

‘स्वदेश के प्रति’, ‘विजयादशमी’, ‘विदाई’, ‘सेनानी का स्वागत’, ‘झाँसी की रानी की समाधि पर’, ‘जलियाँ वाले बाग में बसत’ आदि श्रेष्ठ कवित से भरी उनकी अन्य सशक्त कविताएँ हैं। सुभद्रा कुमारी की सर्वाधिक चर्चित रचना थी.....

'सिंहासन हिल उठे,  
राजवंशों ने भृकुटी तानी थी  
बूढ़े भारत में भी आई.....  
फिर से नई जवानी थी,  
खूब लड़ी मर्दानी वह तो,  
झांसी गाली रानी थी।

वीररस से परिपूर्ण यह रचना उनकी अक्षय कीर्ति का ऐसा स्तम्भ है जिस पर काल की बात अपना कोई प्रभाव नहीं छोड़ पायेगी, यह कविता जन-जन का हृदयहार बनी ही रहेगी।

**स्त्रियों को प्रेरणा देती रचनाएं-**

राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाते हुए सुभद्रा कुमारी ने महिलाओं के लिए आनन्द और जोश से भरी कविताएँ लिखीं, जिसने आन्दोलन में शामिल महिलाओं में नयी प्रेरणा भरी। महिलाओं को सम्बोधन करती यह कविता देखिए-

'सबल पुरुष यदि भीरु बनें, तो हमको दे वरदान सखी।'

अबलाएँ उठ पड़ें देश में, करें युद्ध घमासान सखी।

पंद्रह कोटि असहयोगिनियाँ, दहला दें ब्रह्मांड सखी।

भारत लक्ष्मी लौटाने को, रच दें लका काण्ड सखी।

**राष्ट्रभाषा से प्रेम-**

'राष्ट्रभाषा' के प्रति भी सुभद्रा कुमारी का गहरा सरोकार है, जिसकी सज्जम अभिव्यक्ति 'मातृ-मन्दिर में', नामक

कविता में देखने को मिलती है। यह उनकी राष्ट्रभाषा के उत्कर्ष के लिए चिन्ता है -

'उस हिन्दू जन की गरविनी हिन्दी प्यारी हिन्दी का प्यारे भारतवर्ष कृष्ण की उस प्यारी कालिन्दी का है उसका ही समारोह यह उसका ही उत्सव प्यारा मैं आश्चर्य भरी आंखों से देख रही हूँ यह सारा जिस प्रकार कंगाल बालिका अपनी माँ धनहीता को दुकड़ों की मोहताज़ आज तक दुखिनी की उस दीना को।'

**काव्य में प्रेमानुभूति-**

सुभद्रा कुमारी की कविताओं में प्रेम दूसरा आधार-स्तम्भ है। यह प्रेम द्विमुखी है। शैशव - बचपन से प्रेम और दूसरा दाम्पत्य प्रेम, 'तीसरे' की उपस्थिति का यहाँ पर सवाल ही नहीं है।

बचपन से प्रेम पर जितनी सुन्दर कविताएँ उन्होंने लिखी हैं, भक्तिकाल के बाद वे अतुलनीय हैं। निर्दोष और अल्हड़ बचपन को जिस प्रकार स्मृति में बसाकर उन्होंने मधुरता से अभिव्यक्त किया है, वे कभी पुरानी न पड़ने वाली कविता है। जैसे.....

'बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी',  
'आ जा बचपन, एक बार फिर

दे दो अपनी निर्मल शान्ति व्याकुल व्यथा मिटाने वाली वह अपनी प्राकृत विश्रांति।' 'मेरा नया बचपन कविता' कविता में मार्मिक अभिव्यक्ति.....

'मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी नंदन वन सी फूल उठी यह छोटी-सी कुटिया मेरी।'

बालपन से संबंधित इन कविताओं की एक और बहुत बड़ी विशेषता यह है कि.... ये 'बिटिया प्रधान' कविताएँ हैं। कन्या भ्रूण-हत्या की बात तो

आज ज़ोर-शोर से हो रही है किन्तु बहुत ही चुपचाप, बिना मुखरता के, सुभद्रा कुमारी इस विचार को सहजता से व्यक्त करती हैं। 'बालिका का परिचय' कविता बिटिया के महत्व को इस प्रकार प्रस्थापित करती है-

'दीपशिखा है अंधकार की घनी घटा की उजियाली ऊषा है यह कमल-भूंग की है पतझड़ की हरियाली।'

कहा जाता है कि उन्होंने अपनी पुत्री का कन्यादान करने से मना कर दिया कि ड'कन्या कोई वस्तु नहीं कि उसका दान कर दिया जाए। ड'नारी स्वतंत्रता का क्रांतिकारी कदम था यह फैसला।

प्रेम रंग से रंगी सुभद्रा कुमारी की कविताएं-

सुभद्रा कुमारी की कुछ कविताएं प्रेम के रंग से भी सराबोर हैं।

उनकी प्रेम कविताओं में जीवन-साथी के प्रति अदृट्ट प्रेम, निष्ठा एवं रागात्मकता के दर्शन होते हैं.....प्रियतम से , चिन्ता , मनुहार राधे, आहत की अभिलाषा, प्रेम श्रृखला , अपराधी है कौन, दण्ड का भागी बनता कौन , आदि उनकी बहुत सुन्दर प्रेम कविताएँ हैं। दाम्पत्य जीवन में प्रियतम से रुठने और मनाने वाली कविता का यह अंश देखिए-

'ज़रा-ज़रा सी बातों पर  
मत रुको मेरे अभिमानी  
लो प्रसन्न हो जाओ  
ग़लती मैंने अपनी सब मानी  
मैं भूलों की भरी पिटारी  
और दया के तुम आगार  
सदा दिखाई दो तुम हँसते  
चाहे मुझसे करो न प्यार।

अपने और प्रिय और बीच किसी 'तीसरे' की उपस्थिति उनके लिए पूर्ण असहनीय है।

दाम्पत्य जीवन की विषम स्थितियों की जिस अकुंठ भाव की अभिव्यक्ति सुभद्रा कुमारी ने की है, वह बड़ी मार्मिक है-

'यह मर्म-कथा अपनी ही है  
औरों की नहीं सुनाऊँगी  
तुम रुठो-सौ-सौ बार तुम्हें  
पैरों पड़ सदा मनाऊँगी  
बस, बहुत हो चुका, क्षमा करो

अवसाद हटा दो अब मेरा  
खो दिया जिसे मद जिसे मद में  
मैंने  
लाओ, दे दो वह सब मेरा।'

### प्रकृति से अनुराग-

सुभद्रा कुमारी का प्रकृति से भी गहन अनुराग रहा है था। अपनी रचना 'नीम', 'फूल के प्रति', 'मुरझाया फूल' आदि में उन्होंने प्रकृति का चित्रण बड़े सहज भाव से किया है।

सुभद्रा जी ने मातृत्व से प्रेरित होकर बहुत सुन्दर बाल कविताएँ भी लिखी हैं। यह कविताएँ भी उनकी राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत हैं। 'सभा का खेल' नामक कविता में, खेल-खेल में राष्ट्रीय भाव जगाने का प्रयास इस प्रकार किया है -

सभा-सभा का खेल आज हम खेलेंगे,

जीजी आओ मैं गांधी जी, छोटे नेहरु, तुम सरोजिनी बन जाओ।

मेरा तो सब काम लंगोटी गमछे से चल जाएगा,

छोटे भी खद्दर का कुर्ता पेटी से ले आएगा।

मोहन, लल्ली पुलिस बनेंगे,

हम भाषण करने वाले वे लाठियाँ चलाने वाले,

हम घायल मरने वाले।

इस प्रकार सुभद्रा कुमारी की कविता का फलक अत्यन्त व्यापक है। प्रसिद्ध हिन्दी कवि गजानन माधव

मुक्तिबोध ने सुभद्रा जी के राष्ट्रीय काव्य को हिन्दी में बेजोड़ माना है।

### नारी सम्मान के लिए संघर्ष-

सुभद्रा कुमारी ने महिलाओं के चतुर्दिक विकास के लिए बहुमूल्य योगदान दिया। उन्होंने जबलपुर में महिलाओं की कई आम सभाओं का आयोजन किया जिसमें महिलाएं बहुत बड़ी संख्या में एकत्र होती थीं। उन्होंने महिलाओं की कई टोलियां बनाई। यह एक नया ही अनुभव था। महिलाओं की इस जागृति के पीछे सुभद्रा कुमारी का हाथ था। इन महिला सभाओं में सुभद्रा कुमारी पर्दा प्रथा का विरोध, रुद्धियों के विरोध, छुआछूत हटाने के पक्ष में और स्त्री-शिक्षा के प्रचार के लिए बोलती रही थीं। सुभद्रा कुमारी में स्वयं भारतीय नारी की सहज शील और मर्यादा थी, इस कारण उन्हें नारी समाज का पूरा विश्वास प्राप्त था। विचारों की दृढ़ता के साथ-साथ उनके स्वभाव और व्यवहार में एक लचीलापन था, जिससे भिन्न विचारों और रहन-सहन वालों के दिल में भी वे अपना घर बना लेती थीं।

### कथा सप्राट प्रेमचंद की समधिन -

सुभद्रा कुमारी की बेटी सुधा का विवाह प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद के पुत्र अमृतराय से हुआ था जो स्वयं अच्छे लेखक थे। सुधा ने उनकी जीवनी लिखी-मिला तेज से तेज।

सुभद्रा जी का पूरा जीवन सक्रिय राजनीति में बीता। वह नगर की सबसे पुरानी कार्यकर्ता थीं। 1930 - 31 और 1941 - 42 में जबलपुर की आम सभाओं में स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्या में एकत्र होती थीं जो एक नया ही अनुभव था। स्त्रियों



की इस जागृति के पीछे सुभद्रा जी थीं जो उनकी तैयार की गई टोली के अनवरत प्रयास का फल था। सन् 1920 से ही वे सभाओं में पर्दे का विरोध, रुद्धियों के विरोध, छुआछूत हटाने के पक्ष में और स्त्री-शिक्षा के प्रचार के लिए बोलती रही थीं। उन सबसे बहुत-सी बातों में अलग होकर भी वह उन्हीं में से एक थीं। उनमें भारतीय नारी की सहज शील और मर्यादा थी, इस कारण उन्हें नारी समाज का पूरा विश्वास प्राप्त था। विचारों की दृढ़ता के साथ-साथ उनके स्वभाव और व्यवहार में एक लचीलापन था, जिससे भिन्न विचारों और रहन-सहन वालों के दिल में भी उन्होंने घर बना लिया था।

#### कहानी लेखन-

पत्र-पत्रिकाओं के संपादक चाहते थे कि सुभद्रा कुमारी गय रचना भी करें। इसलिए उन्होंने कहानी लिखना भी आरंभ किया। उनकी कहानियों में देश-प्रेम के साथ-साथ समाज की विद्वपता, अपने को प्रतिष्ठित करने के लिए संघर्षरत नारी की पीड़ा और विद्रोह का स्वर देखने को मिलता है। एक ही वर्ष में उनका कहानी

संग्रह 'बिखरे मोती' प्रकाशित हुआ। उनकी अधिकांश कहानियाँ सत्य घटना पर आधारित हैं। देश-प्रेम के साथ-साथ उनमें गरीबों के लिए सच्ची सहानुभूति दिखती है।

#### सुभद्रा कुमारी की अंतिम रचना-

मैं अछूत हूँ, मंदिर में आने का मुझको अधिकार नहीं है।

किंतु देवता यह न समझना, तुम पर मेरा प्यार नहीं है॥

प्यार असीम, अमिट है, फिर भी पास तुम्हारे आ न सकूँगी।

यह अपनी छोटी सी पूजा, चरणों तक पहुँचा न सकूँ.....।

यह कविता सुभद्रा कुमारी की अंतिम रचना है।

#### अंतिम यात्रा-

सुभद्रा कुमारी को नागपुर में शिक्षा विभाग के सम्मेलन में भाग लेने जाना था। डॉक्टर ने उन्हें ट्रेन से न जाकर कार से जाने की सलाह दी। 15 फरवरी 1948 को दोपहर के समय वे नागपुर से जबलपुर के लिए वापस लैट रहीं थीं। कार उनका पुत्र चला रहा था। सुभद्रा ने देखा कि बीच सड़क पर तीन-चार मुर्गी के बच्चे आ गये थे। उन्होंने पुत्र से मुर्गी के बच्चों को बचाने के लिए कहा। एकदम तेज़ी से कार काटने के कारण कार सड़क किनारे के पेड़ से टकरा गई। सुभद्रा जी ने 'बेटा' कहा और वह बेहोश हो गई। अस्पताल के सिंविल सर्जन ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। उनका चेहरा शांत था मानों वे गहरी नींद

सो गई हों। 15 फरवरी 1948 को 44 वर्ष की आयु में ही उनके जीवन का अंत हो गया।

उनकी मृत्यु पर माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा कि.....

'सुभद्रा का जाना ऐसा मालूम होता है मानो 'झाँसी वाली रानी' की गायिका, झाँसी की रानी से कहने गई हो कि लो, फिरंगी खदेड़ दिया गया और मातृभूमि आज़ाद हो गई।'

#### पुरस्कार एवं सम्मान -

सुभद्रा कुमारी को उनकी रचना 'मुकुल' तथा 'बिखरे मोती' के लिए अलग-अलग सेक्सरिया पुरस्कार मिला।

जबलपुर के निवासियों ने चंदा इकट्ठा करके नगरपालिका के प्रांगण में सुभद्रा कुमारी की प्रतिमा लगवाई जिसका अनावरण वर्ष 1949 में उनकी बचपन की सहेली और प्रख्यात कवियत्री महादेवी वर्मा ने किया था।

भारतीय डाक तार विभाग ने वर्ष 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक-टिकट जारी किया था।

जबलपुर के निवासियों ने चंदा इकट्ठा करके नगरपालिका के प्रांगण में सुभद्रा कुमारी की प्रतिमा लगवाई जिसका अनावरण वर्ष 1949 में उनकी बचपन की सहेली और प्रख्यात कवियत्री महादेवी वर्मा ने किया था।

भारतीय तटरक्षक सेना ने वर्ष 2006 को सुभद्रा कुमारी चौहान को सम्मानित करते हुए अपने एक तटरक्षक जहाज़ को उनका नाम दिया है। ■■■

# अश्लीलता पर हो वज्र प्रहार

सरकार को अब इस मुद्दे पर सख्त होना होगा और मोदी सरकार हमेशा चैलेंजिंग काम के लिए फेमस रही है तो क्या मोदी सरकार भारत में इस जबरन परोसी जा रही अश्लीलता को बेन कर देश के छोटे-छोटे बच्चों की मासूमियत की रक्षा कर सकेगी। क्योंकि आज हर छोटे बच्चे के हाथ में मोबाईल है, इंटरनेट है और गंदे विज्ञापन कहीं भी दिख सकते हैं और बच्चों के एक किलक से उसकी पढ़ाई में तगड़ा व्यवधान आ सकता है यहां तक देखा गया है कि जो इस गंदगी को देख लेता है वह उसे खुद से करने का विचार करने लगता है और फिर शिकार होती है एक निर्दोष 'बच्ची'।



आकांक्षा सक्सेना  
न्यूज एडीटर सच की दस्तक



अश्लीलता से उपजी मानसिक वीडियो पर बिल्कुल साफ हैंडिंग होते हैं विचारधारा वह गम्भीर बीमारी है कि जिसकी शुरुआत में ही बलात्कार है और परिणाम में कारावास। यानि अश्लीलता वो राक्षसी है जो देश के युवाओं के जीवन को लतखोर बनाकर निगलती चली जा रही है और किसी को भनक तक नहीं। एक वो समय था जब श्री लक्ष्मण जी कह रहे थे कि भैया! यह आभूषण में क्या पहचानूँ जब मैंने माता सीता के चरणों की ही रंदना की है। चरणों के ऊपर तो इतनी गौर से देखा ही नहीं। पर आज कलयुग में यह कैसा चारित्रिक पतन हुआ है कि हर रिश्ता अश्लीलता की भेंट चढ़ चुका है। अश्लील वेवसाईट पर खुले आम परिव्रत्र रिश्तों की धज्जियाँ उड़ायीं जा रही हैं और हम सब खामोश हैं। अश्लील ससुर - बहू, देवर-भाभी, पिता-पुत्री, बहन-भाई, गुरु - शिष्या, विधि और उसका बेटा, इस तरह के कंटेंट देखकर बच्चों में युवाओं में क्या संदेश जाता होगा? कि हर रिश्ते से शारीरिक सम्बंध बनाये जा सकते हैं क्योंकि वीडियो में देखा। टीवी सीरियल में देखो भाई - भाई को गोली मार दे रहा, देवरानी, जेठानी का, सास-बहू झगड़े, हत्या। क्या भारतीय संस्कृति में ऐसा था सोचिए! रामायण में चारों भाईयों का चरित्र ऐसा था कि बड़ा भाई भगवान समान। सीता माता की सब बहनें देवरानी में अनंत प्रेम, सास बहू में कोई झगड़ा नहीं। फिर यह हमारी महान संस्कृति के पतन का षडयंत्र कौन रच रहा है? कौन हैं जो देश की युवा

पीढ़ी का मानसिक संहार करके करोड़ों कमा रहा है? आखिर! यह अश्लीलता का कितना बड़ा बाजार है और कौन है इसका मास्टर मार्फेट? क्या यह भयंकर घोटाला नहीं।

एक अजीब सा जमाना है जब फटे कपड़े को फैशन कहा जा रहा है। आज अमीर और सेलेब्रिटी उसे माना जाता है जो अर्द्धनग्न है। अर्द्धनग्नता की बात ही क्या एक सैलीब्रिटी पुरुष तो पूर्ण नग्न ही लेटे हुए सुर्खियों में थे। क्या नंगे लोगों को सैलीब्रिटी माना जायेगा अब या ऐसे लोगों पर कड़ी कार्रवाई की जरूरत है। आज के सिनेमा का पर्यावाची ही अश्लीलता बन चुका है। जोकि आने वाली पीढ़ियों के पतन के लिये किसी मिसाइल और एटम बम से कम नहीं है। आज किसी का कैरियर चौपट करना हो या पथभ्रष्ट उसके लिए अश्लीलता श्रेष्ठ हथियार बन चुका है। आप सभी देखो! कि इंटरनेट के माध्यम से आज पूरी सोसल मीडिया पर वेबसाईट, बेवसीरीज, विज्ञापन आदि के द्वारा किस लेवल पर अश्लीलता परोसी जा रही है यह बात सरकार क्या न्यायालय भी जानता है परन्तु उनकी दलील यह है कि अदालतें आदेशों के माध्यम से यह सुनिश्चित नहीं कर सकती हैं कि आदर्श व्यक्तियों का एक आदर्श समाज लाया जा सकता है, हालांकि, कानून और नियमों की योजना को उचित रूप से यह सुनिश्चित करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए कि किसी भी देश वासी के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन न हो बस। सन् 2018 की बात है जब दिल्ली उच्च न्यायालय में द वायरल फीवर (टीवीएफ) द्वारा निर्मित वेब शृंखला

'कॉलेज रोमांस' मामले की सुनवाई कर रहा था कि इसमें इस्तेमाल की जाने वाली भाषा 'अपवित्र', 'अश्लील' है और इसमें कई प्लेटफार्मों पर उपलब्ध शो देखने वाले युवा दिमागों को 'भ्रष्ट' करने की क्षमता है। बिना किसी अस्वीकरण के। यानि भारतीय मूल्यों के अनुसार 'अश्लीलता' पर न्यायालय के विचार ऑनलाइन सामग्री के आने वाले केंद्रीकृत विनियमन के बारे में चिंताओं को बढ़ाते हैं। तथा मुद्दा सितंबर 2018 में यूट्यूब पर प्रकाशित शो के सीजन 01 के शीर्षक 'हैपीली फकड अप' के एपिसोड 05 के बारे में था। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि एपिसोड में और फिर पूरी शृंखला में इस्तेमाल की गई भाषा 'अश्लील' और 'अभद्र' थी। और महिलाओं को 'अशोभनीय रूप' में चित्रित किया। शिकायतकर्ता ने कहा, यह भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 292 और 294, सूचना और प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 (आईटी अधिनियम) की धारा 67 और 67ए और धारा 2 (सी), 3 का उल्लंघन था। जो ओटीटी प्लेटफॉर्म, यूट्यूब, टीवीएफ वेब पोर्टल और अन्य एप्लिकेशन पर देखने के लिए उपलब्ध थी। बता दें कि इंटरनेट पर दिखाई जाने वाली अश्लील वेबसाइटों के बारे में सरकार ने शुरुआत में शिकंजा कसा था और 857 अश्लील वेबसाइटों पर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन फिर उसने सिर्फ बच्चों की अश्लील वेबसाइटों पर अपने प्रतिबंध को सीमित कर दिया।

अब इन्हें कौन बताये कि अश्लीलता सिर्फ अश्लीलता है जिसमें क्या बच्चे और क्या बूढ़े, सब अक्षम्य हैं।

मुझे आश्चर्य होता है कि उन टीवी चैनलों पर जो डिबेट के लिए मशहूर है परन्तु दुःखी हूँ यह सोचकर कि इन पर कभी भी अश्लीलता की सुनामी जो आयी हुई है जोकि सबसे बड़ी महामारी है। आखिर! इस पर इन मान-मर्यादा के मुद्दे पर डिबेट किंग क्यों मुंह चुराते हैं। यहां तक कि देश में संस्कृति और नैतिकतावादी, मर्यादावादी, हिजाबवादी झंडा बुलंद करने वाले तथाकथित दल संस्थाओं की चुप्पी भी कमाल की है। सभी साधु, मौलियियों, ग्रंथियों और पादरियों का मौन भी छौकाने वाला है। शायद इसका कारण यह भी हो सकता है कि इन्हें पता ही न हो कि इंटरनेट पोर्नोग्राफी क्या होती है? या यह युवा विरोधी कितना बड़ा बड़यंत्र है? यह तो इंदौर के वकील कमलेश वासवानी थे कि उन्होंने इस मामले को अदालत में लाकर अश्लील वेबसाइटों के सिर पर तलवार लटका दी थी।

सरकार को अब इस मुद्दे पर सख्त होना होगा और मोदी सरकार हमेशा चैलेंजिंग काम के लिए फेमस रही है तो क्या मोदी सरकार भारत में इस जबरन परोसी जा रही अश्लीलता को बेन कर देश के छोटे-छोटे बच्चों की मासूमियत की रक्षा कर सकेगी। क्योंकि आज हर छोटे बच्चे के हाथ में मोबाइल है, इंटरनेट है और गंदे विज्ञापन कहीं भी दिख सकते हैं और बच्चों के एक किलक से उसकी पढ़ाई में तगड़ा व्यवधान आ सकता है यहां तक देखा गया है कि जो इस गंदगी को देख लेता है वह उसे खुद से करने का विचार करने लगता है और फिर शिकार होती है एक निर्दोष 'बच्ची'।

किसी भी देश के निर्माण में वहां के

बाल मन का अहम योगदान होता है। बाल मन में जैसे संस्कार भर दिए जाते हैं, वे ही प्रौढ़ावस्था तक उस व्यक्ति का व्यक्तित्व निर्धारित करते हैं। बच्चों का मन एक बीज है और बाद में बूल के बीज में से आम की कल्पना व्यर्थ होगा। जोकि जबरन अश्लीलता परोस कर देश की पीढ़ियों को बूल बनाने का वैश्विक षड्यंत्र जारी है। पहले मैंगी षड्यंत्र के तहत बच्चों से मजबूत श्री अन्न से बना नाशता छीन कर उनसे स्वास्थ्य छीना, इम्युनिटी कमजोर की। वहीं, अब उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रहार जारी है। जिस तरह पीएम मोदी ने मोटा अनाज यानि श्री अन्न सत्तू आदि का दौर बच्चों में वापस लौटाया है। ठीक वैसे ही अश्लीलता नामक बम पर वड़ा प्रहार कर हमें हमारा मर्यादित भारत वापस लौटा दीजिए।

अब भारत को इस अश्लीलता से आजादी चाहिये। विचारणीय है कि अपनी प्राचीन सनातन संस्कृति में विद्यार्थियों का प्रथम लक्षण ब्रह्मचर्य को सर्वोपरि बताया गया है। जिस तरह बाढ़ आने पर नदी अपनी सीमाएं भूलकर तटबंध तोड़कर हर चीज़ को नुकसान पहुंचाने लगती है, ठीक वैसे ही अश्लीलता की सुनामी बाल मन, युवा मन, प्रौढ़ मन हर उम्र पर दुष्टभाव डालती है। सामाजिक रिश्ते - नातों के तटबंध तोड़कर उसकी मनोवृत्ति अपराधिक हो जाती है। आज अपराध का मूल कारण ही यह अवांछित स्वच्छंदता की पराकाष्ठा यही अश्लीलता है।

आखिर! यह मुद्दे देश की संसद में क्यों नहीं उठाये जाते? इन मुद्दों पर क्यों

नहीं होती हड़ताल? क्यों नहीं होते अन्सन धरने? इन मुद्दों पर क्यूँ नहीं लड़े जाते चुनाव? आखिर! चुनावी घोषणा पत्र में यह मुद्दे क्यों गायब रखे जाते हैं? बच्चियाँ तो हर घर में हैं फिर भी ऐसा क्यों? 'अश्लीलता बेन' नाम पर क्यों नहीं सजते बड़े मंच? भाषण? कवि सम्मेलन? संगोष्ठी? अब इस चुप्पी को मैं क्या नाम दूँ? सरकारों और न्यायालय की अजीब सोच है कि सिर्फ बाल-अश्लील वेबसाइटों पर प्रतिबंध को अदालत और सरकार दोनों ही उचित ठहरातीं हैं? उनका कहना है कि इसके लिए बच्चों को मजबूर किया जाता है। वह हिंसा है परन्तु क्या वयस्क वेबसाइटें औरतों पर जुल्म नहीं करतीं? औरतों के साथ जितनी क्रूरता से उनका शोषण, वीभत्स और घृणित बर्ताव इन वेबसाइटों पर होता है, क्या वह अश्लील नहीं अमानवीयता नहीं/प्रताङ्गना नहीं है? महिला - पुरुष भी स्वेच्छा या प्रसन्नता से नहीं, पैसों के लिए अपना ईमान बेचते होंगे। अपने मालिक के कहने पर वीडियो के हैंडिंग रिश्तों को बदनाम के पेंट से पोतते होंगे।

उन सब स्त्री-पुरुषों की मजबूरी, क्या उन बच्चों की मजबूरी से कम है? कोई यह बताये कि इन चैनलों को देखने से आप बच्चों को कैसे रोकेंगे? इन गंदे चैनलों के लिए काम करने वाले बच्चों की संख्या कितनी होगी? लगभग कुछ हजार? लेकिन इन्हें देखने वाले बच्चों की संख्या करोड़ों में है। हे! देश के सभी माननीय लोगों क्या आप सब को भारत को युवा देश कहे जाने वाले मासूम बच्चों /युवाओं की गम्भीरता से चिंता है या नहीं? सारे अश्लील वेबसाइटों पर दिखाए

जाने वाले विज्ञापन पैसे की खदान हैं। इतिहास में जांके तो रोमन साम्राज्य के शासकों ने अपनी जनता को भ्रमित करने लिए हिंसक मनोरंजन के अनेकों साधन खड़े किये थे। पश्चिम के भौतिकवादी राष्ट्रों ने अपनी जनता को अश्लीलता की लगभग पूर्ण स्वतंत्रता इसीलिए दी है कि वे लोग इसी में समय बर्बाद करें और सरकार पर उनका ध्यान कम जाये लेकिन इसके भयावह दुष्परिणाम भी सामने हैं। हिंसा और दुष्कर्म के जितने अपराधी अमेरिकी जेलों में बंद हैं, दुनिया के किसी भी देश में नहीं। हास्यास्पद बात जो लीडर अक्सर कहते हैं कि सरकार का काम लोगों के शयन-कक्षों में ताक-झांक करना नहीं है। तो क्या अपने शयन-कक्ष में आप हत्या या आत्महत्या कर सकते हैं? क्या किसी का बलात्कार कर सकते हैं? क्या इंग्रज ले सकते हैं? अरे! भई ताक-झांक का सवाल ही नहीं होगा। जब सम्पूर्ण भारत में अश्लील वेबसाइटों पर पूर्ण प्रतिबंध होगा।

यह अश्लीलता मनोरंजन नहीं, मनोभंजक है। यही हमारे देश में हो रहे बलात्कार को बढ़ा रही है। इस संबंध में गूगल के आंकड़े बेहद चौकाने वाले हैं। गूगल के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में कीवर्ड 'रेप' (बलात्कार) को एक महीने में औसतन 40,10,000 बार ढूँढ़ा गया। इसके अतिरिक्त इंडियन गर्ल्स रेष्ट, रेपिंग वीडियो/ स्टोरीज, रेप इन पल्लिक, लिटिल गर्ल रेष्ट, जैसे शब्द शामिल थे। ये आंकड़े सिर्फ गूगल सर्च का हिसाब हैं। अभी इसमें वे लोग शामिल नहीं हैं, जो मोबाइल की दुकान या साइबर कैफे में जाकर चिप में यह गंदगी लेते हैं। कड़वा

सच है कि लोग अपनी कमाई का एक बड़ा हिस्सा इस अनैतिक मनोरंजन पर धुआंधार खर्च कर रहे हैं। भारत में लगभग सबके पास स्मार्टफोन हैं। अब सोचिए, स्थिति कितनी और कहां तक जटिल हो चुकी है। वैसे इसी को ध्यान में रखते हुए इसी मार्च में केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा है कि क्रिएटिविटी के नाम पर अश्लीलता और अभद्र भाषा का इस्तेमाल बर्दाशत नहीं किया जा सकता। ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर अश्लील कंटेंट बढ़ने की शिकायतों को लेकर सरकार गंभीर है। अगर इस बारे में नियमों कोई बदलाव करने की जरूरत पड़ी तो उनका मंत्रालय इससे पीछे नहीं हटेगा। अश्लीलता, गाली-गलौज रोकने के लिए हम सख्त कार्रवाई करेंगे। मोदी सरकार इस मुद्दे पर गम्भीर है यह अनुराग ठाकुर जी के बयान से साफ जाहिर है। पर अब हम सबको पूरे देश को मिलकर अपना भी योगदान देना होगा। अभी तो स्थिति कुछ ऐसी बन चुकी है कि पहले घर बनायें या पहले घर को बचाएं? तथाकथित मॉर्डर्न लोग बहस करते हैं कि यह उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता है, वो खुलेआम कुछ भी करें, हम कुछ भी पहनें आप अपनी नजरों और सोच पर काबू करें, यह क्रिएटिविटी आजादी है। तो फिर आप लोग पशुओं की तरह सड़कों पर ही शुरू हो जाया करो। आखिर! किस चीज की आजादी चाहिये? पशु बनने की। सच कहें तो इसमें इन लोगों की गलती नहीं बल्कि इनके उत्प्रेरक गुरु की है। यानि उत्तेजना फैलाने वाला विज्ञापन उद्योग गुरु जिसके यह चेलें हैं। विज्ञापनों में उत्तेजित करते दृश्य धीरे-धीरे कब मानसिक विकृति पैदा कर देते हैं, हमको पता भी

नहीं चलता। आप फिल्म के तथाकथित हीरो हीरोइन को देखें तो अश्लीलता की पराकाष्ठा में गोते खाते सिगरेट शराब, ड्रग्स लेते फिल्मों में दिखाये जा रहे हैं। जब बच्चे यह फिल्में देखते हैं तो उन्हें यह सब करने का मन करता है और वह कर बैठते हैं जिसे कहते हैं अपराध। फिर जेल हुई तो पूरा जीवन बर्बाद। आज युवाओं में फैशन है कि खुश हैं तो बोतल, दुःखी हैं तो बोतल। और, जब-जब शराबबंदी पर रोक की बात उठती है, तब-तब शराब सिंडिकेट इतना शक्तिशाली बन जाता है कि क्या ही कहें। कुछ बिकाऊ अर्थशास्त्री शराबबंदी के द्वारा होने वाली राजस्व हानि की छाती पीटनी शुरू कर देते हैं। परन्तु मोदी सरकार ने शराब मामले में जिस तरह दिल्ली के मंत्री मनीष सिसोदिया को जेल भेजा है। इसने लोगों को प्रभावित किया है खासतौर पर महिलाओं को। तथा बिहार के सीएम नीतीश कुमार जी भी शराब मुद्दे पर सख्त हैं। यह अच्छी बात है।

आप सोच रहे होगें कि अश्लीलता पर लोग कितने आजाद हैं कि सोसल मीडिया पर कुछ भी अपलोड करो कोई डर नहीं। तो ऐसी बात नहीं भारत में कानूनी नजरिए से अश्लीलता एक गम्भीर अपराध है और इसके लिए भारतीय दंड संहिता की धारा 292, 293 और 294 के तहत सजा का प्रावधान है। अश्लीलता के मामलों से जुड़ी एक धारा 509 भी है। अगर कोई व्यक्ति महिला की शील या लज्जा भंग करने वाली चीज दिखाता या बोलता है तो उसके खिलाफ इस धारा के तहत कार्रवाई की जा सकती है। इसमें 3 साल की कैद और जुर्माने का प्रावधान है।

तथा अगर कोई व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक माध्यम यानि सोशल मीडिया के जरिए कामुक या कामुकता को बढ़ावा देने वाला कंटेट को प्रकाशित या प्रसारित करता है तो उसके खिलाफ आईटी एक्ट 67(ए) के तहत कार्रवाई की जाएगी। इस मामले में दोषी पाए जाने पर 5 साल की जेल और 10 लाख रुपये जुर्माना देने का प्रावधान है। दूसरी बार दोषी पाए जाने पर 7 साल की सजा और 10 लाख रुपये जुर्माना देना पड़ा सकता है। अब महत्वपूर्ण बात यह है कि अपराधों को सिर्फ कानून के भरोसे नहीं रोका जा सकता क्योंकि भारतीय न्याय प्रक्रिया में एक प्रचलित डायलॉग है। भारत में विधि का शासन है, न्याय का नहीं। उस घटना को अपराध माना जाएगा जिसको विधि में अपराध माना गया है। इस प्रक्रिया में न्याय हुआ है या नहीं, इस पर विधि मौन है। शायद इसलिए ही गुनाह को प्रेरित करने वाले तत्वों पर कोई खास कार्रवाई नहीं हो पाती। न्यायालय यह भी कहता है कि हर संत का अतीत है और हर पापी का भविष्य। अब पापियों के भविष्य की चिंता गहरी होगी तो अश्लीलता की मीनारें कैसे ढहेगीं? विचारें माननीय। ऐसे में यदि गुनाह के तत्वों को हम पूर्व में ही नियंत्रित कर लें तो महिलाओं के प्रति अपराधों पर लगाम लग सकती है। देश में कितनी ही अश्लील किताबों का प्रकाशन होता है जिन्हें सेलेक्टिव लोग ही पढ़ पाते हैं परन्तु अश्लील वेबसाइटें तो करोड़ों लोग देखते हैं। आपको विचार करना चाहिए। जब हम अश्लीलता पर बेन की बात करते हैं तो तथाकथित लोग कुर्ता के साथ लड़ने पर उतारू हो जाते हैं और कहते हैं कि फिर खजुराहो और कोणार्क की प्रतिमाओं तथा



महर्षि वात्स्यायन के कामसूत्र क्या है? उन लोगों की सोच पर मुझे दया आती कि उस जमाने में टीवी इंटरनेट नहीं था.. कुछ ही लोग खजुराहो पहुंच पाते होंगे। आज तो हर बच्चे के हाथ में मोबाइल है आप इस चीज की गम्भीरता को को समझें कि वह सिर्फ बुत मूर्ति और यह चलते फिरते दृश्य वीडियो, आपको मौके की नजाकत समझ आ रही है? या मूर्ति की तुलना रिश्तों को तार-तार करते गंदी वीडियो से करेंगे? वात्स्यायन ने कामसूत्र में क्रूरता नहीं, सर्वसुलभता नहीं थोपी गयी, पवित्र रिश्तों को काम अग्नि में नहीं झाँकता दिखाया गया? काम के प्रति भारत का रवैया बहुत खुला हुआ है। और, उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का अंग बनाता है। वह काम का उदातीकरण करता है जबकि ये अश्लील वेबसाइटें काम को घृणित, क्रूरता से परिपूर्ण यांत्रिक और विकृत और समस्त रिश्तों बाप - बेटी, गुरु-शिष्या, ससुर-बहू, मां-बेटे, देवर-भाभी, मालिक-नौकर, मानव-

पशु, पुरुष - पुरुष, महिला - महिला क्या कोई भी रिश्ता छोड़ा है इन पॉर्न वेबसाइट ने। सबकुछ वासना की आग में खाक कर डाला। आज हर रिश्ते से लोगों का भरोसा उठ चुका है। कोई अपनी पांच साल की बच्ची भी किसी को गोद में खिलाने को देने से डरता कि कहीं कोई अपना ही दरिंदगी की हृद पार करके पांच साल की बच्ची का रेप न कर दे। कलयुग को कलयुग हम इंसानों ने ही बनाया है कि आज 80 साल की बुजुर्ग महिला से भी दरिंदे रेप कर के मार के छोड़ जाते हैं। आप सब सोचो! कैसे हाल ही के दिनों में देश की बच्चियों के बलात्कार हुए, कैसे देश की बच्चियों के शरीर के टुकड़े किये गये, कैसे फ्रिज में रखे गए? आप इनका केन्द्र देखो क्या है? वह केन्द्र है अश्लील साईट के दुष्प्रभाव। आज समाज की दुर्दशा मानसिक सोच इस कदर विकृत हो चुकी है कि तथाकथित कोई लड़का बाहर नौकरी पर जाता है तो बहू को बुजुर्ग पिता की सेवा के लिए भी नहीं छोड़ना चाहता।

कोई भी भाभी, देवर के साथ अकेले घर में रुकने से डरती है। छोटी बच्चियां चाचा, मामा के साथ खेलने से असुरक्षित महसूस की जाती हैं। मैं सबकी बात नहीं कर रही पर ज्यादातर। यह दौर ही ऐसा है कि क्या ही कहूं। इस अश्लीलता रूपी वायरस ने आपसी निःस्वार्थ पवित्र प्रेम की दुनिया ही उजाड़ कर रख दी है। अफसोस! इस अश्लीलता नामक घातक महामारी का प्रकोप किसी को दिखाई नहीं देता।

देश के जागे हुए युवाओं को ही अब अश्लीलता के विरुद्ध एक जबर्दस्त क्रांति करनी होगी कि विदेशी कपड़ों तक तो ठीक परन्तु विदेशी संस्कृति का पूर्णरूपेण अंधानुकरण ना करें? यह भी देखें कि विदेशी लोग किस तरह वृद्धावन आकर भारतीय रंग में रंगे हरे कृष्ण हरे राम गाते नाचते भगवान श्री कृष्ण भक्ति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। कैसे वह अयोध्या आकर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम, काशी विश्वनाथ के दर्शन कर भारत की पवित्र संस्कृति की गंगा में गोते लगा रहे हैं। यह बात हर भारतीय को सोचनी चाहिये कि हम विदेशी संस्कृति की नकल करते - करते उतने भी विदेशी न हो जायें कि एक दिन विदेशियों को भारत सिर्फ़ किताबों में पढ़ना और ढूँढना पड़ जाये। आप सभी सम्मानित देशवासियों! देश हमारा है और देश की संस्कृति की रक्षा करना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए कि मर्यादा पुरुषोत्तम संस्कृति वाले देश में कुछ भी अमर्यादित बदशित नहीं करना चाहिए। ■ ■

# भारतीय संविधान हर भारतीय के सपने को सशक्त बनाता है।

संविधान लोगों को उतना ही सशक्त बनाता है जितना कि लोग संविधान को सशक्त करते हैं। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने बहुत अच्छी तरह से महसूस किया कि एक संविधान, चाहे वह कितना भी अच्छा लिखा गया हो और कितना विस्तृत हो, इसे लागू करने और इसके मूल्यों के अनुसार जीने के लिए सही लोगों के बिना बहुत कम सार्थक होगा। और इसमें उन्होंने आने वाली पीढ़ियों में अपना विश्वास दर्शाया है।



सलिल सरोज  
विधायी अधिकारी  
नयी दिल्ली



भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, संविधान निर्माताओं का सपना शासन के ऐसे व्यवहार्य मॉडल को विकसित करने का था जो लोगों की प्रधानता को केंद्र में रखते हुए राष्ट्र की सर्वोच्च सेवा करे। यह संविधान के निर्माताओं की दूरदर्शिता और दूरदर्शी नेतृत्व है जिसने देश को एक उत्कृष्ट संविधान प्रदान किया है जिसने पिछले सात दशकों में राष्ट्र के लिए एक प्रकाश स्तंभ के रूप में काम किया है। देश लोकतांत्रिक प्रणाली की सफलता के लिए भारत के संविधान द्वारा निर्धारित मजबूत इमारत और संस्थागत ढांचे के लिए बहुत अधिक ऋणी है। हमारा संविधान भारत को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने का संकल्प है। वास्तव में, यह लोगों को सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक न्याय, स्वतंत्रता और समानता हासिल करने का वादा है;

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, आस्था और पूजा की स्वतंत्रता; स्थिति और अवसर की समानता; और सभी के बीच - भाईचारे को बढ़ावा देना, व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता को सुनिश्चित करना। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने बहुत स्पष्ट रूप से विभिन्न प्रतिबद्धताओं को रेखांकित करते हुए मुख्य अपेक्षाओं को रेखांकित किया। उन्होंने कहा: 'संविधान तैयार करने में हमारा उद्देश्य दो गुना है: राजनीतिक लोकतंत्र के रूप को निर्धारित करना, और यह निर्धारित करना कि हमारा आदर्श आर्थिक लोकतंत्र है और यह भी निर्धारित करना है कि प्रत्येक सरकार, जो भी सत्ता में है, प्रयास करेगी आर्थिक लोकतंत्र लाने कीष्ठ'

भारत का संविधान राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक लोकतंत्र के लिए एक संरचना प्रदान करता है। यह

शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीकों से विभिन्न राष्ट्रीय लक्ष्यों पर जोर देने, सुनिश्चित करने और प्राप्त करने के लिए भारत के लोगों की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। यह केवल कानूनी पांडुलिपि नहीं है; बल्कि, यह एक ऐसा वाहन है जो समय की बदलती जरूरतों और वास्तविकताओं को समायोजित और अनुकूलित करके लोगों के सपनों और आकांक्षाओं को साकार करने के लिए देश को आगे बढ़ाता है। भारत को राज्यों के संघ के रूप में बनाना, कानून के समक्ष समानता और कानूनों की समान सुरक्षा संविधान का सार है। साथ ही, संविधान समाज के वंचित और वंचित वर्गों की जरूरतों और चिंताओं के प्रति भी संवेदनशील है।

29 अगस्त 1947 को, मसौदा संविधान की तैयारी के लिए डॉ बी आर अम्बेडकर की अध्यक्षता में संविधान सभा द्वारा मसौदा समिति का चुनाव किया गया था। संविधान सभा स्वतंत्र भारत के लिए एक संविधान का मसौदा तैयार करने के महान कार्य को सटीक रूप से तीन साल से भी कम समय में पूरा करने में सक्षम थी - दो साल, ग्यारह महीने और सत्रह दिन। उन्होंने 90,000 शब्दों में हाथ से लिखा हुआ एक बढ़िया दस्तावेज़ तैयार किया। 26 नवंबर 1949 को, यह भारत के लोगों की ओर से गर्व से घोषणा कर सकता है कि हम एतद्वारा इस संविधान को अपनाते हैं, इसे लागू करते हैं और खुद को देते हैं। कुल मिलाकर, 284 सदस्यों ने वास्तव में संविधान के पारित होने के रूप में अपने हस्ताक्षर किए। मूल संविधान में एक प्रस्तावना, 395 अनुच्छेद

और 8 अनुसूचियां शामिल हैं। नागरिकता, चुनाव, अनंतिम संसद, अस्थायी और संक्रमणकालीन प्रावधानों से संबंधित प्रावधानों को तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया। भारत का शेष संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। उस दिन, संविधान सभा का अस्तित्व समाप्त हो गया, 1952 में एक नई संसद के गठन तक खुद को भारत की अस्थायी संसद में बदल दिया।

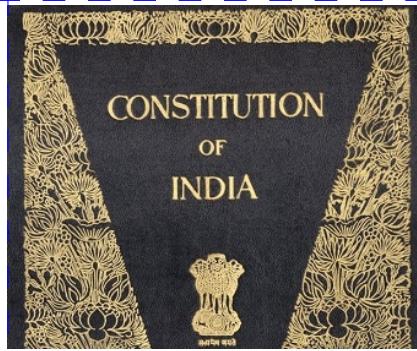
भारत के संविधान की प्रस्तावना उन मूलभूत मूल्यों, दर्शन और उद्देश्यों को मूर्त रूप देती है और दर्शाती है जिन पर संविधान आधारित है। संविधान सभा के सदस्य पंडित ठाकुर दास भार्गव ने प्रस्तावना के महत्व को निम्नलिखित शब्दों में अभिव्यक्त किया: 'प्रस्तावना संविधान का सबसे कीमती हिस्सा है। यह संविधान की आत्मा है। यह संविधान की कुंजी है।' ... यह संविधान में स्थापित एक गहना है... यह एक उचित पैमाना है जिससे कोई भी संविधान के मूल्य को माप सकता है।'

संविधान, एक लैटिन अभिव्यक्ति में हमारा सुप्रीम लेक्स है। यह लेखों और खंडों के संग्रह से कहीं अधिक है। यह एक प्रेरणादायक दस्तावेज है, हम जिस समाज के आदर्श हैं और यहां तक कि जिस बेहतर समाज के लिए हम प्रयास कर रहे हैं, उसका एक आदर्श है। भारत का संविधान अपनी तह में हमारी सभ्यतागत विरासत के आदर्शों और मूल्यों के साथ-साथ हमारे स्वतंत्रता संग्राम से उत्पन्न विश्वासों और आकांक्षाओं को भी समाहित करता है। संविधान हमारे गणतंत्र के संस्थापक पिता के है।

सामूहिक ज्ञान का प्रतीक है और संक्षेप में, यह भारत के लोगों की संप्रभु इच्छा का प्रतिनिधित्व करता है।

संविधान सभा के विशिष्ट सदस्यों के साथ-साथ संविधान की मसौदा समिति द्वारा किए गए अथवा प्रयासों ने हमें एक ऐसा संविधान विरासत में दिया है जो समय की कसौटी पर खरा उतरा है। उन्होंने शानदार तरीके से शासन की एक अनूठी योजना तैयार की, जो न केवल सरकार के एक लोकतांत्रिक स्वरूप के लिए बल्कि एक समावेशी समाज के लिए भी उपलब्ध कराती है। इस तरह के एक संपूर्ण दस्तावेज को रखने का उद्देश्य, यहां तक कि न्यूनतम विवरण भी शामिल है, सिस्टम में निश्चितता और स्थिरता को बढ़ावा देना है। संविधान द्वारा परिकल्पित मुख्य लक्ष्य जीवन रेखा के रूप में जवाबदेही के साथ गरिमापूर्ण मानव अस्तित्व और सभी की भलाई के लिए एक कल्याणकारी राज्य की शर्त है।

भारत का संविधान जो समय-समय पर चुनावों का प्रावधान करता है, प्रतिनिधियों के एक समूह से दूसरे समूह को राजनीतिक सत्ता का लोकतांत्रिक हस्तांतरण सुनिश्चित करता है। पिछले कुछ वर्षों में, निस्संदेह भारत में लोकतंत्र और गहरा हुआ है। लोक सभा के सत्रह आम चुनाव और राज्य विधानमंडलों के लिए अब तक हुए तीन सौ से अधिक चुनाव लोगों की बढ़ी हुई भागीदारी के साथ हमारे लोकतंत्र के सफल कामकाज की गवाही देते हैं। निस्संदेह, भारतीय मतदाताओं ने परिपक्वता प्रदर्शित की है जिसने इसे दुनिया भर से प्रशंसा दिलाई है।



भारत में लोकतंत्र परिपक्व हो चुका है, और सभी बाधाओं के बावजूद, हमने अपनी संसदीय प्रणाली को बनाए रखा है। राजनीतिक स्थिरता, पिछले कुछ वर्षों में, भारतीय मतदाताओं और राजनीतिक व्यवस्था की परिपक्वता की साक्षी रही है। 1.2 बिलियन से अधिक लोगों के साथ दुनिया के दूसरे सबसे बड़े आबादी वाले देश के रूप में, वास्तविक चुनौती भाषा, धर्म, क्षेत्र, जाति, संस्कृति, जातीयता और अन्य कारकों के आधार पर लोगों की असंख्य पहचानों को संरक्षित और संरक्षित करना है। उदार राजनीतिक प्रणाली और उत्तरदायी लोकतांत्रिक संस्थानों ने विविधता में एकता और लोगों के बीच समावेश की भावना को सुरक्षित करने में अच्छा प्रदर्शन किया है। वास्तव में, यह हमारी बहुदलीय प्रणाली है जो लोगों की अधिक राजनीतिक भागीदारी को प्रोत्साहित करती है और भारतीय जनता की विविधता और बहुलता को प्रतिबिंबित करती है।

राजनीतिक संस्थाएँ और ढाँचे न केवल समाज को प्रतिबिंबित करते हैं, बल्कि वे इसे प्रभावित और परिवर्तित भी करते हैं। इस संदर्भ में, भारत की संसद सामाजिक परिवर्तन लाने और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को प्रभावित करने में प्रत्यक्ष और कंडीशनिंग की

भूमिका निभाती है। लोगों की सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था होने के नाते, संसद सभी सरकारी गतिविधियों की जीवन रेखा है। समग्र रूप से संसदीय गतिविधि - कानून बनाना, वित्त को नियंत्रित करना और कार्यकारी शाखा की देखरेख - विकास के पूरे स्पेक्ट्रम को कवर करती है। यह सदन के पटल पर है कि कुछ प्राथमिक प्रक्रियाओं को गति दी जाती है जो सार्वजनिक जीवन में व्यवस्थित परिवर्तन और नवाचारों का रास्ता खोलने की क्षमता रखती हैं। चूंकि सरकार के संसदीय स्वरूप में कार्यपालिका विधायिका का निर्माण है और विधायिका कार्यपालिका पर नियंत्रण रखती है, कोई भी सरकार विधायिका द्वारा दिए गए निर्देशों की अनदेखी नहीं कर सकती है।

एक के बाद एक आने वाली सरकारों ने विभिन्न विधानों और नीतिगत हस्तक्षेपों के माध्यम से एक कल्याणकारी राज्य की सुविधा के लिए संविधान के निर्माताओं के सपने को साकार करने का प्रयास किया है। परिणामस्वरूप, हमने बहुत कुछ हासिल किया है और कई क्षेत्रों में सफल हुए हैं; फिर भी, ऐसे कई अन्य क्षेत्र हैं जिन पर अभी भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। महिलाओं के सशक्तिकरण, बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष जोर, स्वच्छ भारत मिशन, नागरिकों को वित्तीय और अन्य सब्सिडी, लाभ और सेवाओं का सीधा हस्तांतरण, गरीबों के लिए बैंकिंग सुविधाओं में वृद्धि और जो बैंकिंग द्वारा कवर नहीं किए गए थे, जैसे नीतिगत हस्तक्षेप प्रणाली, किसानों के लाभ के लिए नीतियां और कार्यक्रम, वंचित लोगों के लिए सामाजिक

सुरक्षा योजनाएं आदि संविधान निर्माताओं के सपने को साकार करने में काफी मददगार साबित होंगी।

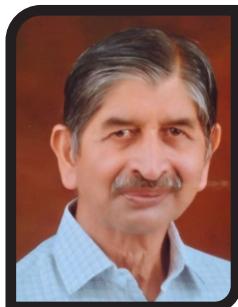
महात्मा गांधी ने भारत की विशिष्ट और विशेष परिस्थितियों पर लागू सार्वभौमिक मूल्यों के संदर्भ में भारत के नए संविधान की कल्पना की थी। 1931 की शुरुआत में, गांधीजी ने लिखा था: 'मैं एक ऐसे संविधान के लिए प्रयास करूँगा जो भारत को गुलामी और संरक्षण से मुक्त करेगा। मैं एक ऐसे भारत के लिए काम करूँगा जिसमें गरीब से गरीब यह महसूस करे कि यह उनका देश है जिसके निर्माण में उनकी एक प्रभावी आवाज है: एक ऐसा भारत जिसमें कोई उच्च वर्ग या निम्न वर्ग के लोग नहीं हैं, एक ऐसा भारत जिसमें सभी समुदाय एक साथ रहेंगे सही सामंजस्य। ऐसे भारत में छुआछूत के अभिशाप के लिए कोई जगह नहीं हो सकती। हम शांति से रहेंगे और बाकी दुनिया न तो शोषण करेगी और न ही शोषितष्ठ यह मेरे सपनों का भारत है जिसके लिए मैं संघर्ष करूँगा।'

संविधान लोगों को उतना ही सशक्त बनाता है जितना कि लोग संविधान को सशक्त करते हैं। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने बहुत अच्छी तरह से महसूस किया कि एक संविधान, चाहे वह कितना भी अच्छा लिखा गया हो और कितना विस्तृत हो, इसे लागू करने और इसके मूल्यों के अनुसार जीने के लिए सही लोगों के बिना बहुत कम सार्थक होगा। और इसमें उन्होंने आने वाली पीढ़ियों में अपना विश्वास दर्शाया है।



# मर्यादा का प्रतीक है राम का नाम

राम एक आज्ञाकारी पुत्र और शिष्य के रूप में दिखाई देते हैं तो दूसरी ओर जनकल्याणकारी शासक के रूप में भी उपस्थित होते हैं। इतना ही नहीं अपितु उनका भात्रु प्रेम और मित्र प्रेम भी उच्च कोटि का है। लक्ष्मण और भरत तथा शत्रुघ्न के प्रति जो स्नेह है, वही सुग्रीव तथा विभीषण के प्रति भी है। विभिन्न स्वभाव, प्रकृति और गुणदोष से युक्त सभी जातियों के साथ उनका स्नेह भरा आचरण, मर्यादा और अनुशासन का पालन करते हुए परिवार, समाज के प्रति उनकी कर्तव्य निष्ठा तथा समर्पण भाव किसी भी समाज को दिशा देने वाला है।



रामकृष्ण वी. सहस्रबुद्धे  
नागपुर, महाराष्ट्र



लिया राम का नाम तो, मिले मुक्ति तो उसके समर्पण भाव का प्रमाण भी।

अभिवादन जब भी करें, बोलें जय श्री राम।

जब कोई रचनाकार 'सागर पार मुझे जाने को' राम लिखा एक पत्थर दे दो 'कहता है तो वह वास्तव में उस राम नाम से स्वयं को जोड़ता है, जो धर्म अर्थ काम और मोक्ष प्रदान करता है। मर्यादा में रहकर मर्यादित आचरण और व्यवहार से संपूर्ण जगत और सृष्टि को संचालित करता है। अपने लिए और समर्पित के लिए भी वह दुर्गुणों से मुक्त जीवन की कामना करता है।

सांसारिक बंधनों और सुखों को भोगते हुए भी पारस्परिक संबंध की इच्छा रखते हुए उसके साथ एकाकार होना चाहता है। कवि की यह इच्छा राम के प्रति आस्था, विश्वास और श्रद्धा का प्रतीक है

राम का मानव स्वरूप और इस रूप में उनके कार्य, केवल त्रेता युग के समकालीन समाज का चित्रण नहीं करते।

मर्यादा की मर्यादा का पालन करते हुए, मानवोचित जीवन यापन करते हुए, सामान्य मनुष्य की तरह जीवन के अनुभव प्राप्त करते हुए समाज कल्याण के मार्ग का अवलंबन करने का आह्वान करते हैं।

राम एक दैवी शक्ति से संपन्न मानव शरीर धारण कर आसुरी शक्तियों और प्रवृत्तियों को नष्ट करने के लिए जन्मे थे। उन्हें अपने दायित्व का बोध था। अपने लक्ष्य का ज्ञान था और इसी के साथ वे अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक कर्तव्यों से भी परिचित थे। सभी संबंधों का समकालीन प्रतिबंधों के साथ निर्वहन कर समाज को दिशा देने का कार्य राम ने

करके दिखाया।

राम का चरित्र, उनका व्यवहार, उनका आदर्श और मर्यादित जीवन भारतीय जीवन दर्शन, सिद्धांत और मूल्यों पर आधारित है। मानवीय संवेदना से परिपूर्ण राम का जीवन वस्तुतः सभी मनुष्यों के लिए प्रेरणादार्द और अनुकरणीय है।

बाल्य काल के राम का विचार करें अथवा एक शासक के रूप में राम को देखने, समझने का प्रयास करें, वे चिरंतन स्वरूप में दिखाई देते हैं। विश्वामित्र के साथ जाने का प्रसंग हो या केवट के साथ संवाद का अथवा अहिल्या के उद्धार का, सीता स्वयंवर में धनुष भंग का हो या सीता हरण और समुद्र पर सेतु निर्माण का अथवा रावण के साथ युद्ध का,

राजा दशरथ द्वारा कैकेई को दिए वरदान के फलस्वरूप मिले वनवास का विषय हो या पंचवटी में भरत का अनुनय विनय का, अलग अलग प्रसंगों में राम के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं, पर सभी में उनकी लोक भावना, लोक कल्याण और स्नेह तथा सौहार्द का दर्शन होता है।

राम एक आज्ञाकारी पुत्र और शिष्य के रूप में दिखाई देते हैं तो दूसरी ओर जनकल्याणकारी शासक के रूप में भी उपस्थित होते हैं। इतना ही नहीं अपितु उनका भात्रु प्रेम और मित्र प्रेम भी उच्च कोटि का है। लक्ष्मण और भरत तथा शत्रुघ्न के प्रति जो स्नेह है, वही सुग्रीव और विभीषण के प्रति भी है। विभिन्न स्वभाव, प्रकृति और गुणदोष से युक्त सभी जातियों के साथ उनका स्नेह भरा आचरण, मर्यादा और अनुशासन का पालन करते हुए परिवार, समाज के प्रति

उनकी कर्तव्य निष्ठा तथा समर्पण भाव किसी भी समाज को दिशा देने वाला है।

राम एक अवतारी पुरुष हैं, दैवी शक्तियों से पूर्ण हैं, पर मानव शरीर धारण कर भू लोक में विचरण करते हैं तो स्वाभाविक ही मानवीय करते हुए समाज कल्याण का विचार करते हैं। उसे दिशा देने का काम करते हैं और समाज में व्याप्त भय को दूर करने का प्रयास करते हैं। अपने वनवास काल में राम ने लोकजागरण, लोक संगठन का भी कार्य किया और उनकी शक्ति को एक दिशा भी दी। वनों में, पर्वतों पर और नगर से दूर रहकर जीवन यापन करने वाले समाज को विकास की, सभ्यता की मुख्य धारा से जोड़कर अन्याय और आतंक के विरुद्ध खड़ा किया। अहिल्या का उद्धार वास्तव में परित्यक्त अथवा उपेक्षित, प्रताड़ित और शोषित नारी की मुक्ति का प्रतीक है तो शबरी के बेर खाना समाज के सबसे निचले तबके के साथ आत्मीय और समरस होने का संदेश देने वाला प्रसंग है।

राजमहल में भी राम ने अपनी तीनों माताओं के प्रति समान भाव रखा। सीता के बन में साथ जाने का आग्रह स्वीकार कर उसका मान रखा। सुग्रीव और विभीषण के साथ मैत्री कर मित्रता का उदाहरण सामने रखा। इसके अतिरिक्त वानर रिक्ष और दूसरे समुदायों के प्रति स्नेह भाव रखकर विश्वास जीता और उनकी शक्ति, क्षमता का उपयोग कर उनका सम्मान भी किया। मर्यादा की मर्यादा में रहकर जहां सेतुबंध के पूजन में तत्कालीन विद्वान और शिवभक्त रावण को आमंत्रित किया वहीं सीता हरण के लिए उसका वध भी किया।

इसी कारण राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं। मानव जीवन के मूल्यों की रक्षा करते हुए समाज कल्याण का विचार राम के जीवन का आधार है।

आज भी राम का नाम लेने मात्र से भवसागर पार जाने की हर भारतीय कल्पना करता है। हम राम भले ही न बनें, पर उनका अनुकरण तो कर ही सकते हैं। उनके जीवन से शिक्षा प्राप्त कर अपना जीवन सुधार सकते हैं और विश्व मानव परिवार की अवधारणा को साकार करने में अपनी भूमिका का समुचित निर्वहन भी किया जा सकता है।

राम सदाचार का, न्याय और व्यवस्था का प्रतीक हैं। मर्यादा, अनुशासन, कर्तव्य निष्ठा का दूसरा नाम राम है।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं  
सिया राम मय सब जग जानी,  
करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी।

यह संसार सीता और राम के बिना चल ही नहीं सकता।

चैत्र मास में नवरात्र के अवसर पर राम और सीता का यदि हम स्मरण करते हुए समाज को जोड़ने का कार्य करेंगे तो निश्चित ही सफलता प्राप्त होगी। सामाजिक एकता और सद्बाव तथा समरसता के लिए स्वयं को समर्पित कर विश्व को दिशा देने में इस समय का उपयोग करना हर भारतीय का कर्तव्य है और इसकी पूर्ति का प्रयास ही जीवन को राममय बनाना है। साधना और आराधना के मार्ग पर चलकर हम धर्म अर्थ काम और मोक्ष के चतुष्पक्ष पुरुषार्थ की प्राप्ति कर सकते हैं। ■ ■

# 'वसुधैर् कुटुंबकम्' की आधारशिला भारतीय संस्कृति.....

(G20 पर विशेष.....)

आजावें इस बदलते परिवेश में हमें अपने नई पीढ़ी को, खासकर बच्चों को भारतीय संस्कृति से अवगत कराने का प्रयास करना चाहिए। यह तब होगा जब हमारी नई पीढ़ी, बच्चे अपने शास्त्रों को, साहित्य को पढ़ेंगे समझेंगे और अपने से बड़ों की बातों को मानेंगे। आज़ आवश्यकता है कि नई पीढ़ी को कहीं न कहीं संस्कृत से सुपरिचित कराया जाय, बच्चे जब संस्कृत पढ़ेंगे तो वे भारतीय संस्कृति से स्वतः अवगत हो जाएंगे। उन्हें अपनी संस्कृत भाषा और संस्कृति पर विशेष गर्व होगा।



डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी  
(विभागाध्यक्ष संस्कृत)  
मानव भारती देहरादून उत्तराखण्ड



यामाश्रित्य पूर्णतया मानवो  
मानवो भवेत्।

यदा संस्थाप्यते धर्मः सैव भारत -  
संस्कृतिः॥

भारतीय संस्कृति अनेकानेक विशेषताओं, विविध विधाओं, ज्ञानविज्ञान परम्पराओं तथा बेहतरीन सृजनात्मक क्रियाकलापों से समन्वित और आदिकाल से सम्मानित संस्कृति रही है। भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने और समय- समय पर सींचने का काम संस्कृत भाषा करती रही है। इसलिए भारतीय जनमानस में प्रचलित प्राचीन लोकोक्ति है-

'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं  
संस्कृतिस्तथा'

भारत की प्रतिष्ठा या तो संस्कृत भाषा या फिर भारतीय संस्कृति के कारणों से वैश्विक स्तर पर है।

यद्यपि भारतीय संस्कृति की अनन्तानन्त विशेषताएं हैं तथापि कुछ विशेष विशेषताएं ऐसी हैं जो अन्य संस्कृतियों में अल्पप्रायः मिलती हैं या

दिखती हैं। जैसे- परधर्म सहिष्णुता, आत्मशुद्धि, नारी सम्मान, गुरु परम्परा, माता- पिता का आजीवन सम्मान, अतिथि सत्कार, प्रकृति संरक्षण और संवर्धन के लिए वृक्षारोपण तथा उनका पूजन तथा वसुधैर् कुटुंबकम् की वैश्विक भावना।

भारतीय संस्कृति को, ऋषि मुनियों ने सींचा है।

त्याग बलिदानों ने वीरों के, सीमाओं पर रक्षा करच खींचा है।

अविरल प्यार की धारा से, एक दूजे को स्नेह से सींचा है।

एक संस्कृति नहीं यह, विविध संस्कृतियों का बगीचा है॥

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन एवं महान संस्कृति है, जिसका उदाहरण पूरी दुनिया देती आ रही है।

भारतीय संस्कृति सर्वाधिक संपन्न और समृद्ध है, अनेकता में एकता ही इसकी मूल पहचान है। भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ एक से ज्यादा जाति, धर्म, समुदाय,



लिंग और पंत के लोग मिल-जुलकर रहते हैं और सभी अपनी-अपनी परंपराओं और रीति- रिवाजों का पालन करने के लिए स्वतंत्र हैं। भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। संस्कृति किसी भी देश, जाति, समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। संस्कृति का साधारण अर्थ होता है - संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट आदि। भारत के लोग 'वसुधैव कुटुम्बकम्' पर विश्वास रखते हैं, यानि कि सभी मिल जुलकर परिवार के तरह रहते हैं। भले ही भाषा और रंग- रूप अलग हो परन्तु सभी भारतीय हैं। जैसा कि हमारे शास्त्रों में कहा गया है -

**अयं निजः परोवेति गणना**

**लघुचेतसाम्।**

**उदारचरितानां तु वसुधैव**

**कुटुंबकम्॥**

यह अपना है, यह पराया है, ऐसा विचार छोटे मन वाले लोगों के होते हैं, जो

उदार हृदय वाले होते हैं उनके लिए सम्पूर्ण संसार ही अपना परिवार जैसा होता है।

यह भारतीय संस्कृति की ऐतिहासिक वैशिक विशेषता है।

जब हम भारतीय संस्कृति की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य उस संस्कृति से होता है जिसका जन्म भारत में हुआ तथा जो युगों से भारत के विभिन्न भागों में पनपती तथा विकसित होती चली आ रही है। दूसरे शब्दों में हम इसे सनातन संस्कृति भी कह सकते हैं। भारतीय संस्कृति में मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं का व्यापक रूप मिलता है। संसार के अन्य धर्म व जाति में जीवन की ऐसी विविधता या व्यापकता दिखाई नहीं पड़ती है। इस संस्कृति की आत्मा है-'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' -

**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु**

**निरामयाः ।**

**सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्**

**दुःखभाग् भवेत्॥**

आजके इस बदलते परिवेश में हमें अपने नई पीढ़ी को, खासकर बच्चों को भारतीय संस्कृति से अवगत कराने का प्रयास करना चाहिए। यह तब होगा जब हमारी नई पीढ़ी, बच्चे अपने शास्त्रों को, साहित्य को पढ़ेंगे समझेंगे और अपने से

बड़ों की बातों को मानेंगे। आज्ञ आवश्यकता है कि नई पीढ़ी को कहीं न कहीं संस्कृत से सुपरिचित कराया जाय, बच्चे जब संस्कृत पढ़ेंगे तो वे भारतीय संस्कृति से स्वतः अवगत हो जाएंगे। उन्हें अपनी संस्कृत भाषा और संस्कृति पर विशेष गर्व होगा।

क्योंकि भारतीय संस्कृति की जो बातें संस्कृत भाषा के माध्यम से बच्चों को बताने का प्रयास किया गया है वे निश्चित तौर पर स्तुत्य हैं।

अगर आप हैं चाहते बालकों को,  
विनयशील संपन्न शिक्षित बनाना।  
तो बचपन से उनको सरल रीति से है,  
उचित नित्य संस्कृत पढ़ाना लिखाना॥।  
ये बच्चे जो बचपन में संस्कृत पढ़ेंगे,  
चरण वंदना गुरुजनों की करेंगे।  
सदा शिष्ट वातावरण में रहेंगे,  
तो निश्चित विनयशीलशाली बनेंगे॥।  
अगर देश में शिष्टता सभ्यता का,  
वही चाहते पुण्य धार बहाना -  
तो बचपन से ही चाहिए बाल बच्चों को,  
संस्कृत व संस्कृति से परिचित कराना॥।  
संस्कृत व संस्कृति से परिचित कराना॥।

हम सभी को अपनी भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए कठिबद्ध होना चाहिए। बच्चों को संस्कृति से परिचित कराना चाहिए और विश्व की सबसे सर्वोत्तम तथा सर्वप्राचीनतम संस्कृति पर गर्व करना चाहिए। आइए देववाणी संस्कृत भाषा की इन पंक्तियों को पढ़ें जिनमें समग्रता से भारतीय संस्कृति निहित है।

धन्यं भारतवर्षं धन्यं, पुण्यं  
भारतवर्षं पुण्यम्।

यस्य संस्कृतिः

तोषदायिनी, पापनाशिनी पुण्यवाहिनी।

यत्र पुण्यदा गंगा याति, सिन्धु - नर्मदा  
सदा विभाति।

सरस्वती च धन्या धन्या, यमुना  
कृष्ण मान्या मान्या।

शृणुमो यत्र च वेदं पुण्यं, धन्यं  
भारतवर्षं धन्यम्।

पुण्यं भारतवर्षं पुण्यम्॥

यत्र पर्वताः रम्याः रम्याः, ऋषयो

मुनयो धन्याः धन्याः।

कैलासश्च हिमराजश्च विन्ध्य -  
सतपुड़ा - हेमाद्रिश्च।

अरावली पर्वतमाला च स्वर्ण - सुमेरु -  
हर्षकरश्च।

पुण्य - पर्वतैः पुण्यं पुण्यम्, धन्यं  
भारतवर्षं धन्यम्।

पुण्यं भारतवर्षं पुण्यम्॥

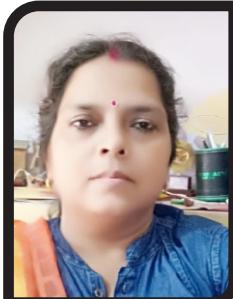
'अस्तो मा सद्गमय । तमसो मा  
ज्योतिर्गमय। मृत्युर्मृतं गमय॥'

- (बृहदारण्यक् उपनिषद्)

॥जयतु भारतीय - संस्कृतिः

जयतु भारतम्॥

# बहुरंगी होली



डॉ० प्रतिभा गोस्वामी

प्राचार्या

राजकीय बालिका इंटर कॉलेज सैयदराजा



जब बात चली बहुरंगों की, तब समझो होली आई है।

जब उठें तरंगें हर मन मैं, तब समझो होली आई है।

लाल, गुलाबी और रुपहली, हर रंग मैं होली आई है।

जब मन की वीणा झंकूत हो, तब समझो होली आई है।

जब ध्वल चाँदनी नभ मैं हो, तब समझो होली आई है।

जब सूर्य तपिश भी मधुर लगे, तब समझो होली आई है।

जब खेतों की बाली पक जाए, तब समझो होली आई है।

जब नई कोपलें आ जाएँ, तब समझो होली आई है।

जब चहुंओर हरियाली हो, तब समझो होली आई है।

जब शीतल मधुर समीर बहे, तब समझो होली आई है।

वेखौफ रहें जब महिलाएं, तब समझो होली आई है।

जब गाँव शहर स्वच्छ दिखे, तब समझो होली आई है।

जब वृद्ध आश्रम मैं न पलें, तब समझो होली आई है।

जब सब अपना सा ही लगे, तब समझो होली आई है।

जब खाब हकीकत हो जाए, तब समझो होली आई है।

जब खुश सबकी घरवाली हों, तब समझो होली आई है।

जब बूढ़े भी बच्चे से लगें, तब समझो होली आई है।

सारे कलुष जब धुल जाएँ, तब समझो होली आई है।

जब बात चली बहुरंगों की, तब समझो होली आई है।

# अर्थव्यवस्था मजबूत करते मंदिर

एनएसएसओ के आंकड़ों के अनुसार धार्मिक तीर्थ यात्रा पर जाने वाले 55 प्रतिशत हिंदू मध्य और छोटे आकार के होटलों में ठहरते हैं। धार्मिक यात्रा की लागत 2,717 रुपये प्रति दिन / व्यक्ति, सामाजिक यात्रा की लागत 1,068 रुपये प्रति दिन / व्यक्ति, और शैक्षिक यात्रा की लागत 2,286 रुपये प्रति दिन / व्यक्ति है। यह 1316 करोड़ रुपये के दैनिक व्यय और धार्मिक यात्रा पर 4.74 लाख करोड़ रुपये के वार्षिक व्यय के बराबर है।



पंकज जगन्नाथ जयस्वाल  
महाराष्ट्र



भारत में मंदिर देश की समृद्ध धार्मिक और आध्यात्मिक विरासत को दर्शाते हैं। भारत 2 मिलियन से अधिक मंदिरों का देश है, जिनमें से कई को अत्यधिक आस्था और चमत्कार का स्थान माना जाता है, जो दुनिया भर के भक्तों को आकर्षित करते हैं। हम भारतीय आधुनिकता के इस युग में अपनी संस्कृति, रीत-रिवाजों और धर्म को संरक्षित करना और अपनाना जानते हैं।

प्राचीन काल से ही मंदिर वाणिज्य, कला, संस्कृति, शिक्षा और सामाजिक जीवन के केंद्र रहे हैं। स्थानीय मंदिर समुदाय का केंद्र था। यह वह जगह है जहां लोगों ने देवी-देवताओं से स्वास्थ्य, धन, संतान, एक विशिष्ट बाधा को दूर करने, या यहां तक कि किसी मूल्यवान वस्तु की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की जाती है। यहां लोग मिलते थे, समाचारों और

विचारों का आदान-प्रदान करते थे, अपनी कहानियाँ, अपनी कठिनाइयाँ साझा करते थे, एक-दूसरे से सलाह माँगते थे, और अपने दैनिक जीवन की योजना बनाते थे।

देश के प्रत्येक राज्य की अपनी अलग परंपराएं हैं, और इनमें से प्रत्येक राज्य का समृद्ध इतिहास है जहां कई मंदिर हैं जो सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में काम करते हैं। रिलीजन के बजाय धर्म ने राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उनके विश्वदृष्टि को आकार दिया है और उन्हें आध्यात्मिक रूप से विकसित करने की अनुमति दी है। भारत में कई अमीर मंदिर भी हैं, जो हर साल दुनिया भर से लाखों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। मंदिर भारत में ऐसे स्थान हैं जहां लोग शांति, समृद्धि और खुशी के लिए प्रार्थना करते हैं। इनमें से कई मंदिर वास्तुकला की उत्कृष्ट कृतियाँ

हैं, और उनमें से कई प्राचीन काल के दौरान बनाए गए थे और उनमें बताने के लिए आकर्षक कहानियाँ हैं। इनमें से कुछ मंदिर इतने धनवान हैं कि उनके पास विशाल भूमि या सोना है। कई मंदिरों में मूल्यवान वस्तुओं और प्राचीन वस्तुओं का व्यापक संग्रह है जो पीढ़ियों से चला आ रहा है। मंदिर एक मजबूत अर्थव्यवस्था और रोजगार सृजन में कैसे योगदान करते हैं?

‘कुछ मायनों में, तीर्थयात्रियों के साथ-साथ पर्यटन-समृद्ध आर्थिक क्षेत्रों का विकास व्यापक शोध से उपजा है, जिसने दिखाया है कि पूरे भारतीय इतिहास में मंदिर महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्र थे।’ मिनेसोटा विश्वविद्यालय के बर्टन स्टीन ने 1960 में इस पर एक मौलिक पत्र लिखा था जिसे ‘द इकोनॉमिक फंक्शन ऑफ ए मेडियेक्ल साऊथ इंडियन टेप्पल’ कहा जाता है, जो द जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज में प्रकाशित हुआ था।

एनएसएसओ के आंकड़ों के अनुसार धार्मिक तीर्थ यात्रा पर जाने वाले 55 प्रतिशत हिंदू मध्य और छोटे आकार के होटलों में ठहरते हैं। धार्मिक यात्रा की लागत 2,717 रुपये प्रति दिन / व्यक्ति, सामाजिक यात्रा की लागत 1,068 रुपये प्रति दिन / व्यक्ति, और शैक्षिक यात्रा की लागत 2,286 रुपये प्रति दिन / व्यक्ति है। यह 1316 करोड़ रुपये के दैनिक व्यय और धार्मिक यात्रा पर 4.74 लाख करोड़ रुपये के वार्षिक व्यय के बराबर है।

एनएसएसओ के सर्वेक्षण के मुताबिक, मंदिर की अर्थव्यवस्था 3.02 लाख करोड़ रुपये या करीब 40 अरब डॉलर की है और जीडीपी का 2.32

फीसदी है। हकीकत में, यह बहुत बड़ा हो सकता है। फूल, तेल, दीपक, इत्र, चूड़ियाँ, सिंदूर, मूर्ती, तस्वीर और पूजा के कपड़े सभी शामिल हैं। यह असुरक्षित अनौपचारिक श्रमिकों की मेहनत और दृष्टी से प्रेरित है। यह अनुमान लगाया गया है कि अकेले यात्रा और पर्यटन उद्योग भारत में 80 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार देता है, जिसमें साल-दर-साल

19<sup>इ</sup> से अधिक की वृद्धि दर और अकेले पिछले वर्ष में 234 बिलियन से अधिक का राजस्व जमा हुआ है। सरकारी अनुमानों के अनुसार, भारत में लगभग 87 प्रतिशत पर्यटक घरेलू हैं, शेष 13 प्रतिशत विदेशी पर्यटक हैं। हिंदू और बौद्ध मान्यताओं में वाराणसी के महत्व का अर्थ है कि इस प्राचीन शहर में कुल घरेलू पर्यटकों और तीर्थयात्रियों का एक बड़ा हिस्सा आता है। 2022-23 के लिए केंद्र सरकार का राजस्व 19,34,706 करोड़ रुपये है, और केवल छह मंदिरों ने 24000 करोड़ रुपये नकद एकत्र किए। घरेलू धार्मिक पर्यटन विदेशी आगंतुकों की संख्या से अधिक है। नए गंतव्यों की 100 करोड़ से अधिक घरेलू यात्राओं से संकेत मिलता है कि दिल्ली-आगरा-जयपुर के सुनहरे त्रिकोण से परे मंथन चल रहा है। यहां तक कि नौ करोड़ विदेशी पर्यटकों में से 20<sup>इ</sup> तमिलनाडु में मदुरै और महाबलीपुरम और आंध्र प्रदेश में तिरुपति आते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में, विश्व यात्रा और पर्यटन प्रतिस्पर्धात्मकता रिपोर्ट (डब्लू ई एफ) और यू एन डब्लू टी ओ पर्यटन सुचकांक जैसे प्रमुख वैश्विक सूचकांकों पर भारत की रैंकिंग में लगातार सुधार

हुआ है। पर्यटन गतिविधियों में वृद्धि से होटल और रिसॉर्ट जैसे बहुउपयोगी बुनियादी ढाँचे को विकसित करने में भी मदद मिलती है। परिणामस्वरूप, भारत सरकार अगले कुछ वर्षों में 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक मूल्य के एफडीआई को आकर्षित करने का इरादा रखती है, जिसके परिणामस्वरूप लगभग 100 मिलियन नौकरियों का सृजन होगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंदिर और पर्यटन उद्योग को कैसे देखते हैं?

हाल ही में, प्रधानमंत्री पर्यटन पर बजट के बाद के वेबिनार में बोल रहे थे, जब उन्होंने रामायण सर्किट, बुद्ध सर्किट, कृष्ण सर्किट, पूर्वोत्तर सर्किट, गांधी सर्किट और सभी संतों के तीर्थों का उल्लेख किया, इस पर सामूहिक रूप से काम करने के महत्व पर जोर दिया। प्रधान मंत्री ने सदियों से जनता द्वारा की गई विभिन्न यात्राओं का हवाला देते हुए कहा कि कुछ लोग सोचते हैं कि पर्यटन उच्च आय वाले समूहों के लिए एक फैसी शब्द है, लेकिन यह सदियों से भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन का हिस्सा रहा है, और लोग इसका पुरी आत्मीयता से वहन करते आ रहे हैं, साधन न होने पर भी तीर्थ यात्रा पर जाते हैं। उन्होंने चार धाम यात्रा, द्वादश ज्योतिर्लिंग यात्रा और 51 शक्तिपीठ यात्रा का उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे उनका उपयोग राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के साथ-साथ हमारे आस्था के स्थानों को जोड़ने के लिए किया जाता है। यह देखते हुए कि देश के कई प्रमुख शहरों की पूरी अर्थव्यवस्था इन यात्राओं पर निर्भर थी, प्रधान मंत्री ने यात्राओं की

सदियों पुरानी परंपरा के बावजूद सुविधाओं को उन्नत करने के लिए विकास की कमी पर खेद व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि देश की क्षति का मूल कारण सैकड़ों वर्षों की गुलामी और आजादी के बाद के दशकों में इन स्थानों की राजनीतिक उपेक्षा है। मोदी ने कहा, 'आज का भारत इस स्थिति को बदल रहा है।' उन्होंने कहा कि सुविधाओं में वृद्धि से पर्यटकों के आकर्षण में वृद्धि होती है। उन्होंने श्रोताओं को यह भी बताया कि जीर्णोद्धार से पहले वाराणसी के काशी विश्वनाथ धाम में एक साल में लगभग 80 लाख लोग आते थे, लेकिन पिछले साल पर्यटकों की संख्या 7 करोड़ से अधिक हो गई। केदारघाटी में पुनर्निर्माण कार्य पूरा होने से पहले केवल 4-5 लाख भक्तों ने बाबा केदार के दर्शन किए थे। इसी तरह, 80,000 तीर्थयात्री गुजरात में माँ कालिका के दर्शन के लिए पावागढ़ आते हैं, जीर्णोद्धार से पहले सिर्फ 4,000 से 5,000 तक आते थे। सुविधाओं के विस्तार का सीधा प्रभाव है। पर्यटकों की संख्या पर प्रभाव, और अधिक पर्यटकों का अर्थ है रोजगार और स्वरोजगार के अधिक अवसर 'प्रधान मंत्री ने कहा। भारत में विदेशी पर्यटकों की बढ़ती संख्या पर प्रकाश डालते हुए, प्रधान मंत्री ने कहा कि इस साल जनवरी में 8 लाख विदेशी पर्यटकों ने भारत का दौरा किया, जबकि पिछले साल जनवरी में केवल 2 लाख थे। हिंदू मंदिरों का बहुआयामी महत्व है जिसमें बुद्ध, जैन और सिख मंदिर शामिल हैं।

कम्युनिस्ट और धर्मात्मक माफियाओं द्वारा हिंदू मंदिरों और धार्मिक

प्रथाओं को लगातार विरोध और मजाक उड़ाया जाता है। मंदिरों ने हमेशा लोगों को एक साथ लाया है जब समाज और देश को इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। विभिन्न सामाजिक गतिविधियाँ जो नियमित आधार पर और आपात स्थिति के दौरान होती हैं, सराहनीय हैं। हाल ही में कोरोना की बड़ी आपदा और मंदिरों द्वारा दी गई सहायता ने एक बड़ी राहत प्रदान की जिसने कई लोगों की जान बचाई। स्कूलों, अस्पतालों और ग्रामीण विकास गतिविधियों के लिए बड़े मंदिरों का कार्य काफी सराहनीय है।

वर्तमान सरकार की मंदिर स्थलों के साथ-साथ संबंधित बुनियादी ढांचे की व्यवस्थित योजना और विकास, गुलामी की मानसिकता को सांस्कृतिक रूप से बंधे हुए, सामाजिक आर्थिक और आध्यात्मिक विकास पर केंद्रित करना, अधिक सामाजिक सामंजस्य, शांति पाने के लिए जीवन का जश्न मनाने और समाज और देश के खिलाफ रची गयी साजिशों के खिलाफ एक इकाई के रूप में लड़ना।

#### मंदिरों का वैज्ञानिक महत्व-

पृथ्वी के भीतर चुंबकीय और विद्युत तरंगों लगातार घूम रही हैं; जब आर्किटेक्ट और इंजीनियर एक मंदिर का डिजाइन बनाते हैं, तो वे भूमि का एक टुकड़ा चुनते हैं जहां ये लहरें प्रचुर मात्रा में होती हैं। मुख्य मूर्ति मंदिर के केंद्र में स्थित है, जिसे गर्भगृह या मूलस्थान के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर का निर्माण किया जाता है, और मूर्ति को प्राण प्रतिष्ठा के रूप में जानी जाने वाली पूजा के साथ प्रतिष्ठित किया जाता है। मूर्ति

को ऐसे क्षेत्र में रखा जाता है जहां चुंबकीय तरंगे बेहद सक्रिय होती हैं। जब मूर्ति रखी जा रही होती है तो वे उसके नीचे कुछ ताप्रपत्र गाढ़ देते हैं; प्लेटों पर वैदिक लिपियों को अंकित किया जाता है; ये तांबे की प्लेटें पृथ्वी से चुंबकीय तरंगों को अवशोषित करती हैं और उन्हें आसपास के इलाकों में विकीर्ण करती हैं।

नीतीजतन, यदि कोई व्यक्ति नियमित रूप से मंदिर जाता है और मूर्ति के चारों ओर दक्षिणावर्त चक्रकर लगाता है, तो उसका शरीर इन चुंबकीय तरंगों को अवशोषित करता है और सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ावा देता है, जिससे स्वस्थ जीवन की ओर अग्रसर होता है। लगभग सभी हिंदू मंदिरों में बड़ी घंटियाँ होती हैं जिन्हें प्रवेश करने से पहले बजाना चाहिए। इसके पीछे का विज्ञान हैरान कर देने वाला है। मंदिर की घंटियाँ विभिन्न धातुओं के एक विशिष्ट अनुपात से बनाई जाती हैं। इनमें कैडमियम, लेड, कॉपर, जिंक, निकेल, क्रोमियम और मैंगनीज शामिल हैं। विज्ञान की असली वजह है मैन्युफैक्चरिंग में इस्तेमाल होने वाली धातुओं का मिश्रण और अनुपात। जब घंटियाँ बजती हैं तो वे एक अलग आवाज निकालते हैं। ध्वनि और कंपन इन्हें स्पष्ट हैं कि यह मस्तिष्क के दोनों पक्षों (बाएं और दाएं) को जोड़ता है; इसके अतिरिक्त, तेज ध्वनि और कंपन प्रतिध्वनि मोड़ में सात सेकंड तक रहता है, जो शरीर के सात उपचार केंद्रों को छूने के लिए पर्याप्त है। ध्वनि के साथ मन सभी विचारों से खाली हो जाता है और मंदिरों के नियमित आगंतुक में बदल जाता है। यह बहुत ग्रहणशील हो जाता

है, नए विचारों को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाता है और मन को चल रही सभी अराजकता से मुक्त कर देता है। कई अन्य लाभों में नकारात्मक विचारों का उन्मूलन, बेहतर एकाग्रता, मानसिक संतुलन और बीमारी में सहायता शामिल हैं।

मंदिर की अर्थव्यवस्था के अध्ययन को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। मंदिर और उससे जुड़ी अर्थव्यवस्था भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में लाखों नौकरियां पैदा होंगी। इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा व्यवस्थित प्रबंधन के माध्यम से मजबूत किया जाना चाहिए। उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में मंदिर, उसके प्रबंधन और उसकी अर्थव्यवस्था को शामिल करना एक बुद्धिमान दृष्टिकोण होगा। युवा अपने प्रयासों और संसाधनों को मंदिर की अर्थव्यवस्था और संबंधित पर्यटन क्षेत्रों के विस्तार और विकास की दिशा में निर्देशित कर सकते हैं।

एक अन्य विवादास्पद मुद्दा सभी प्रमुख हिंदू मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण को हटाना है। सरकार को एक नया कानून पारित करना चाहिए कि कोई भी राजनीतिक नेता नई मंदिर प्रबंधन समिति का भाग ना हो। दान का उपयोग उस विशेष रिलीजन या धर्म के कल्याण और सामाजिक गतिविधियों के लिए किया जाना चाहिए। आइए हम मंदिर की संस्कृति और गतिविधियों को एक समकोण से देखें और मंदिर की अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए मिलकर काम करें। ■ ■

# एक पूरा चाँद मेरा होगा



सपना श्रीवास्तव

नोएडा ३. प्र

हजारो ख्वाइश तुम्हारी हो..

एक पूरा चाँद मेरा होगा...!

बुन लो रात के अंधेरे में लाखों सपने..

पर ऊगता हुआ सूरज मेरा होगा...!

खुश हो तुम चूनकर..

रेत पर कि ही सीपिया..

है, समुन्दर की गहराई में..

मोती वो सारे मेरे होंगे..!

मोड़ सको तो मोड़ लो..

नदी के धाराओं को..

ले जायेगा जो किनारे तक..

वो लहरें सब मेरी होंगी..!

हो सके तो समेट लेना..

सारे घटाओं को..

बरस जायेंगे वो भी एक दिन..

फिर निकलेगा जो..

'इन्द्रधनुष' वो मेरा होगा..छ

# नारी विमर्श-साहित्य समाज और नारी

रामबोला को रत्ना ने ही तुलसीदास बनाया तथा रत्नाकर डाकू को उसकी पत्नी ने बाल्मीकि तो बना दिया , परन्तु नारीपुत्र नहीं बना सकी । नारी क्या है ? बला , अबला या सबला ? वह स्वयं भी नहीं जानती तभी तो इस पुरुष प्रधान समाज में वह केवल भोग्या बनी हुई है। कभी उसे हाट - बाजारों में पशुओं की तरह खरीदा जाता तो कभी दान - दहेज में लिपटी कॉमोडिटी माना जाता है , टी.वी. , फिज , कार की तरह । रईसों के ड्राइंग रूम की सजावट। वह भी तब जब यह अपने मायके से अन्य सजावटी चीज लेकर आए ।



अमरनाथ  
लेखनऊ, उ.प्र.



जहाँ जिन्दगी की कोई कीमत नहीं , तो फिर कोई मूल्य , कोई तहजीब की बात ही नहीं उठती और न कोई उठाना ही पसन्द कर रहा है तो फिर उस समाज , व देश की बात भी बेमानी हो जाती है । जब समाज व देश हो बेमानी हो गए तो फिर उस समाज व देश की महिला की बात करना ढपोरशंख या शेखचिलीपन नहीं लगेगा क्या ? महिला की बात करने पर पुरुषों के पुंसत्व पर चोट पहुँचती है । उनके खून में गर्म पिघलता हुआ सीसा तेजी से घुलने लगता है । उस समय वह भूल जाता है कि वह भी उसी नारीकोख से जन्मा है , जिसका बालिंग होने पर वह व्यापार करने लगता है । कभी वेश्यालय में तो कभी कालगर्ल बनाकर । कभी बीच सड़क पर तो कभी रईस अद्याशों के

महलों में नंगी नचवाकर , उसकी बोटी-बोटी नुचवाकर । भूल जाता है वह तथाकथित मर्द कि उसकी माँ , बहिन , बेटी सभी औरत थीं, औरत हैं, और औरत ही रहेंगी । वह स्वयं किसी पुरुषकोख से नहीं जन्मा । पैने खंजर से तीखे तथ्य , और गुरुच - नीम जैसे कड़वे सत्य को भी नकारता आ रहा है पुरुष , महज अपनी प्रधानता जताने के लिए और इस प्रधानता को महिमामंडित करता आ रहा है हमारा साहित्य । सूफी , पूज्य , आदर्श साहित्यकारों ने नारी को देखा तो सही, परन्तु अपने पुरुषत्व वाले चश्मे से । चाहे वे तुलसी हों , कबीर अथवा रहीम । अन्यथा वे कदापि न लिखते---

काने खोरे कूबरे, कुटिल कुचाली

जानि ।

तिय विसेषि, पुनि चेरि , कहि भरत  
मातु मुसुकानि ।

तुलसी दास ( रामचरित मानस-  
अयोध्या काण्ड 14)

काने, लगड़ों और कूबड़ों को  
कुटिल और कुचाली जानना चाहिए ।  
उनमें भी स्त्री और खासकर दासी ।

इतना कहकर भरत जी की माता  
मुस्करा दी ।

जानि न जाइ नारि गति भाई ।

तुलसी दास ( रामचरित मानस -  
अयोध्या काण्ड - 47-4 )

स्त्रियो की गति (चाल)नहीं जानी  
जाती ।

ढोल , गवाँर , सूद्र , पसु नारी ,  
सकल ताङ्ना के अधिकारी ।  
तुलसीदास ( रामचरितमानस - सुदर  
काण्ड -58-3 )

रामचरितमानस में ही लेकेश रावण  
मंदोदरी से कहता है कि -

नारी सुभाउ सत्य सब कहहीं ,  
अवगुन आठ सदा उर रहहीं ।  
साहस , अनृत , चपलता माया  
भाग आँडियो गाँ आसाँ चा  
अदाया । तुलसीदास- ( रामचरितमानस  
- लंकाकाण्ड - 15-ख-1.2 )

नारी स्वभाव को सब ही सत्य कहते  
हैं कि उसके हृदय में आठ अवगुण सदा  
रहते हैं- साहस,झूठ, चंचलता , माया (  
छल ), भय , अविवेक (मूर्खता ) ,  
अपवित्रता और निर्दयता ।

उरग, तुरग, नारी, नृपति ,

नीच जाति हथियार ,  
रहिमन इन्हें संभालिए ,  
पलटत लगत न बार। (रहीम)

नारी की झाई पड़त अंधा होत  
भुजंग , कबिरा तिन की कौन गति ,नित  
नारी के संग ?( कबीर )

नारी सेती नेह, बुद्धि, विवेक सबहीं  
हरै ।

बृथागमावै देह ,कारज कोई ,ना  
सरै। ( कबीर - साखी- अथ काम को  
अंग-19)

-- स्त्री से प्रेम, बुद्धि , विवेक आदि  
सबको नष्ट कर देता है । हे जीव ! इससे  
केवल देह नष्ट होगी । काम कोई भी पूरा  
नहीं होगा ।

हमारे आचार्यों , मनीषियों ने भी  
इन्हे फतवा देने में कोई कसर नहीं रखी ।  
जहाँ एक ओर मनु जी ने कहा कि ' नैसर्गिक रूप से स्नेह शून्य होने के कारण  
पलियाँ अपने पतियों के प्रति सच्ची नहीं  
रह सकती । यही पर भर्तृहरि जी ने नारी  
को मनुष्य रूपी मछली को फँसाने का  
काँटा, सन्देहों का भँवर, धृष्टताओं का  
लोक , सैंकड़ों कपड़े पहनने वाली  
नरकपुरी का द्वार आदि अलकारणों से  
विभूषित किया । आचार्य शुभचन्द्र ने नारी  
को साँप की दाढ़ के समान संताप देने  
वाली कहा तो आचार्य अमितिगति ने स्त्री  
को माया , अपकारी , तथा कुल में कलंक  
लगाने वाली कह डाला । जैन साहित्यकार  
आचार्य नागदेव और आचार्य विमलसूरि  
जी ने भी नारी के बारे में कहा है कि-

जल्पन्ति सार्थमन्येन पश्यन्त्यन्यं  
सवि भ्रमाः हृदतं चिन्तयन्त्यन्यं न  
स्त्रीणामेकतो रतिः ।

नागिनस्तृप्यति काष्ठानां नापगानां  
महोदधिः , नान्तकः सर्वभूतानां न पुंसां  
वामलोचनाः ।

वज्यकत्वं नृशंसत्वं चञ्चलत्वं  
कुशीलता ,  
इति नैसर्गिका दोषा यासां ताः  
सुखदाः कथम् ।

गाचि चान्यन्मनस्यन्यत्  
क्रियायामन्यदेव हि ।

यासा साधारणं स्वीणां ताः कथं  
सुखहेतवः ।

विचरन्ति कुशीलेषु लङ्घयन्ति  
कुलक्रमम् , न स्मरन्ति गुरु मित्रं पति पुत्र  
चा यां षिताः । देवदैत्योरगव्यालग्रहचन्द्राकंधेष्टितम् ,  
जानन्ति से महाप्राज्ञास्तेऽपि वृत्तं न  
यां षिताम् । सुखदुःखजयपराजयजीवितमरणानि ये  
विजानन्ति , मुहृति तेऽति नूनं  
तत्वविदश्चेष्टिते स्त्रीणाम् ।

जलधैर्यानपात्राणि ग्रहाद्या  
गगनस्य च , यान्ति पार न तु स्त्रीणां  
दुश्चरित्रस्य केचन ।

ना ताता द्रुढ़ा  
हरिव्याघव्यालानलनरेश्वराः

कर्वन्ति यत् करोत्येका नर नारी  
निरङ्कुशा ॥

आता हसन्ति च रुदन्ति च  
वित्तहेतो-

विश्वासयन्ति च नरं न व च  
विश्वसन्ति ।

तस्मान्तरेण कुलशीलपराक्रमेण ,  
नार्यः शमशानघटिका इय वर्जनीयाः ॥  
नागदेव ( मदनपराजये- प्रथम परिच्छेद

उक्तं च 22-31)

स्त्रियां एक के साथ बात करती हैं , दूसरे को विलासपूर्वका देखती है और मन में किसी तीसरे का ही ध्यान करती रहती हैं । ये एक व्यक्ति से स्नेह नहीं कर सकती । जिस प्रकार अग्नि काष्ठ के ढेर में तृप्त नहीं होती , समुद्र नदियों से तृप्त नहीं होता , काल प्राणियों से तृप्त नहीं होता , उसी प्रकार स्त्रियाँ भी पुरुषों से तृप्त नहीं होती । वंचकता , नृशंसता , चंचलता और कुशीलता- ये दोष स्त्रियों में निर्सर्ग से पाये जाते हैं । फिर स्त्रियां सुखद कैसे हो सकती हैं जिनकी वाणी में कुछ अन्य होता है , मन में कुछ अन्य रहता है तथा कर्म में कुछ अन्य रहता है । ये स्त्रियों सुखदायी कैसे हो सकती हैं । स्त्रियां कुशीलों के साथ विचरण करती हैं , कुलक्रम का उल्लंघन करती है और गुरु , मित्र , पति , पुत्र , किसी का भी ध्यान नहीं रखती । जो महापण्डित देव , दैत्य , साँप , व्याल , ग्रह , चन्द्र और सूर्य की गतिविधि के परिज्ञाता हैं , वे भी स्त्रियों का आधार नहीं जान पाते । जलयान समुद्र से एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंच जाते हैं और ग्रह आदि आकाश के । परन्तु स्त्रियों के दुश्चरित्र को पार कोई भी नहीं प्राप्त कर सकता । कुद्ध हुए सिंह , व्याघ्र , व्याल , अग्नि , और राजा भी उतना अनिष्ट नहीं करते जितना एक कुद्ध निरंकुश नारी मनुष्य का कर सकती है । स्त्रियाँ धन के हेतु हँसती हैं और रोती हैं । मनुष्य को विश्वास बना देती है लेकिन स्वयं विश्वस्तः नहीं होती । इसलिए कुलीन , सुशील , और पराक्रमी मनुष्य को चाहिए कि वह शमशान के घड़ों के समान इनका परित्याग कर दे ।

स्त्री या सा नरकद्वार दुःखानां  
खानिरेव च पापबीजं कलेमूलं  
कथमालिङ्मनादिकम् ।

वरमालिङ्मिता कुद्ध चललोलाऽत्र  
सर्पिणी , न पुनः कौतुकेनापि नारी  
नरकपद्धतिः ॥

नागदेव (मदनपराजये -द्वितीय  
परिच्छेद- श्लोक- 20-21 )

(जब स्त्री नरक का द्वार है , दुखों की खान है , पापों का बीज है , कलि का मूल है , फिर उससे आलिंगन आदि कैसे सम्भव है ? चपल जिह्वावाली कुद्ध सर्पिणी का आलिंगन उचित है लेकिन नरकपद्धति नारी का कौतुकवश भी आलिंगन करना उचित नहीं है ।)

अहवा को जुवईणं , जाणइ चरियं  
सहावकुडिलाणं , दोसाण आगरो च्यिय  
जाण सरीरे वसइ कामो ।

मूलं दुच्चरियाणं , हवङ्य नरयस्स  
बत्तणी बिउला , मोक्खस्स महाविगं ,  
वज्जेयव्या सया नारी ।

आचार्य विमल सूरि (पउमचरियं -  
अध्याय-93- पंक्ति - 35-36 )

अथवा जिनके शरीर में दोषों को  
खान जैसा काम बसता है , उन स्वभाव से  
कुटिल युवतियों का चरित्र कौन जान  
सकता है ? स्त्री दुश्चरितों का मूल ,  
नरक का विशाल मार्ग और मोक्ष के लिए  
मताविघरूप होती है , अतः स्त्री का  
सर्वदा त्याग करना चाहिए ।

महाभारत में भी कर्ण की मृत्यु के  
बाद युद्धिष्ठिर को जब यह ज्ञात होता है  
कि कर्ण उसका ही अपना बड़ा भाई था तब  
उस धर्मराज ने भी अपनी माँ कुन्ती के

प्रति अभद्रता प्रकट करते हुए सम्पूर्ण नारी  
जाति को ही शाप दे डाला । हो सकता है  
कि तत्कालीन घटनाक्रम में कुन्ती दोषी  
हो , परन्तु सम्पूर्ण नारी समाज के प्रति  
धर्मराज का यह आक्रोश क्या दर्शाता है ?  
महापुरुषों / भगवानों ने भी इसे शैतान की  
बेटी , डेविल्स वर्कशाप , ठगिनी , माया  
आदि विशेषण दे रखे हैं । शराबियों ने तो  
इसे दारू का अद्धा तक कह डाला ।  
आधुनिक काल में जब वोमैन - लिब का  
जमाना है , समान अधिकार की गूँज उठ  
रही है , फ्रायड भी यह कह रहा है कि-

‘स्त्रियों में न्याय की भावना बहुत  
कम होती है क्योंकि उनके मस्तिष्क में  
ईर्ष्या भरी होती है ।’

हिन्दी फिल्म ‘भाभी’ का गीतकार  
प्रदीप भी औरत को ‘जहर की पुड़िया’  
बता रहा है तो जार्ज बर्नार्ड शा ( जीबीएस )  
जैसा जीनियस यह सलाह दे रहा है कि  
‘पुरुषों को जहाँ तक सम्भव हो सके , नारी  
से दूर रहना चाहिए ।’ अगर यह सलाह  
उनके पिता - श्री अमल में लाते तो फिर  
कैसे पैदा होते स्वयं जीबीएस ? कालीदास  
को विद्योत्तमा ने ही कुमार सम्भव , मेघदूत  
, अग्निमित्र बनाया था , वरना वे स्वयं तो  
उसी डाल को काट रहे थे जिस पर वे ढैठे  
थे ।

रामबोला को रत्ना ने ही तुलसीदास  
बनाया तथा रत्नाकर डाकू को उसकी  
पत्नी ने बाल्मीकि तो बना दिया , परन्तु  
नारीपुत्र नहीं बना सकी । नारी क्या है ?  
बला , अबला या सबला ? वह स्वयं भी  
नहीं जानती तभी तो इस पुरुष प्रधान  
समाज में वह केवल भोग्या बनी हुई  
है । कभी उसे हाट - बाजारों में पशुओं की  
तरह खरीदा जाता तो कभी दान - दहेज में

लिपटी कॉमोडिटी माना जाता है , टी.वी. , फिज , कार की तरह । रईसो के इंग्रजी रुम की सजावट। वह भी तब जब यह अपने मायके से अन्य सजावटी चीज लेकर आए । इस मुरदा समाज में जिन्दा- नारी - देह कब तक रुह- विहीन रखी जावेगी ? आखिर कब तक ? कब तक वह मात्र भोग्या बनी रहेगी । कितनी अजीब बात है कि दो कर्तव्य अजनबी शब्द किसी भी खिड़की, दहलीज पर मिले और शुरू तो जाए जिन्दा लाश की खरीदारी । हमारी आपकी माँ , बहिन , बेटी कब तक इन्सानी भूख का निवाला बनेगी? कब तक थे बैइज्जत अभागिने कोठों पर बैठकर इज्जतदार कोठी- वालों की माँ और पुत्रवधु एक साथ बनती रहेगी ? कितने साहिर लुधियानवी होंगे जो इस टीस से तिलमिला कर रो उठेंगे ?

‘औरत ने जन्म दिया मर्दों को ,  
मर्दों ने उसे बाजार दिया ।

जब जी चाहा मसला कुचला ?  
जब जी चाहा दुत्कार दिया ॥  
  
तुलती है कहीं दीनारों में ,  
बिकती है कहीं बाजारों में ,  
नंगी नचवाई जाती है ,  
अव्याशों के दरबारों में।  
ये वो बैइज्जत चीज है जो ,  
बैंट जाती है इज्जतदारों में ॥

अवतार पैगम्बर जनती है ,  
फिर भी शैतान की बेटी है ।  
ये वो बदकिस्मत माँ है ,  
जो बेटों की सेज पे लेटी है ॥

(फिल्म-साथना)

कौन दूसरा साहिर पैदा हुआ है जिसने इस दर्द को भोगा हो ? कहने को हमारे शास्त्रों ने यह भी कहा । कि - ‘यत्र नार्यस्तु पुज्यते , तत्र रमन्ते देवता ,’

परन्तु राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी ने भी ‘नर से भारी नारी’ कहते हुए भी , अन्ततः स्वीकार किया कि ‘अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी आँचल में है दूप और आँखों में पानी ।’

हमारी आँखों के सामने राह चलती सड़कों पर , खचाखच भरी बसों , रेलों में, प्रतिदिन नारी , पुरुष का चलता - फिरता मनोरंजन केन्द्र बनी हुई है । हम नपुंसकों की तरह अपनी मर्दानगी को सफेद कालरों के अन्दर छिपाये , आस्तीनों को ढीला करके , गाँधी जी के तीन बन्दरों की सी मुद्रा में उन्हें लुट्ठा देखते रहते हैं । कभी तो हमारी ही आदम - भूख जाग उठती है उनकी अस्मत लुट्ठते देखकर । उस लुट्ठती थाली में से हम स्वयं भी एक - दो कौर छीनने लग जाते हैं । मर्द जो ठहरे हम । अपनी दस इंची मूँछे ताने हुए अपनी मदानगी का झंडा फहरा रहे हैं ।

हम मर्द है ? मात्र औरत के ऊपर बलात्कार करने वाले मर्द , और देख भी रहे हैं औरतों पर बीच सड़कों , बाजारों में खुले आम बलात्कार , नपुंसकों की तरह । शाबास ! हम और हमारी मर्दानगी ? आज कहीं पर सुरक्षित है औरत ? पुलिसथाना , जेल का सीखचा , घर की चारदीवारी , इबादतगात , नारी - आश्रम , होटल , या क्लब ? कौन सी जगह है वह जहाँ पर महफूज समझे स्वयं को नारी ? हमारा समाज , आधुनिक चाहतें , हिंसात्मक सेक्सी फिल्में , दूरदर्शन , नाइटक्लब , और अधिकांश पत्रिकायें कल करते हैं , पर मर्द एक दूसरे को नंगा

क्या दे रही है ? आजकल हम सभी आदिम सभ्यता को रंगीन आधुनिक लिबास पहनाकर मदमस्त है । श्री इकबाल मजीद ने अपनी कहानी ‘ जंगल कट रहे हैं ’ में ठीक ही कहा है कि-

‘ अभी ब्रूसली के पोस्टरों और डिस्कों की जलती - बुझती रोशनियों और कमसिन बच्चियों की दरीदा अंदामें निहानियों और रेलवे लाइनों की उखड़ी हुई फिशालेटों और खुद सुपुर्दी करने वाले डाकुओं और ऊँचे - ऊँचे स्काई स्क्रेपर्स खड़े करने वाले स्मगलरों के दरम्यान ही कहीं सोने का शहर है जिसका सदर दरवाजा सिर्फ एक है और चोर दरवाजे बहुत । ( सारिका - 1-15 फरवरी -1985 )

भारत पाकिस्तान बैंटवारे के समय उपजी भयानक साम्रादायिकता एवं हिंसा का जो सजीव चित्रण यशपाल जी ने उपन्यास ‘झूठा - सच’ में किया , यह वास्तव में केवल सच ही था और आज भी है ।

‘ सब जोर - जुल्म के लिए औरत ही रह गई है । बेहयाओं , नीचों का सब गुस्सा इसी बात में उतरता है । गाली भी देते हैं तो इसी बात की । बेहया , जहाँ से आते , फिर उसी में फूबते मरते हैं । उसे ही बैइज्जत करते हैं । औरत पर इसी बात का गुस्सा है कि इन्हें जना क्यों ? ’ वो इनकी माँ - बेटियों को बैइज्जत करें , ये उनकी माँ - बेटियों को बैइज्जत करे । माँ - बेटियाँ बरबाद होने के लिए ही हैं । ‘ जनना ! तुम्हें जनने की ही कसूरवार है । सौ हजार बार फिटे मुँह तुम्हारा । लाख लानत है तुम पर । मर्द आपस में लूटते हैं , कल करते हैं , पर मर्द एक दूसरे को नंगा

करके उनके जिस्म की बेइज्जती तो नहीं करते।'

आज विश्व का सबसे बड़ा व्यापार नारी- देह है। अमरीका जैसा बड़बोला देश भी अपने यहाँ 12 वर्ष से कम उम्र की बिनव्याही बच्चियों को माँ बनवाने में न हिचक रहा। कोई भी कानून , कोई भी देश , इस व्यापार को नहीं रोक पा रहा है। और हम हैं कि इस सड़ी- गली व्यवस्था पर मात्र भाषण दे रहे हैं, या एक दूसरे को कोस रहे हैं। प्रतीक्षा कर रहे हैं कि फिर कोई दूसरा कृष्ण आएगा जो राजाओं के आम दरबार में एक नारी के निर्वस्त्र होते शरीर को अपने पीताम्बर से ढकेगा ।

इस नारी दुर्दशा के लिय मात्र पुरुष ही दोषी नहीं है। नारी स्वयं भी उतनी ही दोषी है। वैश्यालयों की संचालिकायें अधिकतर नारियाँ हैं जो अपनी क्रूरता से पथर सी सख्त सतवन्ती का सत तत्काल निकाल देती हैं। महिलाओं का यही सबसे बड़ा महिला - उद्योग भी है। जेवर , कपड़ा , फैशन के पीछे आत्मघाती दीवानी , शारीरिक श्रम से परहेज , अबला सी लाचारगी , भोगविलासी संस्कृति भी कम दोषी नहीं हैं। पुरुष साहित्यकारों को तो अश्लील साहित्य लिखने में अपने पुरुषत्व - अहं की तुष्टि मिलती है। गात्स्यायन का कामसूत्र और पं.कोका का कोकशास्त्र आज घड़ले से खुले आम बिक रहा है। परन्तु 'चोली के पीछे क्या है' , 'सरकाइले खटिया , जाड़ा लगे' आदि कौन गा रहा है? नारी। केवल नाम व पैसे के लिए । कुछ महिला साहित्यकारों ने तो अपने साहित्य में पेटीकोट व अण्डरवियर्स तक उतार कर फेक रखे हैं। किस लिए ? यह 'टॉपलेस '

पहनावा क्या है ? बॉटमलैस भी तो हो सकता है ? क्या केवल पुरुष ही दोषी है इसके लिए? जिन देशों की अलमबरदार स्वयं नारी है , वहाँ पर स्वयं नारी कितनी उत्पीड़ित है , इसके बारे में आए दिन एमनेस्टी इण्टरनेशनल की रिपोर्ट्स ही काफी कुछ कह देती हैं। आज नारी न तो सच बोल सकती है , न सच लिख सकती है। बर्मा की आँग-सान -सूकी , बाँग्ला देश की तस्लीमा नसरीन जीवन्त उदाहरण हैं। भारत की प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भी पुरुष की ही गोली का निशाना बनी। कोई भी धर्म , देश , संस्कृति , ऐसी नहीं हैं, जो नारी को शेष रहने दे। पुरुष द्वारा बलात्कृत नारी ज़िना के आरोप में जमीन में आधी गड़वाकर सार्वजनिक रूप से कोड़ों की सजा भुगत रही है। पुरुष ताली बजा रहा है। औरत अपने बाल नोंच रही है। पुरुष ताल ठोक रहा है और औरत अपनी तकदीर। कोई जगद्गुरु औरत को वेद पढ़ने का अधिकारी नहीं मानता है तो कोई औरत को इबादतगाह में जाकर इबादत करने लायक नहीं। यही है बराबरी , औरत और मर्द की ? आज औरतों को जिन्दा जलाया जा रहा है। कहीं दहेज की भट्टी में , तो कहीं सती की सुवासित वेदी में। अब तक कितने अरब लीटर मिट्टी का तेल केवल औरतों को जिन्दा जलाने में फूँक डाला गया , शायद उतना तो मरे हुए पुरुषों की चिता जलाने में भी नहीं। पुरुषों के तो मृत शरीर को भी चन्दन , धूप , अगर , कपूर आदि से महकती आग में बड़ी श्रद्धा के साथ अर्पित किया जाता है जबकि जवान कमसिन बहुओं को मिट्टी के तेल की दुर्गन्धमयी आग में, धूँए के बीच धकेल दिया जाता है , तड़प - तड़प कर राख बनने के लिए। लगता है हमारा खून पानी बन गया है। हमारी पुंसवता समाप्त हो गयी है। हम स्वयं बढ़ावा दे रहे हैं इन घटनाओं को। अपनी पुत्री की शादी में लिए बिना दहेज वाला वर चाहते हैं। अगर सौभाग्य से मिल गया तो उसके चरित्र की रामायण गढ़ डालेंगे। परन्तु पीठ पीछे उसे मूर्ख कहने में भी संकोच नहीं करते। जब कि अपने काले - कलूटे , चरित्रहीन , अल्पशिक्षित , अल्प रोजगारी कुपुत्र के लिए भी बस चाहिए सुन्दर , सुशील , सुशिक्षित , सर्वगुणसम्पन्न , करोड़पति वधू। शाबास ! समाज के प्रहरियों ! आपका नियम , आपकी मान्यतायें , आपके दोमुखी चेहरे। सीधी - सादी वधू को जिन्दा अग्निमैया की गोद में थकेल कर कह सकते हो , इकबाल मजीद के शब्दों में -

'तुम ज्यादा से ज्यादा अपनी बेबस बीबी को मिट्टी का तेल छिड़क कर , माचिस दिखा सकते हो , यह कहने के लिए कि खाना पकाते में जल गई। और बीबियाँ , बहुँ इसी प्रकार जलती रहेंगी आगे , और आगे भी।'

हमें करना भी क्या है। हम पुरुष जो ठहरे। धर्म भी हमारे साथ है। वह तो सतीप्रथा के नाम पर जिन्दा ही जलवा रहा है। दिवराला की रूपकुँवर का अपराध बस यही था कि वह औरत थी। भारत के कुँवरों के मुख पर चाँटे से जड़ती वह दीपशिखा बन गई। परन्तु आज तक एक भी तथाकथित धर्मप्राण पति अपनी प्राणप्रिया के निधन पर सती नहीं हो सका। मैं पूछता हूँ कि -

'कब तक नारी देह जलेगी, नर के

संग चिता पर ?

कितने अब तक पति जल पाए ,  
पत्नी संग चिता पर ?

नारी के शोषणकर्ताओं, मुझको  
जरा बता दो,

अपने बाप की मृत्यु पर क्यों, फूँक  
रहे माता को ?'

शायद कोई उत्तर न दे पाए । हम  
मर्द जो ठहरे । उत्तर की आवश्यकता ही  
क्या है ? पर कैसे मर्द है हम ? नारी पर  
अत्याचार करना हमारा पेशा है , हमारा  
शगल है। क्या कहा? नहीं .? तो फिर  
टटोलिए अपने दिल को । गाड़ दीजिए  
अपने ही सीने में अपनी ही अंगुलियाँ और  
नोंच कर बाहर निकाल लीजिए अपने  
धड़कते हुए दिल को । फिर पूछिए उसी से  
, हथेली पर रखकर । दोषी कौन है ?  
कहीं हम स्वयं ही अपनी माँ , बहिनों ,  
बेटियों का तो सौदा नहीं कर रहे ? दहेज-  
लोलुप वर की चाहना , चरित्रहीनता की  
सराहना , भ्रष्टाचार की कामना , क्या इस  
सौदेबाजी की दलाली तो नहीं ? कहीं हम  
अपनी अबलाओं को ही स्वयं प्रत्यक्ष /  
अप्रत्यक्ष नहीं यकेल रहे हैं अफसरों ,  
राजनीतिबाजों के शयनकक्षों में? ,  
पैसा!पैसा! ! केवल पैसा कमाने के लिए ?  
अब भी समय है चेत जाइए । उठिए और  
आगे बढ़िए । ये माँ , बहिन , बेटियाँ ,  
आपकी हमारी हैं । इन्हें बचाइए । इस  
सत्कर्म में आपके खून के कुछ कतरे ही  
क्यों न बह जावें । दहेजलोलुप वरों का  
बहिष्कार कीजिए । चिता हो या  
रसोईघर , उसे जिन्दा जलने से रोकिए ।  
उनके पैरों में धुँधरू मत बाँधिये । उन्हें माँ  
गंगा की तरह स्वच्छंद बहने दीजिए । ये  
नारी हैं , प्रकृति की मूल - सर्जक । पुरुष

अगर बीज है तो नारी उर्वरा - भूमि । | कभी किसी भूमि को बंजर बना छोड़ता  
बीज, कभी भूमि को नष्ट नहीं करता । | है, तो कभी नष्ट हो कर देता है । क्या  
उसे जलाता भी नहीं । किसी भी किसान इससे प्रकृति सुरक्षित रहेगी ? चेतिये !  
ने केवल बीज के लिए भूमि नहीं बेची । | जागिये!! कहीं बहुत देर न हो जाए ।  
परन्तु आजकल किसान न केवल अपनी वरना कोई गिरिराज किशोर 'तीसरी  
भूमि' फ्री दे रहा है बल्कि साथ में खाद - सत्ता' के माध्यम से कहना नहीं चूकेगा-  
पानी भी मुफ्त , बीज गाले को । यह अगर मदं .औरत के साथ इसी तरह का  
बीजवाला सम्पूर्ण सम्पत्ति का मालिक बन व्यवहार करता रहा तो एक दिन इतना  
रहा है । यह कौन सी व्यवस्था है ? न तो बड़ा विद्रोह होगा कि मैट्रियारकल  
आर्थिक और न सामाजिक ही। और बीज सोसाइटी फिर लौट आएगी ।  
वाला किसान आए दिन भूमि बदल रहा है

## रहने दो



राजीव डॉगरा  
कांगड़ा हिमाचल प्रदेश



कुछ खाहिशों अधूरी है  
तो रहने दो।  
मोहब्बत की तरफ पाव नहीं जाते  
तो रहने दो।  
अपनापन दिखा कर भी  
कोई अपना नहीं बनता  
तो रहने दो।  
मंदिरों मस्जिदों में घूम कर भी  
हृदय नेक पाक नहीं होता  
तो रहने दो।  
दिलों जान से मोहब्बत करने के बाद भी  
तुमसे किसी को इश्क नहीं होता  
तो रहने दो।  
दिल्ली के बाद भी  
कोई दिलदार नहीं बनता  
तो रहने दो।

# आदिकवि

‘राम लखन सीता मन बसिया’ जो वह गये तुलसीदास वह राम नाप का जाप ही है उठते बैठते सुख-दुख में प्रतिपल प्रति श्वास में व्याप्त है। समकालीन लेखन व वक्तव्य को सत्प्रेरणा वहीं से प्राप्त है। लेकिन जब हम अर्थ को अनर्थ का दृष्टिकोण देने पर उतारू हैं उनका बेड़ा पार राम ही लगायेंगे। आज क्षराम क्षमंदिर का निर्माण विश्व में सार्थक राममयी परिकल्पना की देन है! -----शबरी प्रेम के दोहा मुक्तक व मन के मनके दोहरे में मैने कहने का प्रयास किया है। कि राम की महिमा राम ही जानें ----



डॉ प्रेमलता त्रिपाठी  
संस्कृत साहित्याचार्य  
लखनऊ ३. प्र.

आदिकवि शब्द ‘आदि’ और ‘कवि’ के मेल से बना है। ‘आदि’ का अर्थ होता है ‘प्रथम’ और ‘कवि’ का अर्थ होता है ‘काव्य का रचयिता’। वाल्मीकि ने संस्कृत के प्रथम महाकाव्य की रचना की थी जो रामायण के नाम से प्रसिद्ध है। प्रथम संस्कृत महाकाव्य की रचना करने के कारण वाल्मीकि आदिकवि कहलाये। वाल्मीकि आदिकवि थे।

महाकवि तुलसीदास के मानस में मानस रूपी ज्ञान का कमल खिला जिसमें सीताराम रूपी हंस युगल मकरंद पाने के लिए आतुर मानस में विचरण कर रहे थे। अष्टादश विधाओं की मधुर ध्वनि गूँज रही थी जो नीर-क्षीर-विवेक जनित हेयोपादेय कर्तव्याकर्तव्य आदि की शिक्षा दे रहा था ऐसे ही मानस से मानस काव्य का आविर्भाव हुआ जैसे क्षीरसागर के मन्थन से अमृत।

यह मानस जहाँ राम-सीता सीताराम चरित से लोकोपयोगी चार-वेद, चार उपवेद, षड़ज, पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र इन अठारह विधाओं के सम्पूर्ण ग्रंथ है। इस कलियुग में वेद द्वारा निरुपित जैसे तप, तीर्थ उपवास दान, यज्ञ आदि चराचर जगत का हित ही जिसका प्रयोजन है। ऐसे सुखद चर अचर में समाहित वातावरण की खोज में सुधी समवाय लगे हुए हैं। अपने मानस में रक्खे हुए जिस रामचरित को भगवान शङ्कर ने यथा अवसर भगवती पार्वती से कहा था और कागभुसुण्ड ने महाज्ञानी गरुण से; जिसमें आदि, मध्य और अंत में राम नाम समाहित है, अतः राम इति ब्रह्म को मानते हुए ‘राम नाम कलि अभिमत दाता’ रामायण रामलीला

रामचरित आदि कवियों ने रामयश से आप्लावित गंगा में स्नान किया।

कीरति भनिति भूति भल सोई। सुरसरि सम सब कँह हित होई।

प्रतीक्षाएँ अगर शबरी की तरह हों तो -----

शबरी के जैसी प्रतीक्षा प्रतिबद्धता सुनिश्चत करती है कि राम को आना ही है। प्रबुद्ध वर्ग ही नहीं जनसामान्य के श्वासों में राम रमते हैं तुलसी तो ‘राम बोला’ के नाम से पालने में ही प्रसिद्धी प्राप्त हैं।

----- ‘राम लखन सीता मन बसिया’ जो कह गये तुलसीदास वह राम नाप का जाप ही है उठते बैठते सुख-दुख में प्रतिपल प्रति श्वास में व्याप्त है। समकालीन लेखन व वक्तव्य को सत्प्रेरणा वहीं से प्राप्त है। लेकिन जब हम अर्थ को अनर्थ का दृष्टिकोण देने पर उतारू हैं उनका बेड़ा पार राम ही लगायेंगे। आज क्षराम क्षमंदिर का निर्माण विश्व में सार्थक राममयी परिकल्पना की देन है! -----शबरी प्रेम के दोहा मुक्तक व मन के मनके दोहरे में मैने कहने का प्रयास किया है। कि राम की महिमा राम ही जानें ----

## मुक्तक

प्रेम पगी वा नागरी, करती कैसे देर।  
आयेंगे प्रभु राम जी, मानस कहता टेर

॥

जोगन काया श्वास ये, शबरी देखे  
राह,  
चख-चख रखती जा रही, मीठे-मीठे  
बेर ॥

अनुपम माया राम की, जाने सब  
अनुराग।  
छोड़ जगत की चाकरी, बाट निहरे  
जाग ॥  
बेर अनूठे खा रहे, रघुवर  
निःसंदेह,  
मीठे खट्टे स्वाद में, मधुरस देखा  
त्याग ॥

गंगा की महिमा सरल, वंदनीय सित  
धार ।  
गहर यमुना है तरल, तरणी  
तारनहार ॥

निश्छल कल-कल बह रही, मेट रही  
संताप,  
संत-सुधी तटबंध से, भाव भरे  
अविकार ॥

मन पंछी की चाह है, उड़ जाना उस  
छोर ।  
जहाँ न माया मोह हो, तड़प जगाती  
भोर ॥  
उचित नहीं आवेश में, छले स्वयं को  
जीव ।

बढ़ी निराशा घातकी, देती ल्यथा  
अतीव ॥

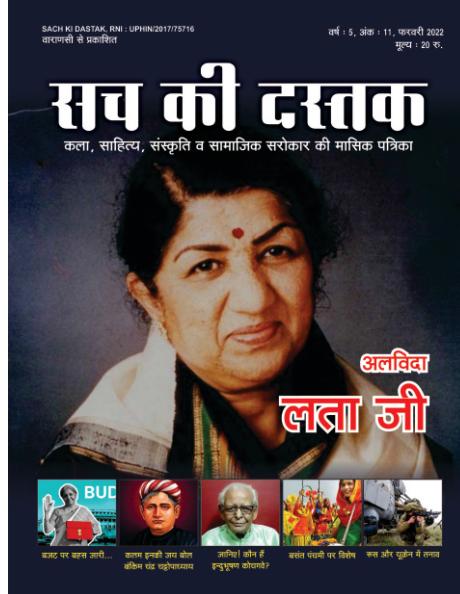
समय कसौटी पर कसे, उसे न करिए  
व्यर्थ ।

उलटी गंगा क्यों बहे, झेलें सभी  
अनर्थ ॥

दूर दृष्टि विश्वास से, रचें राम मय  
गीत ।

धारा के विपरीत मत, खुद चलिए  
मनमीत ॥

■ ■



विज्ञापन शुल्क निम्न प्रकार से है

- कलर पेज फूल पेज ₹ 20000 मात्र
- हाफ पेज ₹ 10000 मात्र
- ब्लैक एंड व्हाइट फूल पेज ₹ 12000 मात्र
- हाफ पेज ₹ 6000 मात्र
- रंगीन पेज पर छोटा विज्ञापन ₹ 2000 मात्र
- ब्लैक एंड व्हाइट पर छोटा विज्ञापन ₹ 1000 मात्र

विज्ञापन के लिए शुल्क निम्न बैंक खाता में जमा करा सकते हैं:

Account Name:	<b>Sach Ki Dastak</b>
A/c. No. :	<b>13751652000024</b>
IFSC Code :	<b>PUNB0137510</b>
Bank:	<b>Punjab National Bank</b>
Gpay-	(1) 9045610000
	(2) 9621503924

# अर्चना झा 'सरित' के दो गीत

गीत-1

प्रथम दिवस का प्रथम नमन है, मात चरण में वंदन।  
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा आगमन, 'सरित' करे अभिनंदन ॥

1

गंगा जी से जल भर के माँ, सोन कलश मैं लाई।  
नव पल्लव के तोरण लेकर, घर के द्वार सजाई।  
भाव पुष्प चरणों में अर्पित, भाल सजाती चंदन।  
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा आगमन, 'सरित' करे अभिनंदन ॥

2

पान सुपारी धजा नारियल, फल मेवा मँगवाई।  
गोटे वाली लाल चुनरिया, माँ को है पहनाई।  
करुणा मधि से करुणा मांगी, औ मांगी आनंदन।  
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा आगमन, 'सरित' करे अभिनंदन ॥

3

कभी नाव तो कभी शेर हो, कभी अश्व की बारी।  
हस्त त्रिशूल चक्र शोभित माँ, लगती कितनी प्यारी।  
आओ आओ अम्बे आओ, जग का रोको क्रंदन।  
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा आगमन, 'सरित' करे अभिनंदन ॥

4

दे आहुति तम की सबने, घर घर ज्योत जलाई।  
ढोल मँजीरा डफली लेकर, भजन गीत भी गाई।  
स्वीकारो सच्चे अर्चन को, सच्चा मेरा बंधन।  
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा आगमन, 'सरित' करे अभिनंदन ॥

गीत - 2

नौ दिन पूजा ध्यान करो, उर भाव भरो।  
मातु भवानी पूजन लें, सुख सार करो।



अर्चना झा 'सरित'  
देहरादून

# सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

पाठकों से निवेदन.

प्रिय पाठक बन्धु,

सच की दस्तक मासिक पत्रिका आप की अपनी पत्रिका है। हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। पत्रिका निरन्तर आप के घर पहुँचती रहे इसलिए निम्न फार्म भरकर शीघ्र भेजने की कृपा करें या हमारे प्रतिनिधि से सम्पर्क करें।

श्री/श्रीमती /कुमारी.....

पता.....

.पिन कोड..... मोबाइल संख्या.....

ईमेल.....

वार्षिक सदस्यता - 300/- रुपए मात्र।

पंचवर्षीय सदस्यता - 1200/- रुपए मात्र।

पाठक अपनी सदस्यता राशि निम्न खाते में जमा कर सकते हैं और जमा करने के बाद मोबाइल पर अवश्य सूचित कर देंगे।

**Sach Ki Dastak**

**ब्रजेश कुमार**

A/c. No. : 13751652000024

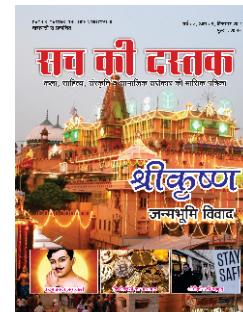
**सम्पादक, सच की दस्तक**

IFSC Code : PUNB0137510

Punjab National Bank

पता : 1215/A सुभाष नगर, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली

पिन कोड - 232101, मोबाइल नम्बर - 9621503924



# 'अनाज...''



लहलहाते हुए खेतों से  
चहचहाते हुए खलिहानों से  
देहरी तक आते आते  
रास्तों के पगड़ंडी पर  
गरदा में कई बार बिखर जाती हूं ।

आते जाते लोगों के पैरों तले  
रौंदती चली जाती हूं...,  
ऐसे बिखर जाती हूं...,  
जैसे कोरे कागज पर  
अर्थ विहीन अलफ़ाज़...!  
मैं जीवन अमृत अनाज ।  
कैसे करूं स्वयं पर नाज ॥

देहरी के बाद...,  
कोठरी में बरांडे पर बनी  
बांस को चीर चीरकर बनी  
ऊपर से गोबर मिट्ठी की  
लेप लगा हुआ...,  
कुआं नुमा बुखारी ( भखारी ) में  
कैद कर दिया जाता है...,

जहां भीतर ही भीतर गूंजती है  
अपनी ही खनक...,  
अपनी ही आवाज़ !  
मैं जीवन अमृत अनाज ।  
कैसे करूं स्वयं पर नाज ॥

बुखारी के नीचे एक पंजा के  
बराबर छेद किया जाता है  
धीरे-धीरे आहिस्ता आहिस्ता  
इन्हीं छेदों से निकाला जाता है  
कच्ची शेर... पक्की शेर...

बाट बठखारा में  
बांट दिया जाता है  
डंडी तराजू पर  
लटका दिया जाता है  
घर आंगन देहरी पर  
इधर-उधर न जाने किधर  
सभी के पैरों तले की धूल  
बुझती है सभी के पेट के आग...!  
मैं जीवन अमृत अनाज ।  
कैसे करूं स्वयं पर नाज ॥

अब तो हवा के झोका सा  
अदृश्य होना चाहती हूं  
अथाह शांत सागर सा  
मौन रहना चाहती हूं  
सुनकर भी अनसुना  
करना चाहती हूं  
देखकर भी अनदेखा  
करना चाहती हूं  
छोटे-छोटे सोने के  
टुकड़े में बन मूर्ति बनकर  
सांसे लेना चाहती हूं ।

और इस मानवीय युग में  
अमानवीय नाटक...  
छल... कपट...  
देखना चाहती हूं आज...!  
मैं जीवन अमृत अनाज ।  
कैसे करूं स्वयं पर नाज ॥



मनोज शाह 'मानस'  
नई दिल्ली



# पीरियड लीव मिलना महिलाओं का हक

पीरियड लीव के सम्बंध में ही यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन की एक रिसर्च कहती है कि इस दौरान किसी महिला को उतना ही दर्द होता है। जितना किसी व्यक्ति को दिल का दौरा पड़ने पर होता है। ये सच है कि पीरियड्स में महिलाओं को तेज दर्द, उल्टी, दस्त और हैवी ब्लीडिंग का सामना करना पड़ता है। कुछ महिलाओं को तो असहनीय पीड़ा से गुजरना होता है। बावजूद इसके वर्किंग महिलाओं के लिए पीरियड्स में छुट्टी लेना पॉसिबल नहीं होता है। वुग्छ महिलाएं बढ़ते कॉम्प्युटिशन के चलते खुद पीरियड्स लीव नहीं लेना चाहती हैं।



सोनम लववंशी  
भोपाल, मध्य प्रदेश



देश में पीरियड्स लीव को लेकर एक बार फिर बहस तेज हो गई है। अभी हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने एक जनहित याचिका की सुनवाई के दौरान इस मुद्दे पर अपनी राय दी है। सुप्रीम कोर्ट ने महिलाओं और छात्राओं को मासिक धर्म में छुट्टी मिलने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई करने से इनकार करते हुए कहा है कि इस तरह के मामले पर आदेश देने से कम्पनियां महिलाओं को काम पर रखने से परहेज करेंगी। ये सच है कि वर्तमान समय में देश को सशक्त बनाने में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। वर्तमान दौर में महिलाएं कुशल व अकुशल श्रमिक के रूप में हर क्षेत्र में अपनी मौजूदगी दर्ज करा रही हैं। ऐसे में पीरियड्स लीव महिलाओं के वर्किंग स्किल को प्रभावित करेगा। इस जनहित याचिका में मातृत्व लाभ अधिनियम 1961 की धारा 14 के अनुपालन के लिए केंद्र व सभी राज्यों को छात्राओं व कामकाजी महिलाओं के लिए उनके कार्यस्थल पर मासिक धर्म के दौरान पेड लीव की मांग की गई थी, पर

सुप्रीम कोर्ट ने पीरियड्स लीव को महिलाओं के लिए अलाभकारी निर्णय बताया है। न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि 'नीतिगत विचारों के संबंध में यह उचित होगा कि याचिकाकर्ता महिला और बाल विकास मंत्रालय से संपर्क करें।'

गौरतलब हो कि इससे पहले भी अरुणाचल प्रदेश के सांसद निमोंग एरिंग द्वारा जनवरी 2018 में लोकसभा में एक बिल 'मेंस्ट्रूअल बेनेफिट' के नाम से पेश किया गया था। ये बिल कामकाजी महिलाओं को मेंस्ट्रूअल लीव यानी पीरियड्स के दौरान छुट्टी दिलाने के पक्ष में था। एरिंग ने बिल पेश करते हुए कहा था कि 'उन्होंने ये बिल इसलिए पेश किया क्योंकि देशभर से कई महिला संगठनों ने भारत में एक अच्छी 'मेंस्ट्रूअल लीव पॉलिसी' की मांग की है।' वहीं अभी हाल ही में केरल सरकार ने जनवरी 2023 में उच्च शिक्षा विभाग के तहत आने वाले सभी राज्य विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाली



छात्राओं को मासिक धर्म (पीरियड्स) की है। भारत में बेशक यह मुद्दा बहस का लीव) की छुट्टी देने का ऐलान किया है। विषय बना हुआ है पर दुनिया में ऐसे कई कोचीन यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (सीयूएसएटी) की तरफ से फीमेल स्टूडेंट्स को छुट्टी देने का फैसला किया गया था और इसी फैसले के स्वागत में सरकार ने विभाग के दायरे में आने वाले सभी राज्य के विश्वविद्यालयों में इसे लागू करने का फैसला किया। वैसे इस मामले में भारत की कुछ कम्पनियां पहले से ही महिलाओं को पीरियड्स लीव दे रही हैं। जिसमें स्विंगी और जोमैटो जैसी कंपनी शामिल हैं। जनवरी 2023 में, इलेक्ट्रिक सामान बनाने वाली दिल्ली की कंपनी ओरिएंट इलेक्ट्रिक ने भी महिला कर्मचारियों के लिए पीरियड लीव की घोषणा की थी।

मार्च 2021 में, दिल्ली सरकार ने भी इसी तरह घोषणा की थी कि वो अपनी सभी महिला कर्मचारियों को मेंस्ट्रूअल लीव देंगी। इस छुट्टी को कामकाजी महिलाएं पीरियड्स साइकल के किसी भी दिन ले सकती हैं और इससे उनकी बाकी छुट्टियों में कटौती नहीं की जाएगी। इसी तरह उत्तर प्रदेश सरकार व महाराष्ट्र सरकार ने भी मेंस्ट्रूअल लीव की घोषणा

देश है जो महिलाओं को पीरियड्स लीव दे रहे हैं। जिनमें युनाइटेड किंगडम, चीन, जापान, ताइवान, इंडोनेशिया, दक्षिण कोरिया, स्पेन और जाम्बिया जैसे देश शामिल हैं। जो महिलाओं को पीरियड्स लीव जैसी सुविधाएं मुहैया कराते हैं। स्वीडन साल 2016 में पेड मेंस्ट्रूअल लीव पॉलिसी पेश करने वाला दुनिया का पहला देश बन गया था। इस पॉलिसी के तहत जो महिलाएं पीरियड्स के दिनों में पेट दर्द संबंधित परेशानियों का अनुभव करती हैं, वे पेड लीव की हकदार हैं। साल 2017 में, इटली मेंस्ट्रूअल लीव देने वाला पहला यूरोपीय देश बना था। यहां महिलाओं को हर महीने तीन दिन की छुट्टी लेने का अधिकार है। इसी तरह 2015 में, ज़ाम्बिया ने महिला कर्मियों के लिए प्रति माह एक दिन की छुट्टी का प्रावधान किया। जबकि साल 2019 में, फिलीपींस ने एक कानून पेश किया, जिसमें एक महीने में दो दिनों तक महिलाओं को छुट्टी लेने की अनुमति दी गई है।

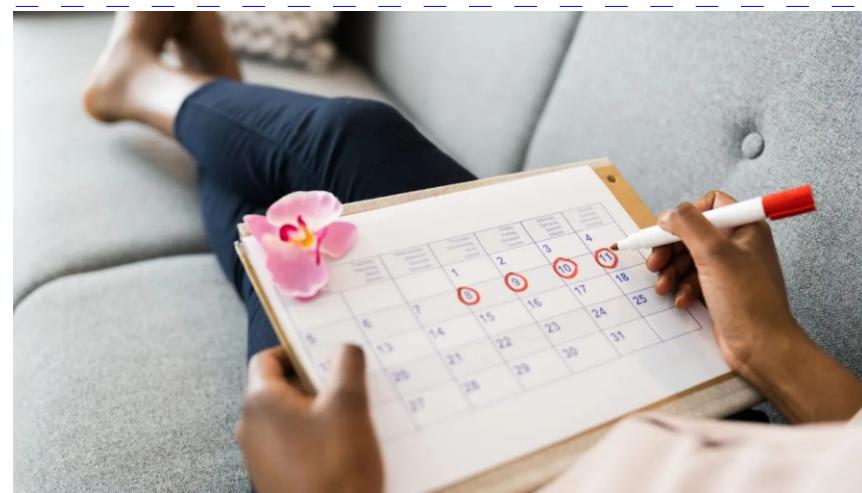
पीरियड्स लीव के सम्बंध में ही

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन की एक रिसर्च कहती है कि इस दौरान किसी महिला को उतना ही दर्द होता है। जितना किसी व्यक्ति को दिल का दौरा पड़ने पर होता है। ये सच है कि पीरियड्स में महिलाओं को तेज दर्द, उल्टी, दस्त और हैवी लीडिंग का सामना करना पड़ता है। कुछ महिलाओं को तो असहनीय पीड़ा से गुजरना होता है। बावजूद इसके वर्किंग महिलाओं के लिए पीरियड्स में छुट्टी लेना पॉसिबल नहीं होता है। कुछ महिलाएं बढ़ते कॉम्प्यूटिशन के चलते खुद पीरियड्स लीव नहीं लेना चाहती हैं। उन्हें लगता है कि वो पीरियड्स लीव लेगी तो साथी कर्मचारी इसका फायदा उठा लेंगी। वैसे देखा जाए तो ये कड़वा सच ही है कि हमारे समाज में शादीशुदा महिलाओं को जॉब ऑफर कम ही मिलता है। बच्चे होने के बाद स्थिति और खराब हो जाती है। ऐसे में अगर मासिक धर्म के दौरान छुट्टी देने की बात होगी तो कम्पनियाँ महिलाओं के पक्ष में मुश्किल ही रहेंगी। कंपनियों को अपने नफा नुकसान की फिक्र होगी। जो कि बढ़ते बाजारवाद में सही भी है। ऐसी स्थिति में महिलाओं को पीरियड्स के दौरान भी काम करने को मजबूर रहेगी।

ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन के जर्नल बीएमजे में प्रकाशित एक अध्ययन में शामिल नीदरलैंड की 32 हजार महिलाओं में से करीब 81 फीसदी महिलाओं ने माना कि पीरियड्स के दौरान होने वाली तकलीफ से उनकी प्रोडक्टिविटी में करीब 23 दिन के काम की कमी आई। इस सर्वे के मुताबिक 14 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि पीरियड्स के दौरान होने वाले दर्द के कारण उन्होंने

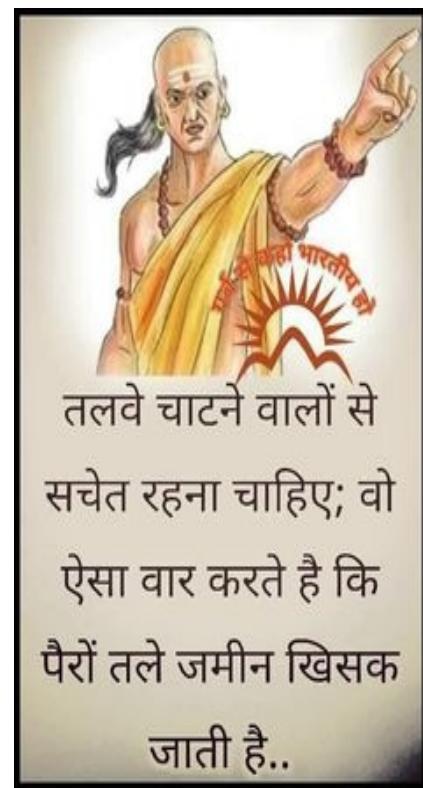
काम या स्कूल से छुट्टी तक ली। जबकि कुछ महिलाओं का कहना था कि दर्द में होने के बावजूद उन्होंने अपना काम जारी रखा, क्योंकि उनको पता है कि उनकी छुट्टी का उनके काम पर असर पड़ेगा। इसी तरह ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न स्थित 'एचआर सॉफ्टवेर यार प्रोगाइडर विक्टोरियन वुमंस ट्रस्ट एंड सर्कल इन' के सर्वे के मुताबिक 70 प्रतिशत महिलाएं अपने मैनेजर से पीरियड्स के बारे में बात करने में सहज महसूस नहीं करतीं। वहीं 83 प्रतिशत ने माना कि इसका उनके काम पर निगेटिव असर पड़ा।

ऐसे में देखें तो भले ही इस आधुनिक होती दुनिया में विकास की रफ़तार को नए आयाम मिले हैं। इंसान ने मीलों का सफ़र चंद पलों में तय करने की तकनीक अर्जित कर ली है। दुनिया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तरफ बढ़ रही है। यहां तक कि इंसान ने चांद और मंगल पर फतह हासिल कर ली है, लेकिन आज भी हमारे भारतीय समाज में रुद्धिवादी परम्परा बरकरार है। ख़ास कर महिलाओं के लिए समाज की सोच का पैमाना आज भी निम्न स्तर का ही है। तभी तो आजादी के 7 दशक बाद भी महिलाओं के मासिक धर्म को लेकर समाज और सरकार का नज़रिया नहीं बदला है। देश में महिलाओं का दर्द पितृसत्तात्मक समाज के लिए कोई मायने नहीं रखता। यह भी अटल सत्य है। महिलाओं से जुड़े मुद्दे आज भी घर की चारदीवारी में कैद होकर रह जाते हैं। फिर बात महिलाओं के पीरियड्स के दर्द की ही क्यों न हो? हम आधुनिक होने का लाख दिखावा कर लें लेकिन आज भी



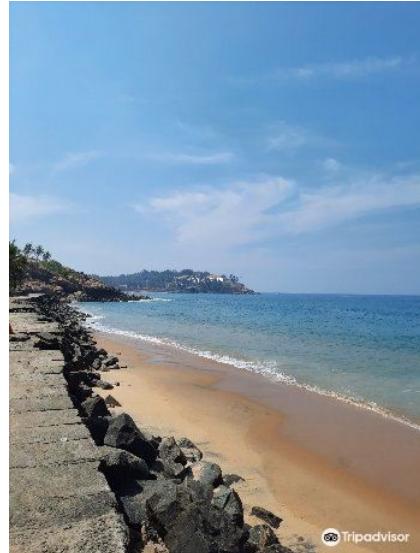
महिलाओं के लिए हमारे समाज में दुनिया भर के नियम-कायदे कायम हैं! ख़ासकर जब बात पीरियड्स की हो तो महिलाओं को मासिक धर्म में न तो घर के अंदर आने दिया जाता है न ही बिस्तर पर सोने दिया जाता है। यहां तक कि उनसे अछूतों की तरह व्यवहार तक किया जाता है। अब ये कहा का न्याय है कि महिलाओं के मासिक धर्म में उनसे भेदभाव किया जाए? जबकि यह एक ऐसा चक्र है जिससे महिलाओं को हर महीने गुज़रना होता है। छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले के मानपुर लड़के के डोमीकला और गड़ेपयली गांव में तो आज भी रुद्धिवादी परम्परा बरकरार है। इन गांवों में महिलाओं को पीरियड यानी महावारी के समय घर से बाहर निकाल दिया जाता है। इस दौरान महिलाओं व लड़कियों को घर से बाहर रहना पड़ता है। इन दिनों में महिलाएं एक छोटे सी झोपड़ी में गांव के बाहर रहती हैं। आश्चर्य की बात है कि आजादी के अमृत काल में भी ये रुद्धिवादी परम्परा जस की तस चल रही है और देश के अलग-अलग हिस्सों में ऐसे गांवों की संख्या अनगिनत हो सकती है। ऐसे में महिलाओं के पीरियड्स एक भारी दर्द से

गुज़रने वाली प्रक्रिया है और इन मामलों में महिलाएं भी अक्सर अपना स्टैंड नहीं ले पाती हैं। कुल-मिलाकर देखा जाए तो अगर देश में पीरियड्स लीव का नियम लागू होता है तो यह महिलाओं के हक़ में निर्णय होगा और इससे किसी को भी कोई गुरेज नहीं होनी चाहिए। ■ ■



# बढ़ता समुद्री जलस्तर, महानगरों पर खतरा

दुनिया भर के बड़े शहरों की गिनती की जाए तो इनमें न्यूयॉर्क, लंदन, दुबई, टोक्यो, बोस्टन, मकाउ, शंघाई, ढाका, सिंगापुर, बैंकॉक और जकार्ता जैसे शहर भी शामिल होंगे। ने शनल ओशनिक एंड एट्मॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार बीसवीं सदी की तुलना में समुद्र का स्तर अब दोगुनी रफ्तार से बढ़ रहा है। बीसवीं सदी में समुद्री जलस्तर में 0.06 इंच की बढ़ोतरी हो रही थी जो इस सदी के वर्ष 2006 से 2015 के बीच 0.14 इंच प्रतिवर्ष दर्ज की गई।



इसी रफ्तार से हिमखंड पिघले तो दुनिया के 36 शहर होंगे पानी में

पृथ्वी की सतह पर औसतन तापमान का बढ़ना ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक तापमान) कहलाता है। यह मुख्य रूप से मानव प्रेरक कारकों के कारण होता है। औद्योगीकरण में ग्रीन हाउस गैसों का अनियंत्रित उत्सर्जन तथा जीवाश्म ईंधन का जलना ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण है। मानव प्रेरक कारण ही आगामी वर्षों में धरती के विनाश की वजह बनने जा रहे हैं। इनकी वजह से हिमखंड पिघल रहे हैं और समुद्र के किनारे स्थित बड़े-बड़े महानगरों के झूबने का खतरा बढ़ गया है।

संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी वर्ल्ड मेट्रोलॉजिकल ऑर्गनाइजेशन( विश्व मौसम विज्ञान संगठन) की रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया भर में समुद्र का स्तर वर्ष 2013 से 2022 के बीच औसतन 4.5 मिलीलीटर प्रतिवर्ष बढ़ा है, यदि समुद्र का

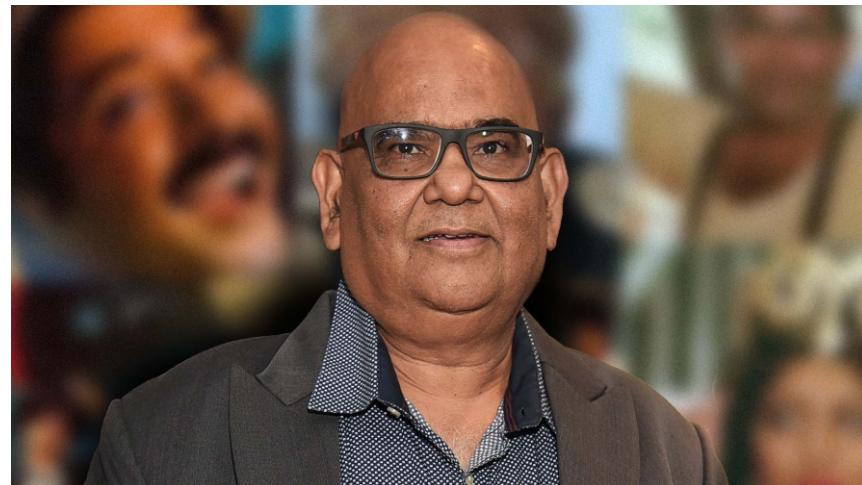
जलस्तर इसी रफ्तार से बढ़ता रहा तो सदी के अंत तक दुनिया भर के 36 महानगर समुद्र में समा जाएंगे। यह खतरा भारत के तीन तीय शहर मुंबई चेन्नई और कोलकाता पर भी आसन्न है। इससे प्रभावित होने वाले दुनिया भर के बड़े शहरों की गिनती की जाए तो इनमें न्यूयॉर्क, लंदन, दुबई, टोक्यो, बोस्टन, मकाउ, शंघाई, ढाका, सिंगापुर, बैंकॉक और जकार्ता जैसे शहर भी शामिल होंगे। नेशनल ओशनिक एंड एट्मॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार बीसवीं सदी की तुलना में समुद्र का स्तर अब दोगुनी रफ्तार से बढ़ रहा है। बीसवीं सदी में समुद्री जलस्तर में 0.06 इंच की बढ़ोतरी हो रही थी जो इस सदी के वर्ष 2006 से 2015 के बीच 0.14 इंच प्रतिवर्ष दर्ज की गई। यूएन-आईपीसीसी के मुताबिक वर्ष 2100 तक समुद्री जलस्तर 2000 की तुलना में 3 फुट तक बढ़ सकता है। यदि यह बढ़ाव न्यूनतम एक फुट तक भी बढ़ा तो विश्व के 25 करोड़ से ज्यादा लोग अपने घरों से वंचित हो जाएंगे और यह अधिकतम 3 फुट तक बढ़ा तो मालदीव और कई कैरेबियाई देश दुनिया के नक्शे से समाप्त हो जाएंगे। ऐसे में विश्व के अग्रणी देशों में जलवायु परिवर्तन पर रोक लगाने के कई प्रयास शुरू तो हुए हैं, लेकिन इनके बीच व्यवसायिक रूप से आगे बढ़ने की होड़ इस दिशा में कठोर कदम उठाने से अभी काफी दूर हैं।



पवन तिवारी  
वरिष्ठ पत्रकार

# बुझ गया बॉलीवुड का रंग बिरंगा सितारा - सतीश कौशिक

फिल्मों में 40 साल बिताने के बाद कौशिक ने वर्ष 2019 की हरियाणवी फिल्म 'छोरियां छोरों से कम नहीं होतीं' के लिए अपना पहला राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता। उन्होंने इस फिल्म में अभिनय किया था और इसके निर्माता भी थे। इस फिल्म ने 67वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में हरियाणवी भाषा में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार जीता।



अपने चार दशक लंबे करियर में थिएटर, सिनेमा, टीवी और ओटीटी मंच पर अभिनेता, निर्देशक और लेखक के रूप में अपनी छाप छोड़ने वाले फिल्मकार सतीश कौशिक का बृहस्पतिवार तड़के दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वह 66 वर्ष के थे।

फिल्म 'जाने भी दो यारो' और 'मिस्टर इंडिया' में यादगार भूमिकाएं निभाने वाले कौशिक ने 'रूप की रानी चोरों का राजा' से निर्देशन की दुनिया में कदम रखा और 'हम आपके दिल में रहते हैं' 'हमारा दिल आपके पास है', 'बधाई हो बधाई', 'तेरे नाम' और 'मुझे कुछ कहना है' जैसी कई फिल्मों का निर्देशन किया।

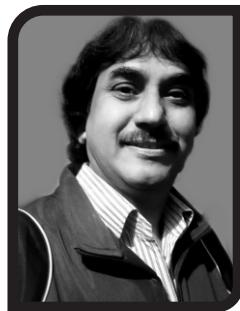
हरियाणा में जन्मे और दिल्ली के करोल बाग में पले-बढ़े कौशिक ने हमेशा अभिनेता बनने का सपना देखा था। 'राम-लखन', 'बड़े मियां छोटे मियां', 'मिस्टर इंडिया', 'दीवाना मस्ताना', 'हसीना मान जाएगी', 'भारत', 'छलांग', 'उड़ता पंजाब' जैसी फिल्मों में निभाए गए

किरदारों के लिए उनकी जमकर सराहना की गई।

फिल्म 'मिस्टर इंडिया' में कौशिक ने 'कैलेंडर' नामक एक रसोइये का किरदार निभाया था जो आज भी लोकप्रिय है। इसके बाद उन्हें ऐसे कई और आकर्षक नाम मिले। कैलेंडर के अलावा 'दीवाना मस्ताना' में पप्पू पेजर, 'स्वर्ग' में एयरपोर्ट, 'अंदाज' में पानीपुरी शर्मा, 'परदेसी बाबू' में हरपाल हैप्पी सिंह, 'बड़े मियां, छोटे मियां' में शराकत अली और 'हम आपके दिल में रहते हैं' में जर्मन के नाम से किरदार निभाया।

कौशिक ने 1983 में आई फिल्म 'जाने भी दो यारो' के संवाद लिखे और पंकज त्रिपाठी अभिनीत 'काग़ज़' (2021) की कहानी भी लिखी।

कौशिक और अभिनेता गोविंदा की जोड़ी भी काफी मशहूर थी। दोनों 90 के दशक में 'स्वर्ग', 'साजन चले ससुराल', 'दीवाना मस्ताना', 'परदेसी बाबू', 'बड़े मियां छोटे मियां', 'आंटी नंबर-1' और



बृजेश श्रीवास्तव मुज्जा  
पं दीनदयाल उपाध्याय नगर चंदौली

'हसीना मान जाएगी' जैसी कई फिल्मों में साथ नजर आए।

कौशिक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) और फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एफटीआईआई) के छात्र रहे थे।

थियेटर की दुनिया में अपना लोहा मनवाने वाले कौशिक ने फिरोज खान के रूपांतरण वाले आर्थर मिलर के नाटक 'डेथ ऑफ ए सेल्समैन' में 'मिस्टर रामलाल' की भूमिका निभाई, जिसके लिए उन्हें बहुत प्रशंसा मिली।

उन्होंने 2016 में सैफ हैदर हसन द्वारा अभिनीत 'मिस्टर एंड मिसेज मुरारीलाल' में अभिनय किया, जिसे खासा सराहा गया।

वर्ष 2021 में 'पीटीआई-भाषा' के साथ साक्षात्कार के दौरान कौशिक ने कहा था, "मैंने 'रूप की रानी चोरों का राजा' से लेकर 'तेरे नाम' तक अलग-अलग तरह की फिल्में बनाई हैं। कुछ कामयाब रहीं और कुछ फलाँप रहीं। मैंने



अपनी पहचान के लिए भी संघर्ष किया क्योंकि एक निर्देशक के तौर पर मैं खुद के बारे में ये साबित करना चाहता था कि मैं केवल हास्य कलाकार नहीं हूं। मैं अपने काम के जरिए दर्शकों से कुछ जरूरी बातें कहना चाहता हूं।"

लाखों लोगों की तरह कौशिक ने भी फिल्मी दुनिया में खुद को साबित करने का सपना देखा था और यह यात्रा नौ अगस्त 1979 को पश्चिम एक्सप्रेस से शुरू हुई थी।

लगभग चार दशक बाद कौशिक ने 10 अगस्त 2020 को ट्रीट किया था, "छ' 10 अगस्त मुंबई में पहली सुबह थी। मुंबई ने मुझे काम, दोस्त, पत्नी, बच्चे, घर, संघर्ष, सफलता, असफलता दी और खुशी से जीने का साहस दिया।"

उन्होंने साक्षात्कारों में याद किया था कि वह अपने जीजा द्वारा दिए गए 800 रुपये के साथ मुंबई के लिए रवाना हुए थे और उन्हें दृढ़ विश्वास था कि वह कामयाब होंगे।

अपने शुरुआती दिनों में कौशिक दिन में एक कपड़ा मिल में काम करते थे और अपनी शाम मुंबई के प्रसिद्ध पृथ्वी थिएटर में बिताते थे।

अभिनय और फिर निर्देशन में अपनी पहचान बनाने से पहले उन्हें 1983 में आयी फिल्म 'मासूम' में शेखर कपूर के साथ सहायक के रूप में काम मिला।

फिल्मों में 40 साल बिताने के बाद कौशिक ने वर्ष 2019 की हरियाणवी फिल्म 'छोरियां छोरों से कम नहीं होतीं' के लिए अपना पहला राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता। उन्होंने इस फिल्म में अभिनय किया था और इसके निर्माता भी थे। इस फिल्म ने 67वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में हरियाणवी भाषा में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार जीता।



## प्रणय और श्रीकांत Swiss Open से बाहर वहीं फुटबाल में जीत दर्ज

कप्तान सुनील छेत्री से जुड़े दो फैसलों के कारण भारत दो गोल नहीं कर पाया। इसमें पहले हाफ में भारत को पेनल्टी नहीं दी गई जबकि एक अवसर पर ऑफसाइड होने के कारण गोल अमान्य करार दिया गया। स्टिमक ने कहा कि उनके लिए स्कोर लाइन 1-0 नहीं बल्कि 3-0 है। भारतीय कोच स्टिमक ने कहा, “मैं अपने खिलाड़ियों से कुछ नहीं कह सकता क्योंकि उन्होंने वैसा ही खेल दिखाया जैसा हम चाहते थे। गोलकीपर अमरिंदर ने बेहतरीन खेल दिखाया और सुनील दुर्भाग्यपूर्ण रहा जो गोल नहीं कर पाया।



आइये! बात करते हैं युवाओं में खासा लोकप्रिय खेल बैडमिंटन की तो यह एक निशासा जनक खबर है कि

विश्व में नौवें नंबर के खिलाड़ी और पांचवें वरीय एचएस प्रणय फ्रांस के गैर वरीयता प्राप्त क्रिस्टो पोपोव से सीधे गेम में हारकर स्विस ओपन सुपर 300 बैडमिंटन टूर्नामेंट से बाहर हो गये। प्रणय मुकाबले में प्रबल दावेदार माने जा रहे थे। पर वह दुनिया के 40वें नंबर के पोपोव के सामने काफी फीके दिखायी दिये और कोई चुनौती नहीं दे सके। वह 8-21 8-21 से हारकर पुरुष एकल स्पर्धा से बाहर हो गये। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों के लिये यह दिन काफी खराब साबित हुआ क्योंकि किदाम्बी श्रीकांत गुरुवार को बाहर होने वाले पहले खिलाड़ी रहे जो हांगकांग के चेयुक यियू ली से हार गये। 20वीं रैंकिंग पर काबिज श्रीकांत और 19वीं रैंकिंग के चेयुक यियू ली के बीच मुकाबला कड़ा रहा। लेकिन हांगकांग के खिलाड़ी ने संयम बरतते हुए एकल प्री

जीत हासिल की। राष्ट्रीय चैम्पियन मिथुन मंजूनाथ भी दूसरे दौर में हारकर बाहर हो गये। उन्हें चीनी ताइपे के चिया हाओ ली ने 21-19 21-10 से शिकस्त दी। बुधवार की रात प्रणय ने पुरुष एकल के पहले दौर में ऑल इंग्लैंड चैंपियनशिप के फाइनलिस्ट चीन के शि यू क्यूई पर जीत से प्री क्वार्टरफाइनल में जगह बनायी थी। वहीं, ओलंपिक में दो बार की पदक विजेता और यहां चौथी वरीयता प्राप्त सिंधू ने महिला एकल के पहले दौर में स्विटज़रलैंड की जेनजीरा स्टैडेलमैन को एकतरफा मुकाबले में 21-9 21-16 से हारकर अपने खिताब की रक्षा के लिए शानदार शुरुआत की। सिंधू का सामना इंडोनेशिया की 20 वर्षीय पुत्री कुसुमा वारदानी से होगा, जो 2022 एशिया टीम चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वाली टीम का हिस्सा थीं। सात्विकसाईराज रंकीरेण्टी और चिराग शेष्टी की दूसरी वरीयता प्राप्त पुरुष जोड़ी का सामना ताईवान के फांग चिह ली और फांग जेन ली से होगा। इसके अलावा बात फुटबाल



मनोज उपाध्याय  
खेल सम्पादक

की करें तो भारत ने त्रिकोणीय अंतरराष्ट्रीय फुटबाल दूनर्मेंट के पहले मैच में स्यामां को 1-0 से हराया लेकिन मुख्य कोच इगोर स्टिमक का मानना है कि मेजबान टीम के दबदबे को देखते हुए उसे बड़े अंतर से जीत दर्ज करनी चाहिए थी। कप्तान सुनील छेत्री से जुड़े दो फैसलों के कारण भारत दो गोल नहीं कर पाया। इसमें पहले हाफ में भारत को पेनल्टी नहीं दी गई जबकि एक अवसर पर ऑफसाइड होने के कारण गोल अमान्य करार दिया गया। स्टिमक ने कहा कि उनके लिए स्कोर लाइन 1-0 नहीं बल्कि 3-0 है। भारतीय कोच स्टिमक ने कहा, “मैं अपने खिलाड़ियों से कुछ नहीं कह सकता क्योंकि उन्होंने वैसा ही खेल दिखाया जैसा हम चाहते थे। गोलकीपर अमरिंदर ने बेहतरीन खेल दिखाया और सुनील दुर्भाग्यपूर्ण रहा जो गोल नहीं कर पाया। वह गोल करने के लिए भूखा था और हैट्रिक बना सकता था।” कई को उम्मीद नहीं थी इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) फाइनल के केवल चार दिन बाद छेत्री पूरे 90 मिनट तक खेलेंगे लेकिन भारतीय कप्तान की प्रतिबद्धता और गोल करने की भूख को देखते हुए स्टिमक ने उन्हें पूरे समय तक मैदान में बनाए रखने का फैसला किया। कोच ने कहा, “सुनील पहला खिलाड़ी था जो आईएसएल फाइनल के बाद शिविर में पहुंचा। उसने राष्ट्रीय टीम से जुड़ने में एक मिनट का समय भी बर्बाद नहीं किया। इससे उसकी भूख और प्रतिबद्धता का पता चलता है। वह टीम के सबसे फिट खिलाड़ियों में से एक है और लगातार तीन दिन तक खेल सकता है।

# काजू कलश मिठाई रेसपी



आइये! बाजार में मिलने वाली काजू कलश मिठाई को घर में बनाने विधि बताते हैं। मौका है नवरात्रि का तो माता के भोग के लिए यह बेस्ट रहेगी।

## महत्वपूर्ण सामग्री

- 1 किलो काजू
  - 1 किलो चीनी
  - 1 ग्राम खाने का रंग(हायड्रो)
- भरावन के लिए**
- 100 ग्राम काजू(कटे हुए)
  - 25 ग्राम पिस्ता
  - 1-2 धागे केसर
  - 10 ग्राम इलायची पाऊँडर
  - चांदी का वर्क
  - पिस्ता(बारिक कटा)
  - केसर पानी में घुला हुआ

## विधि

1. पहले काजू को 3 घंटे के लिए भिगो कर रख दें। इसे आधा करके हायड्रो मिला दें।
2. इसके बाद काजू को पानी से अच्छे से धोएं।
3. काजू को मिक्सी में बारीक पीस

4. इसमें अब चीनी मिलाकर 10-15 मिनट के लिए अलग रख दें।

5. एक भारी तले वाली कड़ाही लेकर उसमें यह मिश्रण डाल कर तब तक पकाएं जब तक यह कड़ाही से चिपकना न छोड़ दे।

6. इसे कड़ाही में ही ठंडा होने दें और इसके छोटे-छोटे गोले कलश आकार में बनाएं।

7. एक अलग बर्टन लें और उसमें भरावन का सारा सामान मिक्स कर दें।

8. अब पहले से बना कर रखे काजू के गोले में यह सामग्री भर दें। इस पर चांदी का वर्क लगा दें।

9. एक बोतल का ढक्कन लें कलश का ढक्कन आकार दें इसमें कटे पिस्ते और केसर लेकर इसे सजाएं। कुछ लोग एक किलो काजू की जगह एक किलो खोया मावा लेते हैं और भरावन के लिए सिर्फ़ शहद और इसी तरह कलश का आकार देकर उस मिठाई को अमृत कलश नाम देते हैं वह भी बहुत स्वादिष्ट होती है।

# इमरान खान की मुश्किलें बढ़ीं

साल 2020-21 के लिए उन्होंने अपनी संपत्तियों के बारे में भी गलत जानकारी दी थी। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, तोशाखाना मामला सामने आने के बाद इमरान खान ने इसपर बयान भी दिया था। उन्होंने कहा था कि ये गिफ्ट्स उन्हें निजी तौर पर मिले हैं। इसलिए उन्हें इसे अपने पास रखने का अधिकार है। हालांकि, बाद में उन्होंने तोशाखाने मामले के सारे आरोपों को बेबुनियाद बताया था। इसी मुद्दे के मद्देनजर इमरान खान को चुनाव अधिनियम की धाराओं के साथ, संविधान के अनुच्छेद 63 (1) (पी) के तहत अयोग्य घोषित कर दिया गया था।



इन दिनों पाकिस्तान में भुखमरी और इमरान खान की बदहजमी जबर्दस्त जारी है। इमरान खान अपने ही मुल्क में मुश्किलों से घिरे नजर आ रहे हैं। बता दें कि तोशाखाना मामले में पेशी के लिए इमरान खान के लाहौर से रवाना होते ही पुलिस उनके घर का गेट तोड़कर अंदर घुस गई थी। वहाँ, इस्लामाबाद की तरफ बढ़ रहे इमरान के काफिले की 3 गाड़ियां आपस में टकरा गई जिसमें कुछ लोग जख्मी हो गए थे। दूसरी तरफ इमरान खान के लाहौर वाले घर पर वर्तमान सरकार ने बुलडोजर चलाने की दहशत दिखा दी। वहाँ, इस्लामाबाद में एंट्री से पहले इमरान के काफिले को एक टोल प्लाजा पर रोक दिया गया। इमरान खान ने वर्तमान शहबाज शरीफ सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा, 'मुझे गिरफ्तार करने की साजिश रची जा रही है। पुलिस ने लाहौर में मेरे घर पर हमला कर दिया है। मेरी बीवी बुशरा बेगम घर में अकेली हैं। आखिर पुलिस किस कानून के तहत कार्रवाई कर रही है।' चलिए

बताते हैं कि आखिर! तोशाखाना कहते किसे हैं तो दरअसल, पाकिस्तान के कानून के अनुसार किसी विदेशी राज्य के गणमान्य व्यक्तियों से प्राप्त कोई भी उपहार स्टेट डिपॉजिटरी यानी तोशाखाना में रखना होता है। अगर राज्य का मुखिया उपहार को अपने पास रखना चाहता है तो उसके लिए उसे इसके मूल्य के बराबर राशि का भुगतान करना होगा। यह एक नीलामी की प्रक्रिया के जरिए तय किया जाता है। बात पाकिस्तान की चल रही है तो सरकारी तोहफों /उपहारों को लेकर सरकारी नियम और परंपरा ऐसी रही है कि भ्रष्टाचार होना तय ही है। पाकिस्तान में लगभग हर नेता और अधिकारी हर तोहफा खुद रखता है। इसके उलट भारत में नेताओं और अधिकारियों का कोई तोहफा खुद के लिए रखना बहुत ही दुर्लभ है। ज्यादातर लोग अपने तोहफे ट्रेजरी में ही जमा करवाते हैं, चाहे वो सस्ते हों या महंगे। भारत में तो 2019 से एक नई परंपरा शुरू की गई है।



प्रधानमंत्री को मिलने वाले सभी तोहफों की अब ऑनलाइन नीलामी की जाती है। आखिरी नीलामी 2022 में 17 सितंबर से 12 अक्टूबर के बीच की गई थी। इस नीलामी से जमा होने वाली राशि को राहत कोष में लोगों की मदद के लिए रखा जाता है। जबकि, पाकिस्तान में आलम ये है कि 2006 में परवेज मुशर्रफ, उनके प्रधानमंत्री शौकत अजीज और बलूचिस्तान के तत्कालीन प्श जाम मोहम्मद युसूफ तीनों ने तोहफे में मिली टोयोटा की कारें डिक्लेयर तो कीं, लेकिन न तो इन्हें तोशाखाने में जमा कराया और ना ही इनके एवज में कोई कीमत चुकाई। 2018 में सत्ता में आए इमरान खान को आधिकारिक यात्राओं के दौरान करीब 14 करोड़ रुपये के 58 उपहार मिले थे। इन महंगे उपहारों को तोशाखाना में जमा किया गया था। बाद में इमरान खान ने इन्हें तोशाखाने से सस्ते दाम पर खरीद लिया और फिर महंगे दाम पर बाजार में बेच दिया। इस पूरी प्रक्रिया के लिए उन्होंने सरकारी कानून में बदलाव भी किए। जिसे हेराफेरी कह सकते हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इमरान ने 2.15 करोड़ रुपये में इन गिफ्ट्स को तोशाखाने से खरीदा था और इन्हें बेचकर 5.8 करोड़ रुपये का मुनाफा कमा लिया। इन गिफ्ट्स में एक ग्राफ घड़ी, कफ़लिंक का एक जोड़ा, एक महंगा पेन, एक अंगूठी और चार रोलेक्स घड़ियां भी थीं। पाकिस्तानी मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, अगस्त में इमरान खान को सत्ता से हटाए जाने के कुछ महीनों बाद, सत्तारूढ़ गठबंधन के कुछ सांसदों ने नेशनल असेंबली के अध्यक्ष राजा परवेज अशरफ ने सामने एक आरोप पत्र दायर किया था।

इमरान खान पर आरोप लगाए गए थे कि जो गिफ्ट उन्हें मिले, उसका विवरण तोशाखाना को नहीं सौंपा गया था। उन्हें बेचकर पैसे कमाए गए हैं। पाकिस्तान के स्पीकर ने इस मामले में जांच करवाई। आठ सितंबर को इमरान खान को नोटिस मिला था। उन्होंने इस नोटिस का जवाब दिया था और कहा था कि प्रधानमंत्री रहते हुए मिले चार उपहारों को उन्होंने बेच दिया था। इन उपहारों में ग्रेफ, रोलेक्स घड़ी, कफ़लिंक की एक जोड़ी, एक महंगी कलम, कई धातुओं की चीजें और एक अंगूठी शामिल थी। आरोप साबित होने पर पिछले साल इमरान खान की संसद सदस्यता भी चली गई थी। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इमरान खान ने जानबूझकर चुनाव अधिनियम, 2017 के प्रावधानों का उल्लंघन किया था और गलत बयान दिया था। साल 2020-21 के लिए उन्होंने अपनी संपत्तियों के बारे में भी गलत जानकारी दी थी। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, तोशाखाना मामला सामने आने के बाद इमरान खान ने इसपर बयान भी दिया था। उन्होंने कहा था कि ये गिफ्ट्स उन्हें निजी तौर पर मिले हैं। इसलिए उन्हें इसे अपने पास रखने का अधिकार है। हालांकि, बाद में उन्होंने तोशाखाने मामले के सारे आरोपों को बेबुनियाद बताया था। इसी मुद्दे के मद्देनजर इमरान खान को चुनाव अधिनियम की धाराओं के साथ, संविधान के अनुच्छेद 63 (1) (पी) के तहत अयोग्य घोषित कर दिया गया था। पाकिस्तानी संविधान के अनुच्छेद 63 (1) (पी) में कहा गया है कि एक व्यक्ति कुछ समय के लिए, किसी भी कानून के तहत

मजलिस-ए-शूरा या प्रांतीय विधानसभा के सदस्य के रूप में चुने जाने या चुने जाने के लिए अयोग्य ठहराया जा सकता है। व संघीय जांच एजेंसी (एफआईए) ने पिछले साल अक्टूबर में बैंकिंग अदालत में इमरान खान और उनकी पार्टी के अन्य सदस्यों के खिलाफ कथित रूप से प्रतिबंधित धन प्राप्त करने के लिए मामला दायर किया था। पीटीआई के पूर्व संस्थापक सदस्य अकबर एस बाबर ने 2014 में पाकिस्तान के चुनाव आयोग में प्रतिबंधित फंडिंग का मामला दायर किया था। एफआईए ने पीटीआई प्रमुख को जमानत देने के बैंकिंग अदालत के फैसले के खिलाफ 28 फरवरी को आईएचसी में एक आवेदन दायर किया और अदालत से फैसले को रद्द करने की अपील की थी। 2022 में, पाकिस्तान के चुनाव आयोग ने कहा कि इमरान खान के खिलाफ विदेशी पाकिस्तानियों से प्रतिबंधित धन लेने के आरोप साबित हुए हैं।

इसने पीटीआई को एक नया कारण बताओ नोटिस जारी कर पूछा कि इन फंडों को जब्त क्यों नहीं किया जाना चाहिए। रिपोर्ट में कहा गया है कि सुनवाई के दौरान, एफआईए के विशेष अभियोजक रिजिसन अब्बासी ने तर्क दिया कि मामले में एजेंसी द्वारा इमरान खान से अभी तक पूछताछ नहीं की गई है, और अदालत से उनकी जमानत रद्द करने का आग्रह किया। आईएचसी के मुख्य न्यायाधीश मोहसिन अख्तर क्यानी ने पूछा कि क्या प्राथमिकी में मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप आरिफ नकवी और इमरान खान के खिलाफ थे या अगर पीटीआई को धन प्राप्त हुआ था। रिपोर्ट



के अनुसार, एफआईए के वकील ने तर्क दिया कि इमरान खान ने हाल ही में एक साक्षात्कार में स्वीकार किया कि उन्होंने दान उद्देश्यों के लिए धन प्राप्त किया लेकिन राजनीतिक गतिविधियों के लिए उनका इस्तेमाल किया। इसमें कहा गया है कि न्यायमूर्ति क्यानी ने पूछा कि क्या धन का इस्तेमाल किसी राजनीतिक दल द्वारा किया गया और फिर वे व्यक्तिगत संपत्ति कैसे बन गए। जस्टिस क्यानी ने एफआईए के वकील से स्टेट बैंक ऑफ पाकिस्तान का वह पत्र जमा करने को कहा, जो जांच एजेंसी को जांच के दौरान मिला था। साथ ही जज ने कहा कि जांच में बैंक के कर्मचारी को शामिल नहीं किया। बैंक खाते का नाम बदलना कोई अपराध नहीं है। इसके बाद पीठ ने हमरान की जमानत रद्द करने की याचिका खारिज कर दी। पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश ने चेतावनी दी पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश उमर अंता बंदियाल ने बुधवार को चेतावनी दी कि अगर कोई संकेत मिलता है कि चुनाव 'पारदर्शी' तरीके से नहीं हो रहे हैं तो सुप्रीम कोर्ट हस्तक्षेप करेगा। बंदियाल ने यह टिप्पणी तीन सदस्यीय पीठ के लाहौर

पुलिस प्रमुख गुलाम महमूद डोगर के तबादले के खिलाफ याचिका पर सुनवाई शुरू करने के बाद की। अब चारों ओर से भयग्रस्त इमरान खान की मुश्किलें बढ़ती जा रही देख उन्होंने अपनी हत्या की आशंका जताई है। इमरान खान ने एक वीडियो जारी कर कहा है कि पुलिस ने उनकी हत्या की प्लानिंग की है। इमरान खान की ओर से दावा किया जा रहा है कि पुलिस उन्हें अगले एक या दो दिन में बेनजीर भट्टो के भाई मुर्तजा भट्टो की तरह मारना चाहती है। इमरान खान इस समय लाहौर स्थित अपने जमान पार्क आवास में हैं। बड़ी संख्या में उनके समर्थक भी जुटे हुए हैं। इसके अलावा उनके घर के सामने पुलिस भी तैनात है। इमरान ने वीडियो में कहा, 'मैं खास तौर पर पंजाब पुलिस को बता रहा हूं, आईजी पंजाब, आईजी इस्लामाबाद और इनके हैंडलर्स का जमान पार्क के बाहर आज या कल ऑपरेशन का प्लान है। दोनों आईजी ने दो स्कॉड बनाए हैं। ये स्कॉड उनकी ओर से आकर हमारे लोगों में शामिल हो जाएंगे और पुलिस पर फायरिंग करेंगे। इसमें यह पूरी कोशिश करेंगे कि 4-5 पुलिसवाले मारे जाएं।

इसके बाद पुलिस हमला करेगी।' इमरान ने यह भी कहा कि पुलिस आम लोगों को भी कत्ल करेगी। इमरान ने आगे कहा कि पुलिस एक्शन करते हुए पहले लोगों को मारेगी और फिर ये मेरे घर तक आ जाएंगे। यहां आने के बाद पुलिस वाले मुझे मुर्तजा भट्टो के स्टाइल में कत्ल करेंगे। पुलिस ने ये प्लान बनाया हुआ है, जिसे ये या तो आज करेंगे या फिर कल करेंगे। अब समय ही बतायेगा कि इमरान खान अपनी जान का हवाला देकर पाकिस्तान की जनता की दया पाते हैं या दुआ या अपने सरकारी उपहारों के पैसे में की गयी हेराफेरी की सजा पाते हैं। भारत को इससे कोई सरोकार नहीं क्यों पाकिस्तान ने भारत को गहरे जख्म दिये हैं जिनकी माफी नहीं हो सकती ॥

**"निंदा"**  
से घबराकर अपने  
**"लक्ष्य"**  
को ना छोड़े क्योंकि..  
**"लक्ष्य"**  
मिलते ही निंदा करने वालों की  
**"राय"**  
बदल जाती है।

# Apple वॉच बैंड भविष्य में आपके पहनावे के आधार पर बदलेगा रंग

यह दावा किया जाता है कि स्ट्रैप का रंग ठोस और पैटर्न वाला दोनों हैं। इसके अलावा, यह दावा किया जाता है कि बैंड के रंग को बिना उतारे बदला जा सकता है। इसके अलावा, उपयोगकर्ता रंग बदलने में सक्षम होंगे। इस मजेदार तथ्य के बावजूद कि Apple ने अभी तक इस सुविधा पर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है, उपयोगकर्ता केवल यह बता पाएंगे कि स्ट्रैप के रंग से उनके फोन पर कौन से अलर्ट आ रहे हैं।



अगर आप भी एप्ल वॉच लवर हैं तो आपके लिए एक अच्छी खबर है। नई ऐप्ल वॉच आपकी पोशाक से मेल खाने के लिए अपने रंग को समायोजित करेगी। यह बताया गया है कि ज्ञत वॉच वॉच रंग बदलने वाली तकनीकों का समर्थन करेगी। रंगीन ज्ञत वॉच के लिए एक पेटेंट है। ऐप्ल, ऐप्ल वॉच बैंड को उपयोगकर्ता के संगठन से मेल खाने के लिए रंग बदलने और उन्हें जानकारी के लिए सतर्क करने के तरीकों पर विचार कर रहा है। हाल ही में प्राप्त एक पेटेंट, 'ज्ञतघेगी' के अनुसार, ऐसा लगता है कि यह ऐसा ही कर रहा है। 'एडजस्टेबल कलर के साथ वॉच बैंड' लोगों को सलाह देता है कि वे अलग-अलग आउटफिट्स के साथ जाने के बजाय सिर्फ एक कलर-चैंजिंग वॉच बैंड खरीदें। नव-प्रदत्त पेटेंट में कहा गया है कि उपयोगकर्ता विविधता और शैली को व्यक्त करने के लिए अपने वॉच बैंड को अनुकूलित करने में सक्षम होना चाहते हैं। 'उदाहरण के लिए, उपयोगकर्ता परिधान, अन्य पहनने योग्य वस्तुओं, पर्यावरण, या अन्य वरीयता के उपयोगकर्ता की पसंद के आधार पर एक विशेष रंग के घड़ी बैंड की इच्छा कर सकता है,' यह जारी रहा। ऐप्ल वॉच ऐप के साथ, आप अपने आउटफिट से मेल खाने के लिए ऐप्ल वॉच के रंग को एडजस्ट कर सकते हैं। इसके अलावा, फोन कलर चेंज नोटिफिकेशन को सपोर्ट करेगा। पेटेंट में कहा गया है कि कंपनी इस खास एप्ल वॉच के बैंड के लिए इलेक्ट्रोक्रोमिक मटेरियल का इस्तेमाल करेगी। खबर के मुताबिक, ऐप्ल वॉच सॉफ्टवेयर आपको अपने संगठन से मेल खाने के लिए अगली ऐप्ल वॉच का रंग बदलने की अनुमति देगा। फोन कलर चेंज नोटिफिकेशन को भी सपोर्ट करेगा। पेटेंट के मुताबिक कंपनी इस खास एप्ल वॉच के बैंड के लिए इलेक्ट्रोक्रोमिक मटेरियल का इस्तेमाल करेगी। पेटेंट के संबंध में जानकारी प्रदान करने वाला पहला ऐप्ल था। इस कार्यक्षमता के जारी होने के बाद आप अपनी ज्ञत वॉच का रंग बदल सकेंगे। नई घड़ी तीन अलग-अलग स्ट्रैप डिजाइनों के साथ आएगी, जिनमें से प्रत्येक का एक अनूठा रंग है। यह दावा किया जाता है कि स्ट्रैप का रंग ठोस और पैटर्न वाला दोनों हैं। इसके अलावा, यह दावा किया जाता है कि बैंड के रंग को बिना उतारे बदला जा सकता है। इसके अलावा, उपयोगकर्ता रंग बदलने में सक्षम होंगे। इस मजेदार तथ्य के बावजूद कि ज्ञत ने अभी तक इस सुविधा पर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है, उपयोगकर्ता केवल यह बता पाएंगे कि स्ट्रैप के रंग से उनके फोन पर कौन से अलर्ट आ रहे हैं। ऐसी भी खबर है कि 'ज्ञत वॉच ब्लड शुगर मॉनिटरिंग क्षमता' को सपोर्ट करेगी। तथ्य यह है कि आपको अपने रक्त शर्करा की निगरानी के लिए सुई की आवश्यकता नहीं होगी, यह सबसे महत्वपूर्ण जनसरोकार वाली टेक्नोलॉजी है। जो सबका ध्यान खींचेगी। वैसे भी ऐप्ल ब्रांड दुनियाभर के युवाओं की पहली पसंद है क्योंकि यह सिक्योरिटी के मामले में नम्बर वन है।



# ऑस्कर में बजा भारतीय प्रतिभा का डंका

कार्तिकी गोंजाल्वे ज निर्देशित इस शॉर्ट फिल्म का वर्ल्ड प्रीमियर 9 नवंबर 2022 को न्यूयॉर्क शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल में हुआ था। डॉक एनगायसी के उपनाम से लोकप्रिय यह शॉर्ट फिल्म समारोह अमेरिका में बेहद प्रतिष्ठित माना जाता है। समारोह में अपने सफल प्रीमियर के बाद इस फिल्म को 8 दिसंबर 2022 को नेटफिल्क्स पर रिलीज किया गया था, जिससे दुनिया भर के दर्शकों को प्यारे हाथी और उनकी देखभाल करने वाले जोड़े की मार्मिक कहानी देखने को मिली।



एसएस राजामौली की फिल्म 'आरआरआर' के सॉन्ग 'नाटू-नाटू' ने ऑस्कर 2023 में इतिहास रच दिया है और अवॉर्ड अपने नाम कर लिया। इस खुशी में पूरे देश जश्न में झूब गया। इस गाने को ऑस्कर अवॉर्ड 2023 के बेस्ट सॉन्ग कैटेगरी में शॉर्टलिस्ट किया गया था और इस लिस्ट में शामिल 15 गानों को हराकर 'नाटू-नाटू' ने ऑस्कर अपने नाम कर लिया।

'नाटू-नाटू' के ऑस्कर जीतने पर फिल्म की पूरी टीम खुशी से झूमी उठी। पूरी टीम फूली नहीं समा रही है। जूनियर एनटीआर, रामचरण और राजामौली ने 'नाटू-नाटू' के लिए अवॉर्ड की अनाउंसमेंट होते ही एक दूसरे को गले लगा लिया। इन सब के चेहरे पर इस अवॉर्ड की जीतने की खुशी देखते ही बन रही थी। डपाठकों आप को बता दें कि ऑस्कर के लिए शॉर्टलिस्ट होने वाला यह गाना भारत का पहला गाना है।

पिछले साल जब फिल्म

आरआरआर अमेरिका में रिलीज हुई थी तो 'आरआरआर' सॉन्ग 'नाटू-नाटू' ग्लोबल सेंसेशन बन गया था।

'नाटू-नाटू' सॉन्ग को चंद्रबोस ने लिखा है और एमएम कीरावणी ने कम्पोज किया है। फिल्म में यह गाना जूनियर एनटीआर और रामचरण पर फिल्माया गया है। यह गाना हिंदी में 'नाचो नाचो', तमिल में 'नद्दू कूथु' और कन्नड़ में 'हल्ली नातु' के रूप में रिलीज किया गया था।

इस गाने ने 80वें गोल्डन ग्लोब अवार्ड्स में बेस्ट ओरिजनल सॉन्ग कैटेगरी में भी अवॉर्ड जीता था। इससे पहले 'नाटू-नाटू' ने बेस्ट सॉन्ग के लिए क्रिटिक्स च्वाइस अवार्ड भी जीता था।

फिल्म 'आरआरआर' की बात करें तो यह फिल्म दो क्रांतिकारियों की काल्पनिक कहानी पर आधारित है। यह फिल्म एक हिस्टोरिकल फैंटेसी फिल्म है। फिल्म 'आरआरआर' दो क्रांतिकारियों की काल्पनिक कहानी बताती है जो भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ते हैं।





इस फिल्म में सुपरस्टार रामचरण और जूनियर एनटीआर ने मुख्य भूमिका की हैं।

राजामौली ने कहा था कि उन्होंने नाटू नाटू गाने को एक 'एक्शन सीकरेंस' के रूप में देखा था। जिसमें दो स्वतंत्रता सेनानी एक ब्रिटिश अधिकारी को डांस के जरिये अपने घुटनों पर लाते हैं।

फिल्म आरआरआर के साथ ही तमिल डॉक्यूमेंट्री 'द एलिफेंट हिस्परर्स' (ऊप तिर्जू 'पेजी') ने 95वें अकादमी पुरस्कारों ('एस्कॉर्ट') में डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट सब्जेक्ट कैटेगरी में ऑस्कर (ई 2023) जीतने वाली पहली भारतीय शॉर्ट फिल्म बनकर इतिहास रच दिया है। नवोदित कार्तिकी गोंजाल्वेज (र्णुब उद्दीप्ते) द्वारा निर्देशित नेटपिलक्स की इस डॉक्यूमेंट्री ने 'हॉलआउट', 'हाउ इू यू मेजरमेंट ए ईयर?', 'द मार्था मिशेल इफेक्ट' और 'स्ट्रेजर एट द गेट' को पीछे छोड़ते हुए ऑस्कर पुरस्कार को अपने नाम किया। ऑस्कर पुरस्कार लेते समय गोंजाल्वेज ने कहा, 'मैं आज यहां हमारे और हमारी

प्राकृतिक दुनिया के पवित्र बंधन, स्वदेशी जनजातीय समुदायों के सम्मान और अन्य जीवित प्राणियों के प्रति सहानुभूति और अंत में उनके साथ सह-अस्तित्व पर बोलने के लिए खड़ी हूं।'

39 मिनट की शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'द एलिफेंट हिस्परर्स' दो अनाथ हाथी के बच्चों रघु और अमू और उनकी देखभाल करने वाले बोम्मन और बेली के बीच अदूत बंधन को दर्शाती है। यह शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री फिल्म तमिलनाडु में मुदुमलाई नेशनल पार्क के शानदार प्राकृतिक नजारों को भी सामने लाती है। यह दिखाती है कि किस तरह जनजातीय समुदाय के लोग प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व में रहते हैं। फिल्म न केवल जानवरों और इंसानों के अदूत बंधन और उनके सह-अस्तित्व में रहने की क्षमता को सम्मोहक तरीके से पेश करती है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और भारत में पर्यावरण संरक्षण की लंबी परंपरा को भी सामने लाती है।

कार्तिकी गोंजाल्वेज निर्देशित इस

शॉर्ट फिल्म का वर्ल्ड प्रीमियर 9 नवंबर 2022 को न्यूयॉर्क शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल में हुआ था। डॉक एनवायसी के उपनाम से लोकप्रिय यह शॉर्ट फिल्म समारोह अमेरिका में बेहद प्रतिष्ठित माना जाता है। समारोह में अपने सफल प्रीमियर के बाद इस फिल्म को 8 दिसंबर 2022 को नेटपिलक्स पर रिलीज किया गया था, जिससे दुनिया भर के दर्शकों को प्यारे हाथी और उनकी देखभाल करने वाले जोड़े की मार्मिक कहानी देखने को मिली। भारत में करुणा और समझ की आवश्यकता को पुरजोर तरीके से पेश करती मर्मस्पर्शी कहानी अपनी भव्य फोटोग्राफी और शक्तिशाली संदेश के लिए दर्शकों और समीक्षकों द्वारा समान रूप से सराही गई। 'द एलिफेंट हिस्परर्स' में बोम्मन और बेली रघु और अमू नाम के दो अनाथ हाथी के बच्चों की देखभाल करते हैं। मानव किशोरों की तरह हाथी के ये दोनों बच्चे भी हठ के दौर से गुजरते हैं और सही बात सुनने से इंकार कर देते हैं क्योंकि वे यौवन के करीब आ रहे होते हैं। इंसानी बच्चों की ही तरह अगर इन्हें ऐसा करने की अनुमति दी जाती है, तो यह लंबे समय के लिहाज से ठीक नहीं होता। एक हाथी के बच्चे को भी प्यार और करुणा की आवश्यकता होती है। फिर भी एक जंगली झुंड में वयस्क हाथी किशोर हाथी को फटकारते हैं। कुछ समय बाद बोम्मन और बेली को रघु वन विभाग ले जाता है और उनके सुपुर्द कर देता है। इस जुदाई में बोम्मन और बेली रघु को बहुत याद करते हैं जिनके साथ दुख जाहिर करता है। ■ ■

कार्यालय नगर पालिका परिषद्, पं० दीनदयाल उपाध्याय नगर, जनपद - चन्दौली।



# SWACHH SURVEKSHAN 2023

वार्षिक सर्वेक्षण नए और बड़े विजन के साथ वापस आ गया है

मेरा शहर

मेरी पहचान



सौजन्य -- नगर पालिका परिषद पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर जनपद चंदौली

निखिल टी. फुंडे  
जिलाधिकारी  
जनपद चंदौली

उमेश कुमार मिश्रा  
अपर जिलाधिकारी  
जनपद चंदौली

कृष्ण चन्द्र  
अधिशासी अधिकारी  
नगर पालिका परिषद  
पं० दीनदयाल उपाध्याय नगर  
चन्दौली

सुनील प्रसाद  
सफाई एवं खाद्य निरीक्षक  
नगर पालिका परिषद  
पं० दीनदयाल उपाध्याय नगर  
चन्दौली

RNI: UPHIN/2017/75716

## SACH KI DASTAK

(A MONTHLY HINDI JOURNAL)

C-6/2-M, NEAR CHETGANJ THANA, CHETGANJ, VARANASI  
Website : [www.sachkidastak.com](http://www.sachkidastak.com), E-mail : sachkidastak@gmail.com  
Mob. : 8299678756, 9598056904

MARCH, 2023  
PRICE : RS. 20/-

EDITOR : BRAJESH KUMAR

NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA

# रामनवमी व चैत्र नवरात्र की हार्दिक शुभकामनाये



25 YEARS OF EXCELLENCE

# UNIVERSAL PUBLIC SCHOOL



DISTRICT TOPPER  
**Gautam Maurya**  
98.00% PCM

A Place Of Disciplined & Creative Learning In Minimum Fee  
**District Topper 2021-22 (Science Stream) &**  
16 Students Scored 90%Plus Marks In 2021-22



Ajay Kumar	Akansha Maurya	Ansh Kumar Keshari	Avneet Singh	Krishna Mahalika	Abhishek Kannanji	Shivanshu Singh	Vash Patel	Priyash Patel	Md. Arslan	Kajal Yadav	Tanu Singh	Shubhangshu Keshari	Sparsh Chaurasiya	Prajwal Maurya
95.80% PCM	95.20% PCM	93.60% PCM	93.80% PCM	92.60% PCM	92.00% PCM	92.80% PCM	92.20% COMMERCE	92.00% Humanity	92.00% PCB	91.80% PCB	91.20% Humanity	91.28% PCM	90.80% PCM	90.09% PCM

FOR DETAILS CONTACT - 8400002470, 8400002472

**ADMISSION OPEN**

OUR BRANCHES ● BABURI, CHANDAULI ● BAHUAR, MIRZAPUR ● SAKALDIHA, CHAKARIYA